ाचीन-लेख-मणि

प्रथम खण्ड

———:o:———

डाक्तर कीलहार्न के लेख की सहायता

श्यामसुन्दर दास, बी० ए०

द्वारा

सङ्कलित तथा सम्पादित

और

काशी नागरीप्रचारिणी सभा

द्वारा प्रकाशित ।

———

1903

Benares:

Printed at the Tara Printing Works.

भूमिका।

देश की उन्नति और सुधार के लिये सब प्रकार की पोथियों में से इतिहास से बढ़ कर अच्छी और जरूरी दूसरी पोथी नहीं है। इसको पढ़ कर लोग यह जान सकते हैं कि किस जाति की उन्नति क्या क्या करने से हुई है और किन किन बुराइयों के आजाने से देश की अवस्था बुरी होगई है। इन बातों को जान कर देश का भला चाहने वाले और उसके लिये उद्योग करने वाले यदि किसी बुराई के बीज को जमता देखें तो वे उसके आगे चल कर बड़ी भारी बुराई और हानि का ध्यान कर के उसके नाश करने का उपाय सोच सकते हैं और बहुत से दूसरे उपायों से अपने देश को भलाई पहुँचा के उसका उद्धार कर सकते हैं। इन्हीं कारणों से इतिहास की पोथियां बड़ी आवश्यक हैं। परन्तु बड़े खेद की बात है कि हमारे देश में इतिहास का पूरा अभाव है। नाम लेने को राजतरंगिणी एक इतिहास की पुरानी पुस्तक मिलती है। पहिले इसको कल्हण ने सन् ११४८ के लगभग रचना प्रारम्भ किया था और पीछे और लोगों ने उसे समाप्त किया। इस ग्रन्थ में जिन जिन राजाओं का नाम आया है उन्होंने कितने दिनों तक राज्य किया इसकी गिनती दिनों तक की है पर यदि उस पुस्तक की भली भांति जांच की जाय तो यह मिलता है कि सन् संवतों में ही सबसे अधिक इस ग्रन्थ के रचयिता चूके हैं। अशोक के समय में एक हजार वर्ष का अन्तर डाल दिया है। मिहिर कुल का समय ईस्वी से ७०४—६३४ वर्ष पूर्व लिखा है जब कि उसका ठीक समय ५३० ई० है। इसी प्रकार से और और भूलें इसमें भरी हैं जिससे हम इस पुस्तक का ऐतिहासिक बातों में पूरा पूरा सहारा नहीं ले सकते। पुराणों में अवश्य वंशावलिए मिलती हैं परन्तु अनेक स्थानों में एक वंशावली एक पुराण में एक प्रकार दी है तो दूसरे में दूसरे प्रकार से और सन संवत् का तो कहीं नाम भी नहीं लिया

है। दूसरे कविता में लिखे जाने से अत्युक्ति की उसमें इतनी भरमार है कि ठिकाना नहीं लगता। इसलिये यदि हम संस्कृत के प्राचीन ग्रन्थों के सहारे से भारतवर्ष का पुराना और सच्चा इतिहास लिखा चाहें तो शायद इससे बड़ी भूल हम दूसरी न कर सकेंगे। हमारे एक प्यारे मित्र का कहना है कि बहुत पुराने समय से अद्भुत बातों वा वस्तुओं को देवतुल्य मान उनकी पूजा करना और उन पर भक्ति भाव रखना भी भारतवासियों की नस नस में ऐसा समा गया है कि उन बातों की छान बीन करने और सच्ची सच्ची घटनाओं के जानने का कभी उन्हें स्वप्न भी नहीं आता। अपने इस कथन के प्रमाण में उन्होंने कहा 'कि अमरोहे में एक पीर साहब की दरगाह है जहां लाखों लोग जाते हैं। यह स्थान गंगा के उस पार है। जब इस दरगाह के पुजारी या उनके सेवक हिन्दू यात्रियों को इस पार से लेने आते हैं और जब वे उन्हें लेकर गंगा के निकट पहुंचते हैं तो कहने लगते हैं कि तुम लोग अपनी आँख बन्द करलो क्योंकि गंगा के दर्शन कर पीर साहब के पास जाओगे तो तुम्हारी मुराद पूरी न होगी। विचारे सीधे साधे अथवा स्वार्थान्ध हिन्दू अपनी आँखें बन्द कर लेते हैं।' यही मुख्य कारण है कि यहां इतिहास की सामिग्री के रहते भी अब तक कोई अच्छा इतिहास न बन सका। भारतवर्ष का सच्चा पुराना इतिहास यदि किसी के सहारे से बन सकता है तो वे शिलालेख और दानपत्र हैं जो दान और धर्म्म और न कि इतिहास की दृष्टि से लिखे गए थे। इस लेख में हम यह नहीं दिखाया चाहते कि इन दानपत्रों का कैसे पता लगा और इनसे अब तक किन किन नई बातों का ज्ञान हमें प्राप्त हुआ। इसे हम किसी दूसरे लेख में लिखने का उद्योग करेंगे। आज इस ऐतिहासिक सामिग्री को हम हिन्दी पाठकों की भेंट करते हैं। इसमें ७१८ दानपत्रों का सारांश दिया गया है जिसके सहारे से पाठकगण बहुत से ऐतिहासिक पुरुषों का ठीक ठीक समय स्थिर कर सकेंगे। जिस जिस पुस्तक में इन लेखों का पूरा पूरा वृत्तान्त छपा है उनके नाम भी सांकेतिक रूप में पहिली ही पंक्ति में लिख दिए गए हैं। उन सांकेतिक अक्षरों से किन किन पुस्तकों का आशय है उसे हम नीचे स्पष्ट लिख देते हैं जिससे पाठकों को उनके जानने में किसी प्रकार की कठिनता न हो।

(१) आ० स० इ० = Acheological Survey of India

(२) आ० स० वे० इ० = Archeological Survey of Western India

(३) ए० इ० = Epigraphia Indica.

(३) इं० इ० = Indian Inscriptions.

(४) जें० मो० जे० = Zetsh D. Morg. Ges.

(६) ए० री० = Asiatic Researches

(७) ए० रे० बा० प्रे० = Antiquarian Remains Bombay Presidency.

(८) के० टे० वे० इ० = Cave Temples of Western India.

(९) को० मि० ए० = Colebrooke's miscellaneous Essays.

(१०) गु० इ० = Gupta Inscriptions.

(११) ज० अ० ओ०सो० = Journal American Oriental Society.

(१२) ज० ब० ए० सो० = Journal Bengal Asiatic Society

(१३) ज० रा० ए० सा० = Journal, Royal Asiatic Society.

(१४) इ० ए० = Indian Antiquary

(१५) प्रा० ले० मा० = Prachinlekhamala.

(१६) प्रो० बा० ए० सो = Proceedings, Bengal Asiatic Society.

(१७) प्रो० बे० ज० = Professor Bendall's Journey.

(१८) बा० ग० = Bombay Gazetteer.

(१९) वी० जी० = Wiener Zeitschrift.

(२०) भा० इ० = Bhavanagar Inscriptions.

(२१) राजस्थान = Annals and Antiquities of Rajsthan.

(२२) रा० मि० बु० ग० = Dr. R. L. Mittra's Buddha Gaya.

इन्हीं बाइस पुस्तकों से ये दानपत्र के लेख इकट्ठे किएगए हैं। इस संग्रह से यह न समझना चाहिए कि अबतक इतने ही लेखों का पता लगा है। इससे कहीं अधिक शिलालेखों और दानपत्रों का वृतान्त छप चुका है। इस बाकी के अंश को भी हम किसी समय पाठकों के सम्मुख उपस्थित करने का उद्योग करेंगे यदि हमें यह ज्ञात हुआ कि हमारे इस परिश्रम से किसी को भी लाभ पहुंचा और हिन्दी प्रेमियों की कुछ भी रुचि इस ओर हुई। इस संग्रह में निम्न लिखित संवतों के लेख दिएगए हैं। इसी सन से उ-

नकी गणना भी हम पाठकों के सूचनार्थ नीचे दे देते हैं।

वि० सं० = विक्रम संवत् (प्रारम्भकाल इस्वी से ५७ वर्ष पूर्व)
श० सं० = शक संवत् (प्रारम्भकाल १७८ ई०)
क० सं० = कलचुरी-चेदि-संवत् (प्रारम्भकाल २५० ई०)
गु० सं० = गुप्तवल्लभी संवत् (प्रारम्भकाल ३१६ ई०)
ह० सं० = हर्ष संवत् (प्रारम्भकाल ६०६ ई०)
ने० सं० = नेवार संवत् (प्रारम्भकाल ८८० ई०)
लौ० सं० = लौकिक संवत्-दूसरा नाम-सप्तर्षि संवत् (प्रारम्भकाल ८२४ ई०)
शा० सं० = शास्त्र संवत् (प्रारम्भकाल १६२४ ई०)
बु० सं० = बुद्ध के निर्वाण का संवत् (प्रारम्भकाल इस्वी से ६३७ वर्ष पूर्व)
ल० सं० = लक्ष्मणसेन संवत् (प्रारम्भकाल ६१७ ई)
सिं०सं० = सिंह संवत् (प्रारम्भकाल १११४ ई०)
म० सं० = मुहम्मद या हिजरी संवत् (प्रारम्भ ६०२ ई०)
सन्० सं० = बंगाली सन् संवत् (प्रारम्भकाल ७०५ ई०)
अ० सं० = अल्लाई या इलाही संवत् (प्रारम्भकाल १५५३)

हमारी इच्छा थी कि इन सब संवतों का कुछ कुछ वृतान्त इस भूमिका में दे देते परन्तु लेख बढ़ जाने के भय ने हमें ऐसा करने से रोका। अस्तु जिन लोगों की इस विषय में कुछ भी रुचि होगी वे इसका पता स्वयं लगा लेंगे।

अन्त में हमें अब केवल इतना निवेदन करना है कि यह सूची हमने डाक्टर किलहार्न के संग्रह से ली है। हिन्दी हस्तलिखित पुस्तकों की रिपोर्ट लिखने में हमें अनेक दानपत्रों को खोजना पड़ा जिसके लिये हमे अनेक पुस्तकें उलटनी पड़ीं, अन्त में डाक्टर किलहार्न का संग्रह हमारे हाथ लगा जिससे हमें बड़ी सहायता मिली। यह समझ कर कि दूसरे लोगों को भी ऐसी आवश्यकता पड़ सकती है हमने उसे हिन्दी में लिखने का साहस किया। आशा है कि हमारे इस परिश्रम से इतिहास प्रेमी लोग लाभ उठावेंगे और हमें उत्साहित करेंगे जिससे इसका दूसरा भाग भी हम आगे चलकर उनके अर्पण कर सकें।

प्राचीन-लेख-मणि-माला।

प्रथम खण्ड।

---

(१) मालव विक्रम संवत के शिला लेख।

(१)

वि० सं० ४२८– गु० इ० पृष्ठ २५३। व्याघ्रराट के प्रपौत्र, यशोराट के पौत्र तथा यशोवर्धन के पुत्र "वरिक विष्णुवर्धन" का विजयगढ़स्तूप पर लेख।

(२)

वि० सं० ४८० (?) गु० इ० पृष्ठ ७४। नरवर्मन के पुत्र (?) "विश्ववर्मन" के समय का गङ्गधार में लेख जिसमें राजा के मन्त्री मयूराक्ष के कई मंदिरों के बनवाने का वर्णन है।

(३)

वि० सं० ४९३ और ५२९– गु० इ० पृष्ठ ८१। "कुमार गुप्त" (प्रथम) और उसके अधीनस्थ दशपुर के नायक "विश्ववर्मन" के पुत्र "बन्धुवर्मन" के समय का लेख जो मन्दसोर में है और जिसे वत्सभट्ट ने सङ्कलित किया।

(४)

वि० सं० ५८९– गु० इ० पृष्ठ १५२– राजाधिराज "यशोधर्मन विष्णुवर्धन" के समय का मन्दसोर में शिलालेख जिसमें

विष्णुवर्धन के एक मंत्री धर्मदोष के छोटे भाई दक्ष (?) के अपने मृत चचा अभयदत्त के स्मरणार्थ एक कूप के बनवाने का वर्णन है। लेख गोविन्द का खोदा हुआ है।

(५)

वि० सं० ७१८— ए० इ० भाग ४ पृष्ठ ३१। गुहिल राजा "अपराजित" के समय का उदयपुर (राजपुताना) में शिलालेख जिस में राजा के सेनापति महाराज वराहसिंह की स्त्री के एक मन्दिर बनवाने का वर्णन है। यह लेख दामोदर के पौत्र और ब्रह्मचारी के पुत्र द्वारा सङ्कलित है।

(६)

वि० सं० ७४६— इ० ए० भाग ५ पृष्ठ १८१। "दुर्गगण" के समय का झालरापाटन में शिलालेख। यह सर्वगुप्त भट्ट द्वारा सङ्कलित है।

(७)

वि० सं० ७७०—राजस्थान भाग १ पृष्ठ ७९९-कर्नल टाड ने "चित्तौर के मोरी राजाओं" के एक शिलालेख का जो मानसरोवर (चित्तौर) के तट पर एक स्तम्भ पर खुदा था, भाषान्तर किया है। उसमें लिखा है कि संवत्सर के ७७० वर्ष बीतने पर मनुष्यों के स्वामी मालवा के राजा ने यह सरोवर बनवाया। अब यह शिलालेख बृटिश म्यूजियम में है।

(८)

वि० सं० ७९४—इ० ए० भाग १२ पृष्ठ १५५। सौराष्ट्र के महाराजाधिराज "जाइक देव" का दानपत्र (सन्दिग्ध) जो भूमिलिका में दिया गया था। समय ठीक नहीं है।

(९)

वि० सं० ७९५—इ० ए० भाग १९ पृष्ठ ५७। मौर्यवंशीय

राजा "धवल" के मित्र संकुक के पुत्र राजकुमार "शिवगण" का शिलालेख। इसे सुरभी भट्ट के पुत्र देवत ने सङ्कलित किया और द्वारशिव के पुत्र शिवनाग ने खोदा।

(१०)

वि० सं० ८११—राजस्थान भाग २ पृष्ठ ७६४। कर्नल टाड' लिखते हैं कि चित्तौर में उन्हें एक शिलालेख मिला था जिसका समय संवत ८११ माघ सुदी ९ बृहस्पतिवार था। इ० ए० भाग १९ पृष्ठ २७२ देखो।

(११)

वि० सं० ८४७—जॊ० मो० जे० भाग २८ पृष्ठ ९४७ तथा इ० ए० भाग १४ पृष्ठ ४९। सामन्त "देवदत्त" का (बौद्धधर्म्म सम्बन्धी) शेरगढ़ (कोटा) वाला शिलालेख। विन्दुनाग का पुत्र पद्मनाग, उसका सर्वनाग जिसने "श्री" से विवाह किया, उनका देवदत्त हुआ।

(१२)

वि० सं० ८९८—जॊ० मो० जे० भाग ४० पृष्ठ ३९। चाहमान "चण्डमहासेन" का धोलपुर में शिलालेख। ईसुक का पुत्र महिषराम जिसने कर्णहट्टा (जो सती हुई) से विवाह किया। उनका पुत्र चण्ड (चण्ड महासेन) हुआ।

(१३)

वि० सं० ९१८—ज० रो० ए० सो०—१८९९ पृष्ठ ९१६ पणिहार (प्रतिहार) "कक्कुक" का घटयाल में शिलालेख। वंशावली इस प्रकार दी है। ब्राह्मण "हरिश्चन्द्र" और उसकी क्षत्राणी पत्नी "भद्रा" का पुत्र "रज्जिल", उसका "नरहण" (नरभट), उसका "नाहण" (नागभट), उसका "तात", उसका "जसवद्धन" (यशोवर्धन), उसका "चन्दुक", उसका "सिल्लुक", उसका "झोट",

उसका "भिल्लुक", उसका "कक्क" जिसने "दुर्लभ देवी" से विवाह किया, उनका "कक्कुक"।

(१४)

वि० सं० ९१९— ए० इ० भाग ४ पृष्ठ ३१० तथा आ० स० ये० इ० भाग १०। (कन्नौज के) महाराजाधिराज **"भोजदेव"** और उनके अधीनस्थ लुअच्छगिर (देवगढ़) के नायक महासामन्त **"विष्णुराम"** के समय का शिलालेख जो देवगढ़ के एक जैनी स्तूप पर है।

(१५)

वि० सं० ९३२— ए० इ० भाग १ पृष्ठ १५६। (कन्नौज के) रामदेव के पुत्र (?) **आदिवराह (भोजदेव)** के समय का ग्वालियर में शिलालेख।

(१६)

वि० सं० ९३३— ए० इ० भाग १ पृष्ठ १५९। (कन्नौज के) **भोजदेव** के समय का ग्वालियर में शिलालेख।

(१७)

वि० सं० ९६०— ए० इ० भाग १ पृष्ठ १७३। सीयडोणी (सिरोनी खुर्द) का शिलालेख जिसमें बहुत से अर्थदानों का वर्णन है जिन्हें भिन्न भिन्न पुरुषों ने देवताओं के निमित्त संवत् ९६० से संवत् १०२५ तक में दिया। इसका समय (कन्नौज के भोजदेव के उत्तराधिकारी) महाराजाधिराज **महेन्द्रपालदेव** के राजत्वकाल का है।

(१८)

वि० सं० ९६०— इ० ए० भाग १७ पृष्ठ २०२। महासामन्ताधिपति **"गुणराज"** और **"उन्दभट"** के समय का तेहरीवाला स्मारकलेख।

(१९)

वि० सं० ९६४—ए० इ० भाग १ पृष्ठ १७३। सीयडोणी

का शिलालेख जिनमे (कन्नौज के) भोजदेव के उत्तराधिकारी महाराजाधिराज महेन्द्रपालदेव के समय का महासामन्ताधिपति उन्दभट्ट के दानपत्र का वर्णन और उसका समय है।

(२०)

वि० सं० ९३६—आ० स० आ० इ० भाग १० पृष्ठ १३ ग्यारिसपुर के खण्डित शिलालेख का समय।

(२१)

वि० सं० ९६५—ए० इ० भाग १ पृष्ठ १७४। सीयडोणी के शिलालेख का समय।

(२२)

वि० सं० ९६७—ए० इ० भाग १ पृष्ठ १७४। सीयडोणी के शिलालेख का समय।

(२३)

वि० सं० ९६९—ए० इ० भाग १ पृष्ठ १७५। सीयडोणी के सामन्त महाराजाधिराज "धूरभट्ट" के राजत्वकाल का सियडोणी में शिलालेख।

(२४)

वि० सं० ९७३—ज० बं० ए० सो० भाग ६२ पृष्ठ ३१४। हस्तिकुण्डी के हरिवर्मन के पुत्र राष्ट्रकूट "विदग्ध" के समय का बीजपुर में शिलालेख।

(२५)

वि० सं० ९७४—इ० ए० भाग १६ पृष्ठ १७४। [कनौज के] महेन्द्रपालदेव के उत्तराधिकारी महाराजाधिराज "महिपालदेव" के समय का असनी (फतेहपुर हस्वा) में शिलालेख।

(२६)

वि० सं० ९८१—इ० ए० भाग १३ पृष्ठ २५१। योगी "वकुलज"

का टूटा हुआ शिलालेख जिसे देवानन्द ने सङ्कलित किया था और जो अब बृटिश म्यूजियम में है।

(२७)

वि० सं० ९८३–इ० ए० भाग १३ पृष्ठ २५० । योगी "चक्रुलज" का शिलालेख जो अब बृटिश म्यूजियम में है।

(२८)

वि० सं० ९९१–ए० इ० भाग १ पृष्ठ १७७ । सियडोणी शिलालेख का समय।

(२९)

वि० सं० ९९४–ए० इ० भाग १ पृष्ठ १७६ । सियडोणी शिलालेख का समय।

(३०)

वि० सं० ९९६–ज० ब० ए० सो० भाग ६२ पृष्ठ ३१४ । बीजपुर का शिलालेख जिसमें हस्तिकुंडी के विदग्ध के पुत्र राष्ट्रकूट "मम्मट" के राजत्वकाल का समय है।

(३१)

वि० सं० १००५–ए० इ० भाग १ पृष्ठ १७७ । सियडोणी का शिलालेख जिसमें (कन्नौज के) क्षितिपालदेव के उत्तराधिकारी, महाराजाधिराज "देवपालदेव" और सियडोणी के सामन्त महाराजाधिराज "निश्कलङ्क" के राजत्वकाल का समय है।

(३२)

वि० सं० १००५–ए० री० भाग १ पृष्ट २८४ । एक संस्कृत शिलालेख जो मिस्टर विल्मट को बुद्ध गया में मिला था और जिसका अनुवाद चार्लस विल्किंस ने किया था। इसमें विक्रमादित्य के नवरत्नों में से "अमरदेव" का वर्णन है।

(३८)

वि० सं० १०१३—ए० इ० भाग २ पृष्ठ १२४ । विग्रहराज के हर्ष शिलालेख में हर्ष (शिव) के एक मन्दिर के बनने का समय ।

(३९)

वि० सं० १०१६—ए० इ० भाग ३ पृष्ठ २६६ । गुर्जर प्रतिहार वंश के सामंत और उसकी पत्नी लच्छुका के पुत्र महाराजाधिराज **"मथनदेव"** का राजोरगढ़ (अलवर) का शिलालेख जो कि (कन्नौज के) क्षितिपालदेव के उत्तराधिकारी महाराजाधिराज **"विजयपालदेव"** के राजत्वकाल का है ।

(४०)

वि० सं० १०२५—ए० इ० भाग १ पृष्ठ १७८ । सियडोणी का शिलालेख जिसमें सियडोणी के सामन्त महाराजाधिराज **"निश्कलंक"** के राजत्वकाल का समय है ।

(४१)

वि० सं० १०२७—ए० इ० भाग २ पृष्ठ १२४ । विग्रहराज के हर्ष शिलालेख में शैव सन्यासी अल्लट की मृत्यु का समय ।

(४२)

वि० सं० १०२८—भा० इ० पृष्ठ ७० । गुहिल **"नरवाहन"** का उदयपुर (राजपूताना) में खण्डित शिलालेख जिसे आदित्यनाग के पुत्र आम्रकवि ने सङ्कलित किया ।

(४३)

वि० सं० १०२ [८]—डाक्टर बर्जेस् के फोटो से (आ० स० इ० भाग २३ पृष्ठ १२९) महाराजाधिराज **"चामुण्डराज"** के राजत्वकाल का निमतोर (राजपुताना) में शिलालेख ।

(४४)

वि० सं० १०३०—ए० इ० भाग २ पृष्ठ ११९ । चाहमान

"विग्रहराज" का हर्ष शिलालेख जिस धीरक के पुत्र धीरनाग ने सङ्कलित किया।

चाहमान वंश में गूवक (प्रथम), उसका पुत्र चन्द्रराज, उसका पुत्र गूवक (द्वितीय), उसका पुत्र चन्दन (जिसने तोमर राजकुमार रुद्रेन—रुद्रपाल (?) को पराजित किया), उसका पुत्र वाक्पतिराज (जिसने तन्त्रपाल को पराजित किया), उसका पुत्र सिंहराज (जो किसी "लवण" का समकालीन था), उसका पुत्र विग्रहराज। महाराजाधिराज सिंहराज का एक भाई जिसका नाम वत्सराज था और (विग्रहराज को छोड कर) तीन बेटे दुर्लभराज, चन्द्रराज और गोविन्दराज थे।

(४५)

वि० सं० १०३०—वी० जी० भाग ६ पृष्ठ १०० । चौलुक्य **मूलराज प्रथम** का बडोदा (पाटन) में दानपत्र।

(४६)

वि० सं० १०३१—इ० ए० भाग ६ पृष्ठ ५१ । धरमपुरी (इन्दौर) के परमार महाराजाधिराज **वाकपति राजदेव** का दानपत्र जो उज्जयनी में दिया गया था। वंशावली इस प्रकार है। कृष्णराज, वैरिसिंह, सीयक, वाकपतिराज अमोघवर्ष।

(४७)

वि० सं० १०३४—ज० बे० ए० सो० भाग ३१ पृष्ठ ३९३। [कच्छपघाट] महाराजाधिराज **वज्रदामन** के समय का ग्वालियर में एक जैन मूर्तिपद पर खण्डित शिलालेख।

(४८)

वि० सं० १०३४—राजस्थान भाग १ पृष्ठ ८०२। कर्नल टाड सतपुर के एक शिलालेख का अनुवाद देते हैं जो गुहिल शक्तिकुमार के समय का ज्ञात होता है।

(३८)

वि० सं० १०१३—ए० इ० भाग २ पृष्ठ १२४ । विग्रहराज के हर्ष शिलालेख में हर्ष (शिव) के एक मन्दिर के बनने का समय।

(३९)

वि० सं० १०१६— ए० इ० भाग ३ पृष्ठ २६६ । गुर्जर प्रतिहार वंश के सामंत और उसकी पत्नी लच्छुका के पुत्र महाराजाधिराज "मथनदेव" का राजोरगढ़ (अलवर) का शिलालेख जो कि (कन्नौज के) क्षितिपालदेव के उत्तराधिकारी महाराजाधिराज "विजयपालदेव" के राजत्वकाल का है।

(४०)

वि० सं० १०२५—ए० इ० भाग १ पृष्ठ १७८ । सियडोणी का शिलालेख जिसमें सियडोणी के सामन्त महाराजाधिराज "निश्कलंक" के राजत्वकाल का समय है।

(४१)

वि० सं० १०२७—ए० इ० भाग २ पृष्ठ १२४ । विग्रहराज के हर्ष शिलालेख में शैव सन्यासी अल्लट की मृत्यु का समय।

(४२)

वि० सं० १०२८—भा० इ० पृष्ठ ७० । गुहिल "नरवाहन" का उदयपुर (राजपूताना) में खण्डित शिलालेख जिसे आदित्यनाग के पुत्र आम्रकवि ने सङ्कलित किया।

(४३)

वि० सं० १०२ [८]—डाक्टर बर्जेस् के फोटो से (आ० स० इ० भाग २३ पृष्ठ १२९) महाराजाधिराज "चामुण्डराज" के राजत्वकाल का निमतोर (राजपुताना) में शिलालेख।

(४४)

वि० सं० १०३०—ए० इ० भाग २ पृष्ठ ११९ । चाहमान

"विग्रहराज" का हर्ष शिलालेख जिसे धर्रुक के पुत्र धीरनाग ने सङ्कलित किया।

चाहमान वश में गूवक (प्रथम), उसका पुत्र चन्द्रराज, उसका पुत्र गूवक (द्वितीय), उसका पुत्र चन्दन (जिसने तोमर राजकुमार रुद्रेन=रुद्रपाल (?) को पराजित किया), उसका पुत्र वाक्पतिराज (जिसने तन्त्रपाल को पराजित किया), उसका पुत्र सिंहराज (जो किसी "लवण" का समकालीन था), उसका पुत्र विग्रहराज। महाराजाधिराज सिंहराज का एक भाई जिसका नाम वत्सराज था और (विग्रहराज का छोड कर) तीन बेटे दुर्लभराज, चन्द्रराज और गोविन्दराज थे।

(४५)

वि० सं० १०३०—बी० जी० भाग ९ पृष्ठ १०० । चौलुक्य **मूलराज प्रथम** का बडौदा (पाटन) में दानपत्र।

(४६)

वि० सं० १०३१—इ० ए० भाग ६ पृष्ठ ५१ । धरमपुरी (इन्दौर) के परमार महाराजाधिराज **वाकपति राजदेव** का दानपत्र जो उज्जयनी में दिया गया था। वशावली इस प्रकार है। कृष्णराज, वैरिसिंह, सीयक, वाकपतिराज अमोघवर्ष।

(४७)

वि० सं० १०३४—ज० बे० ए० सो० भाग ३१ पृष्ठ ३९३। [कच्छपघाट] महाराजाधिराज **वज्रदामन** के समय का ग्वालियर में एक जैन मूर्तिपद पर खण्डित शिलालेख।

(४८)

वि० सं० १०३४—राजस्थान भाग १ पृष्ठ ८०२। कर्नल टाड सतपुर के एक शिलालेख का अनुवाद देते हैं जो गुहिल शक्तिकुमार के समय का ज्ञात होता है।

(४९)

वि० सं० १०३६–इ० ए० भाग २४ पृष्ठ १६० तथा इ० इ० । परमार महाराजाधिराज **वाक्पतिराजदेव** का उज्जैन (इण्डिया आफिस) का दानपत्र जो भगवतपुर में दिया गया था और गुणपुर में लिखा गया था ।

(५०)

वि० सं० १०४३–इ० ए० भाग ६ पृष्ठ १९१ । महाराजाधिराज राजि के पुत्र चौलुकिक (चौलुक्य) महाराजाधिराज **मूलराज-प्रथम** का कड़ी में दानपत्र जो अणहिल पाटक में दिया गया था ।

(५१)

वि० सं० १०४९–ए० इ० भाग १ पृष्ठ ७७ । छिन्द वंश के "लल्ल" का देवल (इलाहाबाद) में शिलालेख जिसे भट्ट शिवचन्द्र के पुत्र नेहिल ने सङ्कलित किया था ।

च्यवन ऋषि के वंश में धैरवरमन, उसका पुत्र भूषण, उसका छोटा भाई मल्हण जिसने चुलुकीश्वर वंश की अणहिला से विवाह किया, उनका पुत्र लल्ल जिसने लक्ष्मी से विवाह किया ।

(५२)

वि० सं० १०५१–बी० जी भाग ९ पृष्ठ ३०० । चौलुक्य **मूलराज प्रथम** का बरोदा का दानपत्र ।

(५३)

वि० सं० १०५३–ज० ब० ए० सो० पुस्तक ६२ भाग १ पृष्ठ ३११ हस्तिकुण्डी के राष्ट्रकूट धवल का बीजपुर (जोधपुर) में शिलालेख जिसे सूर्याचार्य ने संकलित किया ।

हरिवर्मन, उसका पुत्र विदग्ध, उसका पुत्र मम्मट उसका पुत्र धवल (परमार मुञ्जराज, दुर्लभराज, चौलुक्य मूलराज प्रथम, धरणीवराह तथा महेन्द्र वा महीन्द्र ? का समकालीन) उसका पुत्र बालप्रसाद ।

(९४)

वि० सं० १०५५—इ० ए० भाग १६ पृष्ठ २०२। कालञ्जर के चन्देल महाराजाधिराज धङ्गदेव का नयौरा (अब बङ्गाल का ए शियाटिक सोसायटी) का दानपत्र जो काशिका में दिया गया था।

चन्द्रात्रेय मुनि के वंश में हर्ष, उसका पुत्र यशोवर्मन, उसका धङ्ग हुआ।

(९५)

वि० सं० १०५८—ए०इ० भाग १ पृष्ठ १४८ तथा आ०स०इ० भाग २१। ग्रहपति वंश के कोक्कल का खजुराहो में शिलालेख।

अतियशोवल अथवा यशोवल (जो पद्मावती में आकर बसा), उसका पुत्र माहट, उसका पुत्र जयदेव, उसका पुत्र सेक्कल वा सेक्कल्ल उसका छोटा भाई कोक्कल वा कोक्कल्ल हुआ।

(९६)

वि० सं० १०५९—ए०इ०भाग १ पृष्ठ १४० तथा आ०स०इ० भाग २१ चन्देल्ल धङ्गदेव का खजुराहो में शिलालेख जो उसकी मृत्यु के पश्चात् स्थापित किया गया ओर जिसे नन्दन के पौत्र तथा बलभद्र के पुत्र राम ने सकलित किया।

चन्द्रात्रेय मुनि के वंश में ननुक, उसका पुत्र वाकपति, उसका पुत्र विजय, उसका पुत्र राहिल, उसका हर्ष जिसने कञ्चुका से विवाह किया, उनका पुत्र यशोवर्मन जिसने पुष्पा से विवाह किया, उनका पुत्र धङ्ग।

(९७)

वि० सं० १०७८—इ० ए० भाग ६ पृष्ठ ५३। परमार महाराजाधिराज भोजदेव का उज्जैन में दानपत्र जो धारा में दिया गया था।

वंशावली इस प्रकार है—सीयक, वाक्पतिराज, सिन्धुराज, भोज।

(४९)

वि० सं० १०३६–इ० ए० भाग २४ पृष्ठ १६० तथा इ० इ० । परमार महाराजाधिराज **वाकपतिराजदेव** का उज्जैन (इण्डिया आफिस) का दानपत्र जो भगवतपुर में दिया गया था और गुणपुर में लिखा गया था ।

(५०)

वि० सं० १०४३–इ० ए० भाग ६ पृष्ठ १९१ । महाराजाधिराज राजि के पुत्र चौलुकिक (चौलुक्य) महाराजाधिराज **मूलराज-प्रथम** का कड़ी में दानपत्र जो अणहिल पाटक में दिया गया था ।

(५१)

वि० सं० १०४९–ए० इ० भाग १ पृष्ठ ७७ । छिन्द वंश के "लल्ल" का देवल (इलाहाबास) में शिलालेख जिसे भट्ट शिवरुद्र के पुत्र नेहिल ने सङ्कलित किया था ।

च्यवन ऋषि के वंश में वैरवरमन, उसका पुत्र भूषण, उसका छोटा भाई मल्हण जिसने चुलुकीश्वर वंश की अणहिला से विवाह किया, उनका पुत्र लल्ल जिसने लक्ष्मी से विवाह किया ।

(५२)

वि० सं० १०५१–वी० जी भाग ५ पृष्ठ ३०० । चौलुक्य **मूलराज प्रथम** का बरोदा का दानपत्र ।

(५३)

वि० सं० १०५३–ज० ब० ए० सो० पुस्तक ६२ भाग १ पृष्ठ ३११ हस्तिकुण्डी के राष्ट्रकूट धवल का बीजपुर (जोधपुर) में शिलालेख जिसे सूर्याचार्य ने संकलित किया ।

हरिवर्मन, उसका पुत्र विदग्ध, उसका पुत्र मम्मट उसका पुत्र धवल (परमार मुञ्जराज, दुर्लभराज, चौलुक्य मूलराज प्रथम, धरणीवराह तथा महेन्द्र या महीन्द्र ? का समकालीन) उसका पुत्र बालप्रसाद ।

(९४)

वि० सं० १०५५–इ० ए० भाग १६ पृष्ठ २०२। कालञ्जर के चन्देल महाराजाधिराज धङ्गदेव का नन्योरा (अब बङ्गाल की एशियाटिक सोसायटी) का दानपत्र जो काशिका में दिया गया था।

चन्द्रात्रेय मुनि के वंश में हर्ष, उसका पुत्र यशोवर्मन, उसका धङ्ग हुआ।

(९५)

वि० सं० १०५८–ए०इ० भाग १ पृष्ठ १४८ तथा आ०स०इ० भाग २१। प्रतिपति वंश के कोक्कल का खजुराहो में शिलालेख।

अतियशोवल अथवा यशोवल (जो पद्मावती में आकर वसा), उसका पुत्र माहट, उसका पुत्र जयदेव, उसका पुत्र सेक्कल वा सेक्कल्ल उसका छोटा भाई कोक्कल वा कोक्कल्ल हुआ।

(९६)

वि० सं० १०५९–ए०इ० भाग १ पृष्ठ १४० तथा आ०स०इ० भाग २१ चन्देल्ल धङ्गदेव का खजुराहो में शिलालेख जो उसकी मृत्यु के पश्चात् स्थापित किया गया और जिसे नन्दन के पौत्र तथा बलभद्र के पुत्र राम ने सङ्कलित किया।

चन्द्रात्रेय मुनि के वंश में नन्नुक, उसका पुत्र वाकपति, उसका पुत्र विजय, उसका पुत्र राहिल, उसका हर्ष जिसने कञ्चुका से विवाह किया, उनका पुत्र यशोवर्मन जिसने पुष्पा से विवाह किया, उनका पुत्र धङ्ग।

(९७)

वि० सं० १०७८–इ० ए० भाग ६ पृष्ठ ५३। परमार महाराजाधिराज भोजदेव का उज्जैन में दानपत्र जो धारा में दिया गया था।

वंशावली इस प्रकार है—सीयक, वाक्पतिराज, सिन्धुराज, भोज।

(४९)

वि० सं० १०३६–इ० ए० भाग २४ पृष्ठ १६० तथा इ० इ० । परमार महाराजाधिराज **वाकपतिराजदेव** का उज्जैन (इण्डिया आफिस) का दानपत्र जो भगवतपुर में दिया गया था और गुणपुर में लिखा गया था ।

(५०)

वि० सं० १०४३–इ० ए० भाग ६ पृष्ठ १९१ । महाराजाधिराज राजि के पुत्र चौलुकिक (चौलुक्य) महाराजाधिराज **मूलराज-प्रथम** का कड़ी में दानपत्र जो अणहिल पाटक में दिया गया था ।

(५१)

वि० सं० १०४९–ए० इ० भाग १ पृष्ठ ७७ । छिन्द वंश के "**लल्ल**" का देवल (इलाहाबास) में शिलालेख जिसे भट्ट शिवरुद्र के पुत्र नेहिल ने सङ्कलित किया था ।

च्यवन ऋषि के वंश में वैरवरमन, उसका पुत्र भूयण, उसका छोटा भाई मल्हण जिसने चुलुकीश्वर वंश की अणहिला से विवाह किया, उनका पुत्र लल्ल जिसने लक्ष्मी से विवाह किया ।

(५२)

वि० सं० १०५१–बी० जी भाग ५ पृष्ठ ३०० । चौलुक्य **मूलराज प्रथम** का वरोदा का दानपत्र ।

(५३)

वि० सं० १०५३–ज० ब० ए० सो० पुस्तक ६२ भाग १ पृष्ठ ३११ हस्तिकुण्डी के राष्ट्रकूट **धवल** का बीजपुर (जोधपुर) में शिलालेख जिसे सूर्याचार्य ने संकलित किया ।

हरिवर्मन, उसका पुत्र विदग्ध, उसका पुत्र मम्मट उसका पुत्र धवल (परमार मुञ्जराज, दुर्लभराज, चौलुक्य मूलराज प्रथम, धरणीवराह तथा महेन्द्र या महीन्द्र ? का समकालीन) उसका पुत्र बालप्रसाद ।

(९४)

वि० सं० १०५५—इ० ए० भाग १६ पृष्ठ २०२। कालञ्जर के चन्देल महाराजाधिराज धङ्गदेव का नन्यौरा (अब बङ्गाल की एशियाटिक सोसायटी) का दानपत्र जो काशिका में दिया गया था।

चन्द्रात्रेय मुनि के वंश में हर्ष, उसका पुत्र यशोवर्मन, उसका धङ्ग हुआ।

(९५)

वि० सं० १०५८—ए०इ० भाग १ पृष्ठ १४८ तथा आ०स०इ० भाग २१। ग्रहपति वंश के कोक्कल का खजुराहो में शिलालेख।

अतियशोवल अथवा यशोवल (जो पद्मावती में आकर बसा), उसका पुत्र माहट, उसका पुत्र जयदेव, उसका पुत्र सेक्काल वा सेक्कल्ल उसका छोटा भाई कोक्कल वा कोक्कल्ल हुआ।

(९६)

वि० सं० १०५९—ए० इ० भाग १ पृष्ठ १४० तथा आ०स०इ० भाग २१ चन्देल्ल धङ्गदेव का खजुराहो में शिलालेख जो उसकी मृत्यु के पश्चात् स्थापित किया गया और जिसे नन्दन के पौत्र तथा बलभद्र के पुत्र राम ने सकलित किया।

चन्द्रात्रेय मुनि के वंश में नन्नुक, उसका पुत्र वाकपति, उसका पुत्र विजय, उसका पुत्र राहिल, उसका हर्ष जिसने कञ्चुका से विवाह किया, उनका पुत्र यशोवर्मन जिसने पुष्पा से विवाह किया, उनका पुत्र धङ्ग।

(९७)

वि० सं० १०७८—इ० ए० भाग ६ पृष्ठ ५३। परमार महाराजाधिराज भोजदेव का उज्जन में दानपत्र जो धारा में दिया गया था।

वंशावली इस प्रकार है—सीयक, वाकपतिराज, सिन्धुराज, भोज।

(६९)

वि० सं० ११,१७—आ० ग० भाग १ पृष्ठ ४७२ । देवराज के पौत्र तथा धन्धुक के पुत्र परमार महाराजाधिराज **कृष्णराज** के राज्यकाल का भिनमाल (श्रीमाल) में शिलालेख ।

(७०)

वि० सं० ११२३—आ० ग० भाग १ पृष्ठ ४७३ । [परमार] महाराजाधिराज **कृष्णराज** के राजत्वकाल का भीनमाल (श्रीमाल) में खण्डित शिलालेख ।

(७१)

वि० सं० ११३४ और ११३५—डाक्टर फुहरर की एक प्रतिलिपि से । (कलचुरी वंश के) महाराजाधिराज मर्यादासागरदेव के उत्तराधिकारी महाराजाधिराज **सोढदेव** का कल्ह जिला गोरखपुर में, (अब लखनऊ म्यूजियम) दानपत्र जो गण्डकी नदी पर धुलियाघट्ट में दिया गया था ।

(७२)

वि० सं ११३६—इ० ए० भाग २२ पृष्ठ ८० । परमार **चामुण्डराज** के अर्थूना में शिलालेख का नोटिस जिसे विजयसाधार के छोटे भाई तथा सुमतिसाधार के पुत्र चन्द्र ने सङ्कलित किया ।

परमार नायक के वंश में वैरिसिंह, उसका लघु भ्राता डम्बरसिंह, उसके वंश में कङ्कदेव (जिसने मालव राजा हर्ष के एक शत्रु, कर्नाट के शासक को पराजित किया), उसका पुत्र चण्डप, उसका पुत्र सत्य-राज, उसका मण्डनदेव, उसका पुत्र चामुण्डराज (जिसने सिन्धुराज को पराजित किया) ।

(७३)

वि० सं० ११३७—इ० ए० भाग २० पृष्ठ ८३ । परमार उदयादित्य का उदयपुर (ग्वालियर) में शिलालेख ।

(७४)

वि० सं० ११४५—ए० इ० भाग२पृष्ठ२३७तथा आ० स० इ० भाग २०। कच्छपघाट महाराजाधिराज विक्रमसिंह का दुबकुन्द में शिलालेख जिसे शान्तिषेण के पुत्र विजयकीर्ति ने सङ्कलित किया।

कच्छपघाट वंश में युवराज, उसका पुत्र अर्जुन जो (चन्देल्ल) विद्याधर का सहायक था और जिसने (कन्नौज के) राज्यपाल को युद्ध में मारा, उसका पुत्र अभिमन्यु (जो भोज का समकालीन था) उसका पुत्र विजयपाल, उसका पुत्र विक्रमसिंह।

(७५)

वि० सं० ११४८—ए० इ० भाग १ पृष्ठ ३१७। चौलुक्य महाराजाधिराज कर्णदेव त्रैलोक्यमल्ल का सूनक में दानपत्र जो अणहिलपाटक में दिया गया था।

(७६)

वि० सं० ११५०—इ० ए० भाग १९ पृष्ठ ३६ तथा प्रा० ले० मा० भाग १ पृष्ठ ८१। कच्छपघाट महिपालदेव का ग्वालियर में सासबहू के मन्दिर में शिलालेख जिसे राम के पौत्र तथा गोविन्द के पुत्र मणिकण्ठ ने सङ्कलित किया।

कच्छपघाट (कच्छपारि) वंश में लक्ष्मण, उसका पुत्र वज्रदामन (जिसने गाधिनगर अर्थात कन्नौज के अनुशासक को पराजित किया और गोपाद्रि अर्थात ग्वालियर को विजय किया) मङ्गलराज, कीर्तिराज, उसका पुत्र मूलदेव जिसे भुवनपाल और त्रैलोक्यमल्ल भी कहते हैं और जिसने देवव्रता से विवाह किया, उनका पुत्र देवपाल, उसका पुत्र पद्मपाल, जिसका उत्तराधिकारी महीपाल भुवनैकमल्ल हुआ जो कि सूर्यपाल का पुत्र था परन्तु जो पद्मपाल का भाई कहा गया है।

(७७)

वि० सं० ११५२—आ०स०इ० भा०२०पृष्ठ १०२। दुबकुण्ड के जैनस्तूप का शिलालेख।

(७८)

वि० सं० ११५४—इ० ए० भाग १८ पृष्ठ ११। कन्नौज के महाराजाधिराज **मदनपालदेव** का बङ्गाल एशियाटिक सोसायटी वाला दानपत्र जिसमें मदनपालदेव के पिता चन्द्रदेव के वाराणसी में दान का वर्णन है।

यशोविग्रह, उसका पुत्र महीचन्द्र, उसका पुत्र चन्द्रदेव (जिसने कन्यकुब्ज अर्थात् कन्नौज का राज्य पाया था), उसका पुत्र मदनपाल (मदनदेव)

(७९)

वि० सं० ११५४—इ० ए० भाग १८ पृष्ठ २३८ तथा आ० स० इ० भाग १०। चन्देल्ल **कीर्तिवर्मन** तथा उसके मंत्री वत्सराज का देवगढ़ का शिलालेख।

चन्देल्ल वंश में विद्याधर, उसका पुत्र विजयपाल, उसका पुत्र कीर्तिवर्मन।

(८०)

वि० सं० ११६१—इ० ए० भाग १४ पृष्ठ १०३। कन्नौज के महाराजपुत्र गोविन्दचन्द्रदेव का बसाही (अब लखनऊ म्यूजियम) वाला दानपत्र जो यमुना के तट पर आसतिका में दिया गया था।

गाहड़वाल वंश में महेल का पुत्र चन्द्रदेव (जो भोज और कर्ण के पश्चात् पृथ्वी का रक्षक था और जिसने अपनी राजधानी कान्याकुब्ज में स्थापित की), उसका पुत्र मदनपाल, उसका पुत्र गोविन्दचन्द्र।

(८१)

वि० सं० ११६१—इ० ए० भाग १५ पृष्ठ २०२। कच्छपघाट **महिपालदेव** के उत्तराधिकारी का ग्वालियर (अब लखनऊ म्यूजियम) में खण्डित शिला लेख जिसे यशोदेव ने सङ्कलित किया था।

भुवनपाल, उसका पुत्र अपराजित देवपाल, उसका पुत्र पद्मपाल, महीपाल।

(८२)

वि० स० ११६१—ए० इ० भाग २ पृष्ठ १८२। परमार **नरवर्मदेव** का नागपुर म्यूजियम में शिलालेख (इसे कदाचित नरवर्म देव ने स्वयं सङ्कलित किया था)

नायक परमार के वंश में वैरिसिंह, उसका पुत्र सीयक, उसका पुत्र मुञ्जराज, उसका लघुभ्राता सिंधुराज, उसका पुत्र भोज, उसका सम्बन्धी उदयादित्य (जिसने चेदिकर्ण को पराजित किया), उसका पुत्र लक्ष्मदेव, उसका भाई नरवर्मन।

(८३)

वि० स० ११६२—ए० इ० भाग २ पृष्ठ ३५९। कन्नौज के महाराजपुत्र गोविन्दचन्द्रदेव का कमौली (अब लखनऊ म्यूजियम) में दानपत्र जो गंगा के तट पर विष्णुपुर में दिया गया था।

गाहडवाल वंश में महीयल का पुत्र चन्द्रदेव, उसका पुत्र मदनपाल इसका पुत्र गोविन्दचन्द्र। २३ पंक्ति में गोविन्दचन्द्र की माता राल्ह-देवी का वर्णन है।

(८४)

वि० स० ११६३—(११६४—के स्थान पर)—ज० रा० ए० सो० १८९६ पृष्ठ ७८७। कन्नौज के मदनपालदेव तथा उसकी (?) रानी पृथ्वीश्रिका का दानपत्र जो बाराणसी में दिया गया था।

(८५)

वि० सं० ११६४—ट्रा० रो० ए० सो० भाग १ पृष्ठ २२६। हरौदा के मधुकरघर में एक शिलालेख जो परमार **नरवर्मन** के राजत्व काल का है और जिसमें एक सूर्यग्रहण (!) का वर्णन है। इस शिलालेख में सिन्धुराज (सिन्धुल?), भोज, उदयादित्य और नरवर्मन का वर्णन है।

(९७)

वि० सं० ११७७—ज० ब० ए० सो० भाग ३१ पृष्ठ १२३। कन्नौज के महाराजाधिराज **गोविन्दचन्द्रदेव** का दानपत्र जिसमें (कलचुरी) राजा **यशःकर्णदेव** की दान की हुई भूमि की स्वीकृति है।

(९८)

वि० सं० ११७७—ज० ए० ओ० सो० भाग ६ पृष्ठ ५४२। कच्छपघाट महाराजाधिराज **वीरसिंहदेव** का दानपत्र जो नलपुर के किले में दिया गया था।

कच्छपघाट वंश में गगनसिंह, उसका उत्तराधिकारी शरदसिंह, उसका पुत्र लक्ष्मीदेवी से वीरसिंह।

(९९)

वि० सं० ११७८—ए० इ० भाग ४ पृष्ठ ११०। कन्नौज के महाराजाधिराज **गोविन्दचन्द्रदेव** का कमौली (अब लखनऊ म्यूजियम) में दानपत्र जो वाराणसी में दिया गया था।

(१००)

वि० सं० ११८१—ज० ब० ए० सो० भाग ५६ पृष्ठ ११४। कन्नौज के महाराजाधिराज **गोविन्दचन्द्रदेव** तथा उनकी माता **राल्हणदेवी** का बनारस में दानपत्र जो वाराणसी में दिया गया था।

(१०१)

वि० सं० ११८२—ए० इ० भाग ४ पृष्ठ १००। कन्नौज के महाराजाधिराज **गोविन्दचन्द्रदेव** का कमौली (अब लखनऊ म्यूजियम) में दानपत्र जो गङ्गा के तट पर मदप्रतिहार (अप्रतिहार ?) में दिया गया था।

(१०२)

वि० सं० ११८२—(११८३ के स्थान पर ?)—ज० व०

ए० सो० भाग २७ पृष्ठ २४२। कन्नौज के महाराजाधिराज गोविन्दचन्द्रदेव का दानपत्र जो गंगा के तट पर ईशप्रतिष्ठान में दिया गया था।

(१०३)

वि० सं० ११८४–ए० इ० भाग ४ पृष्ठ १११। कन्नौज के महाराजाधिराज गोविन्दचन्द्रदेव का कमौली (अब लखनऊ म्यूजियम) में दानपत्र जो वाराणसी में दिया गया था।

(१०४)

वि० सं० ११८५–ज०ब०ए०सो० भाग ५६ पृष्ठ ११९। कन्नौज के महाराजाधिराज गोविन्दचन्द्रदेव का बनारस में दानपत्र जो वाराणसी में दिया गया था।

(१०५)

वि० सं० ११८६–आ०स०इ० भाग २१ पृष्ठ ३४। चन्देल्ल महाराज मदनवर्मदेव के समय का कालञ्जर के स्तूप पर लेख।

(१०६)

वि० सं० ११८७–आ०स०इ० भाग २१ पृष्ठ ३४। चन्देल्ल मदनवर्मदेव का कालञ्जर स्तूप पर लेख।

(१०७)

वि० सं० ११८७–ज०ब०ए०सो० भाग ५६ पृष्ठ १०८। कन्नौज के महाराजाधिराज गोविन्दचन्द्रदेव का रैवान (अब लखनऊ म्यूजियम) में दानपत्र जो वाराणसी में दिया गया था।

(१०८)

वि० सं० ११८८–आ०स०इ० भाग २१ पृष्ठ ३९ तथा ज०ब०ए०सो० भाग १७ पृष्ठ ३११। कालञ्जर के चन्देल्ल महाराजाधिराज मदनवर्मदेव के समय का कालञ्जर चट्टान पर लेख।

(१०९)

वि० सं० ११८८—इ०ए० भाग १९ पृष्ठ २४९ । कन्नौज के महाराजाधिराज **गोविन्दचन्द्रदेव** का रेन (अब लखनऊ म्यूजियम) में दानपत्र जो बनारस में दिया गया था ।

(११०)

वि० सं० ११८९—ए०इ० भाग ५ पृष्ठ ११४ । कन्नौज के महाराजाधिराज **गोविन्दचन्द्रदेव** तथा उनकी माता महाराज्ञी **राल्हण देवी** का पाली (अब लखनऊ म्यूजियम) में दानपत्र ।

(१११)

वि० सं० ११९०—इ०ए० भाग ६ पृष्ठ ५५ । पृथ्वीपालदेव के उत्तराधिकारी तिहुणपालदेव, उनके उत्तराधिकारी महाराजाधिराज **विजयपालदेव** का इङ्गनोड़ में शिलालेख ।

(११२)

वि० सं० ११९०—ए०इ० भाग ४ पृष्ठ ११२ । कन्नौज के महाराजाधिराज **गोविन्दचन्द्रदेव** का कमौली (अब लखनऊ म्यूजियम) में दानपत्र ।

(११३)

वि० सं० ११९०—इ० ए० भाग १६ पृष्ठ २०८ । कालञ्जर के चन्देल्ल महाराजाधिराज **मदनवर्मदेव** का बान्दा जिले (अब बङ्गाल एशियाटिक सोसायटी) में दानपत्र जो भैलस्वामिन के निकट दिया गया था । इसका समय ठीक नहीं है ।

चन्द्रात्रेय के वंश में जो जयशक्ति, विजयशक्ति तथा अन्य राजकुमारों से प्रसिद्ध हो चुकी थी कीर्तिवर्मन; तब पृथ्वीवर्मन, और उसके पीछे मदनवर्मन हुए ।

(११४)

वि० सं० ११९१—ए०इ० भाग ४ पृष्ठ १३१ । कन्नौज के महाराजाधिराज गोविन्दचन्द्रदेव के राजत्वकाल का सिङ्गर महाराजपुत्र वत्सराजदेव (लोहडदेव) का कमौली (अब लखनऊ म्यूजियम) में दानपत्र जो वाराणसी में दिया गया था ।

(११५)

वि० स० ११९१—इ०ए० भाग १९ पृष्ठ ३९३ । परमार महाराजाधिराज यशोवर्मदेव का दानपत्र जो धारा में दिया गया था और जिसे उसके पुत्र और उत्तराधिकारी महाकुमार लक्ष्मीवर्मदेव ने अपने उज्जैन वाले दानपत्र में सवत १२०० में स्वीकार किया था ।

(११६)

वि० सं० ११९२—ज०ब०ए०सो०भाग १७ पृष्ठ ३२२ तथा आ०स०इ०भाग २१ पृष्ठ ३९ । कालञ्जर में चट्टान की मूर्ति का शिलालेख।

(११७)

वि० सं० ११९२—इ०ए० भाग १९ पृष्ठ ३४९ तथा इ०इ० नम्बर ९१ । परमार महाराज यशोवर्मदेव का उज्जैन (अब रोयल एशियाटिक सोसायटी) में दूसरा दानपत्र । इसमें एक मोमलदेवी का वर्णन है जो कदाचित यशोवर्मन की माता थी ।

(११८)

वि० सं० ११९४—आ०स०इ० भाग २१ पृष्ठ ३१ । कालञ्जर में नीलकण्ठ मन्दिर के निकट एक गुहा में शिलालेख ।

(११९)

वि० सं० ११९६—आ० स० वे० ई० नम्बर २ । चौलुक्य महाराजाधिराज जयसिंहदेव के राजत्वकाल का भद्रेश्वरवाला खण्डित शिलालेख ।

(१०९)

वि० सं० ११८८—इ०ए० भाग १९ पृष्ठ २४९ । कन्नौज के महाराजाधिराज **गोविन्दचन्द्रदेव** का रेन (अब लखनऊ म्यूजियम) में दानपत्र जो बनारस में दिया गया था ।

(११०)

वि० सं० ११८९—ए०इ० भाग ९ पृष्ठ ११४ । कन्नौज के महाराजाधिराज **गोविन्दचन्द्रदेव** तथा उनकी माता महाराज्ञी **राल्हण देवी** का पाली (अब लखनऊ म्यूजियम) में दानपत्र।

(१११)

वि० सं० ११९०—इ०ए० भाग ६ पृष्ठ ९९ । पृथ्वीपालदेव के उत्तराधिकारी तिहुणपालदेव, उनके उत्तराधिकारी महाराजाधिराज **विजयपालदेव** का इङ्गनोड़ में शिलालेख ।

(११२)

वि० सं० ११९०—ए०इ० भाग ४ पृष्ठ ११२ । कन्नौज के महाराजाधिराज **गोविन्दचन्द्रदेव** का कमौली (अब लखनऊ म्यूजियम) में दानपत्र ।

(११३)

वि० सं० ११९०—इ० ए० भाग १६ पृष्ठ २०८ । कालञ्जर के चन्देल्ल महाराजाधिराज **मदनवर्मदेव** का बान्दा जिले (अब बङ्गाल एशियाटिक सोसायटी) में दानपत्र जो भैलस्वामिन् के निकट दिया गया था । इसका समय ठीक नहीं है ।

चन्द्रात्रेय के वंश में जो जयशक्ति, विजयशक्ति तथा अन्य राजकुमारों से प्रसिद्ध हो चुकी थी कीर्तिवर्मन, तब पृथ्वीवर्मन, और उसके पीछे मदनवर्मन हुए ।

(११४)

वि० सं० ११९१–ए०इ० भाग ४ पृष्ठ १३१ । कन्नौज के महाराजाधिराज गोविन्दचन्द्रदेव के राजत्वकाल का सिङ्गर महाराजपुत्र वत्सराजदेव (लोहडदेव) का कमौली (अब लखनऊ म्यूजियम) में दानपत्र जो वाराणसी में दिया गया था ।

(११५)

वि० सं० ११९१–इ०ए० भाग १९ पृष्ठ ३५३ । परमार महाराजाधिराज यशोवर्मदेव का दानपत्र जो धारा में दिया गया था और जिसे उसके पुत्र और उत्तराधिकारि महाकुमार लक्ष्मीवर्मदेव ने अपने उज्जैन वाले दानपत्र में संवत १२०० में स्वीकार किया था ।

(११६)

वि० सं० ११९२–ज०ब०ए०सो०भाग १७ पृष्ठ ३२२ तथा आ०स०इ०भाग २१ पृष्ठ ३५ । कालञ्जर में चट्टान की मूर्ति का शिलालेख।

(११७)

वि० सं० ११९२–इ०ए० भाग १९ पृष्ठ ३४९ तथा इ०इ० नम्बर ५१ । परमार महाराज यशोवर्मदेव का उज्जैन (अब रॉयल एशियाटिक सोसायटी) में दूसरा दानपत्र । इसमें एक मोमलदेवी का वर्णन है जो कदाचित यशोवर्मन की माता थी ।

(११८)

वि० सं० ११९४–आ०स०इ० भाग २१ पृष्ठ ३१ । कालञ्जर में नीलकण्ठ मन्दिर के निकट एक गुहा में शिलालेख ।

(११९)

वि० सं० ११९५–आ० स० वे० ई० नम्बर २ । चौलुक्य महाराजाधिराज जयसिंहदेव के राजत्वकाल का भद्रेश्वरवाला खण्डित शिलालेख ।

(१२०)

वि० सं० ११९६—ए० इ० भाग २ पृष्ठ ३६१ । कन्नौज के महाराजाधिराज गोविन्दचन्द्रदेव का कमोली (अब लखनऊ म्यूजियम) में दान पत्र जो वाराणासी में दिया गया था ।

(१२१)

वि० सं० ११९६—इ० ए० भाग १० पृष्ठ १५९ । चौलुक्य जयसिंहदेव के राजत्यकाल का दोहद में शिलालेख ।

(१२२)

वि० सं० ११९७—ए० इ० भाग ४ पृष्ठ ११४ । कन्नौज के महाराजाधिराज गोविन्दचन्द्रदेव का कामोली (अब लखनऊ म्यूजियम) में दानपत्र जो वाराणसी में दिया गया था ।

(१२३)

वि० सं० ११९८—ए० इ० भाग ४ पृष्ठ ११३ । कन्नौज के महाराजाधिराज गोविन्दचन्द्रदेव का कमोली (अब लखनऊ म्यूजियम) में दानपत्र जो वाराणसी में दिया गया था ।

(१२४)

वि० सं० ११९९—इ०ए० भाग १८ पृष्ठ २१ । कन्नौज के महाराजाधिराज गोविन्दचन्द्रदेव तथा महाराजपुत्र राज्यपालदेव का गगहा (अब ब्रिटिश म्यूजियम) में दानपत्र ।

(१२५)

वि० सं० ११९९—आ० स० इ० भाग ३ पृष्ठ ५८—६० । गढ़वा के मन्दिर के स्तूपों के शिलालेख ।

(१२६)

वि० सं० १२००—इ०ए० भाग १९ पृष्ठ ३५१ तथा इ०उ० नम्बर २५० । परमार महाकुमार लक्ष्मीवर्मदेव का उज्जैन (अब रोयल एशियाटिक सोसायटी) में दानपत्र । इसमें उस दानपत्र को स्वीकार

किया है जो उसके पिता महाराजाधिराज यशोवर्मदेव ने संवत ११९१ में दिया था।

उदयादित्य, नरवर्मन, यशोवर्मन, महाकुमार, लक्ष्मीवर्मन।

(१२७)

वि० सं० १२००—ए०इ० भाग ४ पृष्ठ ११९। कन्नौज के महाराजाधिराज **गोविन्दचन्द्रदेव** का कमौली (अब लखनऊ म्यूजियम) में दानपत्र जो वाराणसी में दिया गया था।

(१२८)

वि० सं० १२०१ (**१२०२ के स्थान पर**) ए०इ० भाग ९ पृष्ठ ११९। कन्नौज के महाराजाधिराज **गोविन्दचन्द्रदेव** का मछलीशहर (अब लखनऊ म्यूजियम) में दानपत्र जो वाराणसी में दिया गया था।

(१२९)

वि० सं० १२०२—ए०रि० व. प्रै. पृष्ठ १७९ तथा भा० इ० पृष्ठ १९८। [जयसिंह] सिद्धराज के उत्तराधिकारी चौलुक्य **कुमारपाल** के राजत्वकाल का गुहिलवंश के कुछ जनों का मङ्गोल (मङ्गलपुर) में शिलालेख जिसे प्रसर्वज्ञ ने संकलित किया।

(१३०)

वि० सं० १२०२—इ०ए० भाग १० पृष्ठ १९९। गोद्रहक के महामण्डलेश्वर **वापनदेव** के समय के वि०सं० ११९६ के दोहद शिलालेख के पश्चातलेख में समय।

(१३१)

वि० सं० १२०५—ए० इ० भाग १ पृष्ठ १५३। ग्रहपातिवंश के कुछ जैनों (श्रेष्ठियों) का खजराहो के जैन मन्दिर में शिलालेख।

(१३२)

वि० सं० १२०७—आ० स० इ० भाग १० पृष्ठ ९७। चान्दपुर में वराह की प्रतिमा के नीचे लेख।

(१३३)

वि० सं० १२०७—आ० स० इ० भाग १ पृष्ठ ९६। कन्नौज के **गोविन्दचन्द्रदेव** की रानी **गोसल्लदेवी** के समय का हाथियादह के स्तूप पर शिलालेख।

(१३४)

वि० सं० १२०७—आ० स० इ० भाग २० पृष्ठ ४६ तथा ए० इ० भाग २ पृष्ठ २७६। महाराजाधिराज [अ ?] **जयपालदेव** के समय का महावन में शिलालेख।

(१३५)

वि० सं० १२०७—ए० इ० भाग २ पृष्ठ ४२२। चौलुक्य **कुमारपालदेव** का चित्तौरगढ़ में खण्डित शिलालेख जिसे जयकीर्ति ने सङ्कलित किया।

मूलराज प्रथम,................, सिद्धराज, कुमारपाल (शाकम्भरि के अनुशासक को पराजित किया तथा स्पादलक्ष देश को उजाड़ा)

(१३६)

वि० सं० १२०८—ए० इ० भाग १ पृष्ठ २९६। **कुमारपाल** के राजत्वकाल का वडनगर का शिलालेख जिसे श्रीपाल ने सङ्कलित किया था।

चुलुक्य के वंश में मूलराज प्रथम (जिसने चापोत्कट राजकुमारों को पराजित किया), उसका पुत्र चामुण्डराज, उसका पुत्र वल्लभराज, उसका भाई दुर्लभराज, भीम प्रथम, उसका पुत्र कर्ण, उसका पुत्र जयसिंह सिद्धाधिराज, कुमारपाल (जिसने अर्णोराज को पराजित किया)।

(१३७)

वि० सं० १२०८—ए० इ० भाग ९ पृष्ठ ११७। कन्नौज के महाराजाधिराज **गोविन्दचन्द्रदेव** तथा उसकी रानी पट्टमहादेवी महाराज्ञी **गोसलदेवी** का वङ्गवान (अब लखनऊ म्यूजियम) में दानपत्र जो वाराणसी में दिया गया था। समय ठीक नहीं है।

(१३८)

वि० सं० १२०८—आ० स० इ० भाग २१ पृष्ठ ४९। चन्देल्ल **मदनवर्मन** के राजत्वकाल का अजयगढ में शिलालेख।

(१३९)

वि० सं० १२०८—ज० रो० ए० सो० १८९८ पृष्ठ १०१। ग्रहपति यश के कुछ लोगों का होर्निमेन म्यूजियम में जैनमूर्ति का शिलालेख।

(१४०)

वि० सं० १२०९—भा० इं० पृष्ठ १७२। चौलुक्य महाराजाधिराज **कुमारपालदेव** के राजत्वकाल का केण्ड्र में खण्डित शिलालेख जिसमें नदूल के महाराज आल्हणदेव की एक आज्ञा तथा महाराजपुत्र केल्हणदेव का वर्णन है।

(१४१)

वि० सं० १२१०—इ०ए० भाग २० पृष्ठ२१०। अजमेर का शिलालेख जिसमें शाकम्भरी के चाहमान महाराजाधिराज **विग्रहराजदेव** के बनाए हुए हरकेलि नाटक के कुछ भाग हैं।

(१४२)

वि० सं० १२११—ए० ई० भाग ४ पृष्ठ ११६। कन्नौज के महाराजाधिराज **गोविन्दचन्द्रदेव** का कमौली (अब लखनऊ म्यूजियम) में दानपत्र जो वाराणसी में दिया गया था।

(१६४)

वि० सं० १२२७—आ० स० इ० भाग २१ पृष्ठ ४९। अजयगढ़ के ऊपरी फाटक पर शिलालेख।

(१६५)

वि० सं० १२२८—इ० ए० भाग २५ पृष्ठ २०६ तथा ज० ब० ए० सो० भाग ६४ पृष्ठ १९६। कालञ्जराधिपति चन्देल्ल महाराजाधिराज परमारदिदेव का इच्छावर में दानपत्र जो विलासपुर में दिया गया था।

(१६६)

वि० सं० १२२८—ए० इ० भाग ४ पृष्ठ १२२। कन्नौज के महाराजाधिराज जयचन्द्रदेव का कमौली (अब लखनऊ म्यूजियम) में दानपत्र जो वेणी के तट पर प्रयाग में दिया गया था।

(१६७)

वि० सं० १२२९—इ० ए० भाग १८ पृष्ठ ३४७। चौलुक्य महाराजाधिराज अजयपालदेव के राजत्वकाल का उदयपुर (ग्वालियर) में शिलालेख।

(१६८)

वि० सं० १२३०—ए० इ० भाग ४ पृष्ठ १२४। कन्नौज के महाराजाधिराज जयचन्द्रदेव का कमौली (अब लखनऊ म्यूजियम) में दानपत्र जो वाराणसी में दिया गया था।

(१६९)

वि० सं० १२३१—ए० इ० भाग ४ पृष्ठ १२९। कन्नौज के महाराजाधिराज जयचन्द्रदेव का कमौली (अब लखनऊ म्यूजियम) में दानपत्र जो काशी में दिया गया था। समय ठीक नहीं है।

(१७०)

वि० सं० १२३१ (१२३२ के स्थान पर ?)—इ० ए०

भाग १८ पृष्ठ ८२। जयसिंहदेव के उत्तराधिकारी कुमारपालदेव के उत्तराधिकारी चौलुक्य महाराजाधिराज **अजयपालदेव** के राजत्वकाल का दानपत्र जिसमें चाहुयाण (चाहुमान) वंश के महामण्डलश्वर **वैजल्लदेव** के दान का उल्लेख है। यह ब्राह्मणपाटक में लिखा गया था। यह दानपत्र सम्वत् १२३९ में खोदा गया था।

(१७१)

वि० सं० १२३२—ए० इ० भाग ४ पृष्ठ १२७। कन्नौज के महाराजाधिराज **जयचन्द्रदेव** का कमौली (अब लखनऊ म्यूजियम) में दानपत्र जो काशी में दिया गया था और जिसमें राजा के पुत्र **हरिश्चन्द्र** का वर्णन है।

(१७२)

वि० सं० १२३२—इ० ए० भाग १८ पृष्ठ १३०। कन्नौज के महाराजाधिराज **जयचन्द्रदेव** का बनारस कालेज में दानपत्र जो वाराणसी में दिया गया था और जिसमें राजा के पुत्र **हरिश्चन्द्र** का वर्णन है।

(१७३)

वि० सं० १२३२—आ० स० इ० भाग ३ पृष्ठ १२५। **गोविन्दपालदेव** के राजत्वकाल का गया में शिलालेख।

(१७४)

वि० सं० १२३३—ए० इ० भाग ४ पृष्ठ १२९। कन्नौज के महाराजाधिराज **जयचन्द्रदेव** का कमौली (अब लखनऊ म्यूजियम) में दानपत्र जो वाराणसी में दिया गया था।

(१७५)

वि० सं० १२३३—इ० ए० भाग १८ पृष्ठ १३५। कन्नौज के महाराजाधिराज **जयचन्द्रदेव** का बङ्गाल एशियाटिक सोसायटी में दानपत्र जो वाराणसी में दिया गया था।

(१७६)

वि० सं० १२३३–इ० ए० भाग १८ पृष्ठ १३७ कन्नौज के महाराजाधिराज जयचन्द्रदेव का बङ्गाल एशियाटिक सोसायटी में दूसरा दानपत्र जो वाराणसी में दिया गया था।

(१७७)

वि० सं० १२३३–ज० ब० ए० सो० भाग ३८ पृष्ठ २६। बुलंदशहर से अनंग का दानपत्र। इसमे ये नाम दिए हैं—चन्द्रक, धरणीवराथ, प्रभास, भैरव, रुद्र, गोविन्दराज, यशोधर, हरदत्त, त्रिभुवनादित्य, भोगादित्य, कुलादित्य, विक्रमादित्य, पद्मादित्य, भोजदेव, सहजादित्य, (राजराज ?) अनङ्ग।

(१७८)

वि० सं० १२३४–इ० ए० भाग १८ पृष्ठ १३८। कन्नौज के महाराजाधिराज जयचन्द्रदेव का बङ्गाल एशियाटिक सोसायटी में दानपत्र जो वाराणसी में दिया गया था।

(१७९)

वि० सं० १२३५ और १२३६—ज० ब० ए० सो० भाग ७ पृष्ठ ७३६। परमार महाकुमार हरिश्चन्द्र देव का पिप्लिआ नगर में दानपत्र जो नरमदा के तट पर किसी स्थान पर दिया गया था।

उदयादित्य, नरवर्मन, यशोवर्मन, जयवर्मन, महाकुमार हरिश्चन्द्र जो महाकुमार लक्ष्मीवर्मन के पुत्र थे।

(१८०)

वि० सं० १२३६–इ० ए० भाग १८ पृष्ठ १४०। कन्नौज के महाराजाधिराज जयचन्द्रदेव का बंगाल एशियाटिक सोसायटी में दानपत्र जो गंगा के तट पर रण्डवै में दिया गया था।

(१८१)

वि० सं० १२३६–इ० ए० भाग १८ पृष्ठ १४१। कन्नौज

के माहाराजाधिराज **जयचन्द्रदेव** का बंगाल एशियाटिक सोसायटी में दूसरा दानपत्र जो गंगा के तट पर रण्डवै में दिया गया था।

(१८२)

वि० सं० १२३६—इ० ए० भाग १८ पृष्ठ १४२। कन्नौज के महाराजाधिराज **जयचन्द्रदेव** का बंगाल एशियाटिक सोसायटी में दूसरा दानपत्र जो गंगा के तट पर रण्डवै में दिया गया था।

(१८३)

वि० स० १२३९—आ० स० इ० भाग १० तथा भाग २१ पृष्ठ १७३ व १७४। अर्णोराज के पौत्र तथा सोमेश्वर के पुत्र चाहमान **पृथ्वीराज** का जेजाकभुक्ति के चन्देल्ल **परमारदिदेव** के पराजित करने का मदनपुर में शिलालेख।

(१८४)

वि० सं० १२३९—बो० ग० भाग १ पृष्ठ ४७४। महाराज पुत्र (?) **जयतसिंहदेव** (?) के राजत्वकाल का भिमाल (श्रीमाल) में शिलालेख।

(१८५)

वि० सं० १२४-(?)—प्रो० ब० ए० सो० १८८० पृष्ठ ७७। बुद्धगया का बौद्ध शिलालेख जिसमें कन्नौज के **जयचन्द्रदेव** का वर्णन है और जिसे सौंद के पुत्र मनोरथ ने सङ्कलित किया था।

(१८६)

वि० सं० १२४०—डाक्टर बरगेस की प्रतिलिपियों से। चन्देल्ल **परमारदिदेव** के राजत्वकाल का कालञ्जर की चट्टान पर शिलालेख।

(१८७)

वि० सं० १२४०—आ० स० इ० भाग २१ पृष्ठ ७२। महोबा के दुर्ग की दीवाल का खण्डित शिलालेख।

(१८८)

वि० सं० १२४३—आ० स० इ० भाग २१ पृष्ठ ९०। अजय गढ़ के ऊपरी फाटक पर का शिलालेख।

(१८९)

वि० सं० १२४३—इ० ए० भाग १९ पृष्ठ १० तथा इ० इ० नम्बर १३। कन्नौज के महाराजाधिराज जयचन्द्रदेव का फैजाबाद (अब रायल एशियाटिक सोसायटी) में दानपत्र जो वाराणसी में दिया गया था।

(१९०)

वि० सं० १२४४—आ० स० इ० भाग २० पृष्ठ ९०। तहनगढ़ दुर्ग के फाटक पर के स्तूप का शिलालेख।

(१९१)

वि० सं० १२४४—आ० स० इ० भाग ६ पृष्ठ १९६। चाहमान पृथ्वीराजदेव के राजत्वकाल का बीसलपुर स्तूप का शिलालेख।

(१९२)

वि० सं० १२४७(?)—ए० इ० भाग १ पृष्ठ ४७। रत्नपुर के पृथ्वीदेव तृतीय के समय का रत्नपुर (अब नागपुर म्यूजियम) में शिलालेख जिसे रत्नसिंह के पुत्र देवगण ने सङ्कलित किया था।

(१९३)

वि० सं० १२५२—ए० इ० भाग १ पृष्ठ २०८। चन्देल्ल परमारदिदेव और उसके मंत्री सल्लक्षण तथा (उसके पुत्र) पुरुषोत्तम का बघारी (अब लखनऊ म्यूजियम) में शिलालेख जिसे लक्ष्मीधर के पौत्र तथा गदाधर के पुत्र देवधर ने सङ्कलित किया था।

चन्द्रात्रेय राजकुमारों में मदनवर्मन, उसका पुत्र यशोवर्मन, उसका पुत्र परमार्दिन।

(१९४)

वि० सं० १२५३—इ० ए० भाग १७ पृष्ठ २३८। तृका लिङ्ग-

धिपति कल्चुरी (छेदी) महाराजाधिराज **विजयदेव** के राजत्व काल का कक्रेरेडी के महाराणक **सल्लखणवर्मदेव** का रीवा (अब बृटिश म्यूजियम) में दानपत्र जो कक्रेरेडी में दिया गया था।

धाहिल्ल, वाजूक, दन्दूक, खोजक, जयवर्मन, उसका पुत्र वत्सराज, उसके पुत्र कीर्तिवर्मन और सल्लखणवर्मन

(१९०)

वि० सं० १२५३—आ० स० इ० भाग ११ पृष्ठ १२९। कन्नौज के एक अनुशासक का श्रेन्खर स्तूप पर शिलालेख।

(१९६)

वि० सं० १२५६—इ० ए० भाग ११ पृष्ठ ७१। चौलुक्य महाराजाधिराज **भीमदेव द्वितीय** का पाटन में दानपत्र जो अणहिलपाटक में दिया गया था।

मूलराज प्रथम, चामुण्डराज, दुर्लभराज, भीम प्रथम, कर्णत्रैलोक्य-मल्ल, जयसिंह सिद्धचक्रवर्तिन, कुमारपाल, अजयपाल, मूलराज द्वितीय, भीम द्वितीय, अभिनवसिद्धराज।

(१९७)

वि० सं० १२५६—इ० ए० भाग १६ पृष्ठ २५४। परमार महाकुमार **उदयवर्मदेव** का भूपाल में दानपत्र जो रेवा के तट पर गुनाडाघट्ट में दिया गया था।

यशोवर्मन, जयवर्मन, महाकुमार लक्ष्मीवर्मन, महाकुमार हरिश्चन्द्र, उसका पुत्र महाकुमार उदयवर्मन।

(१९८)

वि० सं० १२५८—ज० व० ए० सो० भाग १७ पृष्ठ २१२ तथा आ० स० इ० भाग २१ पृष्ठ ३७। चन्देल्ल **परमर्दिदेव** का कालञ्जर में शिलालेख जिसे उसने स्वयं सङ्कलित किया था।

(१९९)

वि० सं० १२६३—इ० ए० भाग ६ पृष्ठ १९४ । चौलुक्य महाराजाधिराज भीमदेव द्वितीय का कडी में दानपत्र जो अणहिल्या-टक में दिया गया था ।

(२००)

वि० सं० १२६२—बा०ग० भाग १ पृष्ठ ४७४ । महाराजा-धिराज उदयसिंहदेव के राजत्वकाल का भिंमाल (श्रीमाल) में शिलालेख ।

(२०१)

वि० सं० १२६४—इ०ए० भाग ११ पृष्ठ ३३७ । चौलुक्य महाराजाधिराज भीमदेव द्वितीय के राजत्वकाल का मेहर राजा जगमल्ल का तिमाणा में दानपत्र जो तिंत्राणक में दिया गया था ।

(२०२)

वि० सं० १२६५—इ० ए० भाग ११ पृष्ठ २२१ । चौलुक्य महाराजाधिराज भीमदेव द्वितीय के राजत्वकाल का आबू पर्वत पर शिलालेख, जिस समय परमार माण्डलिक धारावर्षदेव (जिसके युवराज प्रह्लादनदेव थे) चन्द्रावती में राज्य करते थे । यह लक्ष्मीधर द्वारा संकलित किया गया था ।

(२०३)

वि० सं० १२६६—इ० ए० भाग १८ पृष्ठ११२ तथा इ० इ० नम्बर ११ । चौलुक्य महाराजाधिराज भीमदेव द्वितीय के राजत्वकाल का रायल एशियाटिक सोसायटी में दानपत्र जो अणहिल्लपाटक में दिया गया था ।

(२०४)

वि० सं० १२६७—ज० ब०ए० सो० भाग ९ पृष्ठ ३७८ ।

परमार **अर्जुनवर्मदेव** का पिप्लिआनगर में दानपत्र जो मण्डपदुर्ग में दिया गया था।

परमार वंश में भोज, उसके पीछे उदयादित्य, उसका पुत्र नरवर्मन, उसका पुत्र यशोवर्मन, उसका पुत्र अजयवर्मन उसका पुत्र विन्ध्यवर्मन, उसका पुत्र सुभटवर्मन, उसका पुत्र अर्जुन (अर्जुनवर्मन) जिसने जयसिंह को पराजित किया।

(२०५)

वि० सं० १२६९—आ० स० इ० भाग २१ पृष्ठ ५० । चन्देल्ल राजा **त्रैलोक्यवर्मदेव** के राजत्वकाल का अजयगढ़ में शिलालेख।

(२०६)

वि० सं० १२७०—ज० अ० ओ० सो० भाग ७ पृष्ठ ३२ । परमार महाराज **अर्जुनवर्मदेव** का भूपाल में दानपत्र जो भृगुकच्छ में दिया गया था।

(२०७)

वि० सं० १२७२—ज० अ० ओ० सो० भाग ७ पृष्ठ २५ । परमार महाराज **अर्जुनवर्मदेव** का भूपाल में दानपत्र जो रेवा और कपिला के सङ्गम पर अमरेश्वर तीर्थ में दिया गया था।

(२०८)

वि० सं० १२७२—ए० रि० बा० प्रे० पृष्ठ १८६ । मेहर राजा **रणसिंह** के समय का शियाल वेट मूर्ति का शिलालेख। इसका समय ठीक नहीं है।

(२०९)

वि० सं० १२७३—ए० इ० भाग २ पृष्ठ ४३९ तथा भा०इ० पृष्ठ १९१ । चौलुक्य **भीमदेव द्वितीय** के समय का वेरावल (सोमनाथदेव पट्टन) में खण्डित शिलालेख जिसमें श्रीधर और वत्साकुल वंश

के और लोगों तथा मूलराज प्रथम से लेकर भीमदेव द्वितीय तक अणहिलवाड़ के चौलुक्य राजाओं की प्रशंसा है।

(२१०)

वि० सं० १२७३—ज० ब० ए० सो० भाग १९ पृष्ठ ४५४। जौनपुर जिले का शिलालेख जिसमें एक रेहननामा है।

(२११)

वि० सं० १२७४—बा० ग० भाग १ पृष्ठ ४७५। महाराजाधिराज उदयसिंहदेव के राजत्वकाल का भिमाल (श्रीमाल) में खण्डित शिलालेख।

(२१२)

वि० सं० १२(७)५—भा० इ० पृष्ठ २०९। चौलुक्य महाराजाधिराज भीमदेव द्वितीय के राजत्वकाल का भराणा का खण्डित शिलालेख।

(२१३)

वि० सं० १२७५—इ० ए० भाग २० पृष्ठ ३११ तथा के० टे० बे० इ० पृष्ठ ११०। धारा के परमार महाराजाधिराज देवपालदेव के राजत्वकाल का हरसौदा (अब. अमेरिकन ओरिएण्टेल सोसायटी) में शिलालेख।

(२१४)

वि० सं० १२७९—ए० इ० भाग ४ पृष्ठ ३११। राजा (क्षितीन्द्र) प्रताप के समय का रोहतासगढ़ की चट्टान पर शिलालेख।

(२१५)

वि० सं० १२८०—इ० ए० भाग ६ पृष्ठ १९६। चौलुक्य महाराजाधिराज जयन्तसिंहदेव का कडी में दानपत्र जो अणहिलपुर में दिया गया था।

मूलराज प्रथम, चामुण्डराज, बल्लभराज, दुर्लभराज, इसके आगे

भीम द्वितीय तक संख्या १९६ के ऐसा, उसके पश्चात उसके स्थान पर जयन्तसिंह-अभिनवसिद्धराज।

(२१६)

वि० सं० १२८३—इ० ए० भाग ६ पृष्ठ १९९। चौलुक्य महाराजाधिराज **भीमदेव द्वितीय** का कडी में दानपत्र जो अणहिलपाटक में दिया गया था।

मूलराज प्रथम, चामुण्डराज, वल्लभराज, दुर्लभराज, इसके पीछे भीम द्वितीय तक संख्या १९६ ऐसा।

(२१७)

वि० सं० १२८६—इ० एं० भाग २० पृष्ठ ८३। धारा के परमार **देवपालदेव** के राजत्वकाल का उदयपुर (ग्वालियर) में शिलालेख।

(२१८)

वि० सं० १२८७—इ० ए० भाग ६ पृष्ठ २०१। चौलुक्य महाराजाधिराज **भीमदेव द्वितीय** का कडी में दानपत्र जो अणहिल्पाटक में दिया गया था। इसका समय ठीक नहीं है।

(२१९)

वि० सं० १२८७(?)—काथवटे सम्पादित सोमेश्वरकृत कीर्तिकौमुदी, एपेंडिक्स बी० तथा भा० इ० पृष्ठ २१८। चौलुक्य महाराजाधिराज **भीमदेव द्वितीय** तथा चन्द्रावती के परमार महामण्डलेश्वर राजकुल सोमसिंहदेव (जिसका पुत्र कान्हणदेव था) के राजत्वकाल का आबू पर्वत पर शिलालेख जिसमें लवणप्रसाददेव के पुत्र चौलुक्य(बघेला) महामण्डलेश्वर राणक **वीरधवलदेव** का वर्णन है।

(२२०)

वि० सं० १२८७(?)—ए० रा० भाग १६ पृष्ठ ३०२। काथ

घटे सम्पादित सोमेश्वरकृत-कीर्तिकौमुदी एपेंडिक्स ए०, तथा भा० इ० पृष्ठ १७४। आबू पर्वत का शिलालेख जिसमें वीरधवल के मंत्री वस्तुपाल और तेजहपाल की (सोमेश्वर से) प्रशंसा है और चौलुक्य (बघेला) अर्णोराज, लवणप्रसाद और **वीरधवल** तथा चन्द्रावती के परमार धूमराज, धन्धुक, ध्रुवभट, रामदेव, उसके छोटे भाई यशोधवल (जिसने चौलुक्य कुमारपाल के शत्रु, मालव के राजा बल्लाल को पराजित किया), उसके पुत्र धारावर्ष, उसके छोटे भाई प्रह्लादन (जो सामन्तसिंह से लड़ा) धारावर्ष के पुत्र **सोमसिंहदेव** और उसके पुत्र कृष्णराजदेव का वर्णन है।

(२२१)

वि० सं० १२८८—इ० ए० भाग ६ पृष्ठ २०३। चौलुक्य महाराजाधिराज **भीमदेव द्वितीय** का कडी में दानपत्र जो अणहिलपाटक में दिया गया था।

(२२२)

वि० सं० १२८८—आ० स० वे० इ० भाग २ पृष्ठ १७०। मंत्री वस्तुपाल और तेजहपाल के मन्दिर का गिरनार में शिलालेख जिसमें चौलुक्य (बघेला) लवणप्रसाददेव तथा उसके पुत्र **वीरधवलदेव** का वर्णन है।

(२२३)

वि० सं० १२८८ अथवा **१२८९**—आ० स० वे० इ० भाग २ पृष्ठ १७३ तथा ए० री० बा० प्रे० पृष्ठ ३१९। मंत्री वस्तुपाल का गिरनार में शिलालेख।

(२२४)

वि० सं० १२८९—इ० ए० भाग २० पृष्ठ ८३। धारा के परमार महाराजाधिराज **देवपालदेव** के राजत्वकाल का उदयपुर (ग्वालियर) में शिलालेख।

(२२५)

वि० सं० १२९५–इ० ए० भाग ६ पृष्ठ २०९ । चौलुक्य महाराजाधिराज **भीमदेव द्वितीय** का कड़ी में दानपत्र जो अणहिल्ल-पाटक में दिया गया था ।

(२२६)

वि० सं० १२९६–इ० ए० भाग ६ पृष्ठ २०६ । चौलुक्य महाराजाधिराज **भीमदेव द्वितीय** का कड़ी में दानपत्र जो अणहिल्ल-पाटक में दिया गया था ।

(२२७)

वि० सं० १२९६–ए० इ० भाग १ पृष्ठ ११९ । कीरग्राम में वैद्यनाथ के मन्दिर का जैन शिलालेख ।

(२२८)

वि० सं० १२९७–इ० ए० भाग १७ पृष्ठ २३१ । त्रिकलि-ङ्गाधिपति चन्देल्ल महाराजाधिराज **त्रैलोक्यवर्मदेव** के राजत्वकाल का ककरेडी के महाराणक **कुमारपालदेव** का रीवा (अब वृटिश म्यूजि-यम) में दानपत्र ।

कौरव वंश में महाराणक धीहिल्ल, उसका पुत्र दुर्जय, उसका पुत्र शोजवर्मन, उसका पुत्र जयवर्मन, उसका पुत्र वत्सराज, उसका पुत्र सलक्षणवर्मन उसका पुत्र हरिराज, उसका पुत्र कुमारपाल ।

(२२९)

वि० सं० १२९८–इ० ए० भाग १७ पृष्ठ २३६ । चन्देल्ल महाराज **त्रैलोक्यमल्ल** के राजत्वकाल का ककरेडी के महाराणक **हरि-राजदेव** का रीवा (अब वृटिश म्यूजियम) में दानपत्र ।

धाहिल्ल से वत्सराज तक संख्या २२८ में वत्सराज का पुत्र की-र्तिवर्मन, उसका भाई सल्षणवर्मन, उसका पुत्र [व] आह [ड] वर्मन, उसका भाई हरिराज ।

(२३०)

वि० सं० १२९९—इ० ए० भाग ६ पृष्ठ २०८ । चौलुक्य महाराजाधिराज तृभुवनपालदेव का कड़ी में दानपत्र जो अणहिल्लपाटक में दिया गया था।

मूलराज प्रथम से भीम द्वितीय तक के लिये संख्या २१६ देखो; भीम द्वितीय के पश्चात त्रिभुवनपाल।

(२३१)

वि० सं० १३००—ए० री० पृष्ठ १८६ । शियालबेट की मूर्ति का शिलालेख।

(२३२)

वि० सं० १३०५—बा० ग० भाग १ पृष्ठ ४७६ । महाराजाधिराज [उदय] सिंहदेव के राजत्वकाल का भिमाल (श्रीमाल) में खण्डित शिलालेख।

(२३३)

वि० सं० १३११—ए० इ० भाग १ पृष्ठ २९ । वीरधवल के पुत्र चौलुक्य (बवेला) वीसलदेव का दभोई का खण्डित शिलालेख जिसे सोमेश्वर ने सङ्कलित किया।

(२३४)

वि० सं० १३१२—इ० ए० भाग २० पृष्ठ ८४ । धारा के परमार महाराजाधिराज जयसिंहदेव के राजत्वकाल का राहतगढ़ में शिलालेख।

(२३५)

वि० सं० १३१५—ए० रि० बा० प्रे० पृष्ठ १८६ । शियालबेट की मूर्ति का शिलालेख।

(२३६)

वि० सं० १३१७—इ० ए० भाग ६ पृष्ठ २१० । चौलुक्य

(बाघेला) महाराजाधिराज वीसलदेव के राजत्वकाल का कडी में दानपत्र जिसमें मण्डली के लूणपसाजदेव के पौत्र तथा सग्रामसिंहदेव के पुत्र महामण्डलेश्वर राणक सामन्तसिंहदेव के दान का उल्लेख है।

(२३७)

वि० सं० १३१७—ए० इ० भाग १ पृष्ठ ३२७ तथा आ० स० इ० भाग २१ चन्देल वीरवर्मन तथा उसकी रानी कल्याणदेवी का अजयगढ चट्टान का शिलालेख, जिसे वत्सराज के पौत्र तथा हरिपाल के पुत्र ने सङ्कलित किया।

चन्द्रवंश में कीर्तिवर्मन (जिस ने चेदी कर्ण को पराजित किया) उस का पुत्र सल्लक्षण, जयवर्मन, पृथ्वीवर्मन, मदन, परमर्दिन, त्रैलोक्यवर्मन, उस का पुत्र वीरवर्मन जिस ने महेश्वर और वीसल्देवी की पुत्री कल्याणदेवी से विवाह किया। यह वीसल्देवी कुमार गोविन्दराज की पुत्री थी और महेश्वर ददीचि जाति के चादल का पौत्र तथा श्रीपाल का पुत्र था।

(२३८)

वि० सं० १३१८—डाक्टर बरगेस की एक प्रतिलिपि से। चन्देल वीरवर्मन (?) का झासी (अब लखनऊ म्यूजियम) में शिलालेख।

(२३९)

वि० सं० १३२०—इ० ए० भाग ११ पृष्ठ ३४३ तथा भा० इ० पृष्ठ २२४ चौलुक्य (वाघेल) महाराजाधिराज अर्जुनदेव के राजकाल का वीरावल में शिलालेख।

---

* ग्रन्थकार ने सर्वत्र शिलालेख लिखा है इस से यह नहीं कह सकते कि कौन ताम्रलेख है और कौन शिलालेख।

(२४०)

वि० सं० १३२०—ब्रो० गं० भाग १ पृष्ठ ४७७ । भिनमाल (श्रीमाल) का शिलालेख जिसे सुभट ने संकलित किया था ।

(२४१)

वि० सं० १३२४—ज० अ० ए० सो० भाग ५५ । पृष्ठ ४६। मेवाड़ के गुहिल महाराज तेजर्हसिंहदेव के राजकाल का चित्तौरगढ़ में शिलालेख ।

(२४२)

वि० सं० १३२५—आ० स० इ० भाग ३ पृष्ठ १२७ , गयासुद्दीन बलबन (?) के समय का बनराजदेव (?) का गया में शिलालेख ।

(२४३)

वि० सं० १३२५—आ० स० इ० भाग २१ पृष्ठ ५१ , चन्देल वीरवर्मन के राजकाल का अजयगढ़ में शिलालेख ।

(२४४)

वि० सं० १३२६—डाक्टर हुल्श की प्रतिलिपि से , धारा के परमार जैसिंघदेव (जयसिंहदेव) के राजकाल का पथारी में शिलालेख ।

(२४५)

वि० सं० १३२९—इ० ए० भाग ११ पृष्ठ १०६ , कोदिणार का शिलालेख जिसमें चौलुक्य (वाघेला) वीसलदेव के कवि नानाक की प्रशंसा है और जिसे गणपतिव्यास ने सङ्कलित किया था।

(२४६)

वि० सं० १३३०—ब्रो० गं० भाग १ पृष्ठ ४७८ , भिनमाल (श्रीमाल) का खण्डित शिलालेख जिसमें महाराजाधिराज उदयसिंहदेव का नाम आया है—इसे सुभट ने संकलित किया ।

(२४७)

वि० सं० १३३१—इ० ए० भाग २२ पृष्ठ ८०, भा०इ० पृष्ठ ७४, तथा आ० स० इ० भाग २३, मेदपाट (मेवाड) के गुहिलवंश का चित्तौर में शिलालेख जिसे वेदशर्मन ने सकलित किया। इस में नीचेलिखे राजाओं की प्रशंसा है—बप्पा, गुहिल, भोज, शील, कलभोज, मल्लट, भर्तृभट, सिंह, महायक, शम्माण, अल्लट, नरवाहन, शक्तिकुमार, आम्रप्रसाद, शुचिवर्मन, नरवर्मन।

(२४८)

वि० सं० १३३२—इ० ए० भाग २१ पृष्ठ २७७। चौलुक्य (वाघेला) महाराजाधिराज **सारङ्गदेव** के राजकाल का खोखा का खण्डित शिलालेख।

(२४९)

वि० सं० १३३३—बॉ० ग० भाग १ पृष्ठ ४८०, महाराजकुल [चा] **चिगदेव** के राजकाल का भिनमाल (श्रीमाल) में शिलालेख जिसे सुभट ने सकलित किया।

(२५०)

वि० सं० १३३४—बॉ० ग० भाग १ पृष्ठ २८१, महाराजकुल **चाचिग** के राजकाल का भिनमाल (श्रीमाल) में शिलालेख।

चाहुमान वंश में महाराजकुल समरसिंह ; उसका पुत्र महाराजाधिराज उदयसिंहदेव ; उसका पुत्र वाहटसिंह ; और [उसका पुत्र ?] चामुण्डराजदेव।

(२५१)

वि० सं० १३३५—ज० ब० ए० सो० भाग २२ पृष्ठ ६८। मेदपाट (मेवाड) के तेजसिंह और उनकी स्त्री जयतल्लदेवी के पुत्र गुहिल समर सिंह के राजकाल का चित्तौरगढ में शिलालेख।

(२५२)

वि० सं० १३३५—डाक्टर वरगेस की एक प्रतिलिपि से, चौलुक्य (वाघेला) महाराजाधिराज **सारङ्गदेव** के राजकाल का बृटिश म्यूजियम में शिलालेख।

(२५३)

वि० सं० १३३७—ज० ब० ए० सो० भाग ४३ पृष्ठ १०३, हम्मीर **गयासदीन (गियासुद्दीन बल्बन)** के समय का रोहतक जिले के बोहेर गांव की "पालम बावली" का शिलालेख।

हरियाणक देश में पहिले तोमर लोग राज्य करते थे, उसके पश्चात् चौहान लोग और उसके पश्चात् निचेलिखे शक राजालोग साहबदीन (शहाबुद्दीन गोरी), शुदुबदीन (कुतबुद्दीन ऐबक), असमसदीन (शमसुद्दीन अल्तमिश), पेरुज-साहि (रुक्नुद्दीन फीरोजशाह प्रथम) जलालदीन (जलालुद्दीन), मौजदीन (मुईजुद्दीन बहराम), अलावदीन (अलाउद्दीन मसऊद), नसरदीन (नासिरुद्दीन महमूद); और गयासदीन (गियासुद्दीन बल्बन)।

(२५४)

वि० सं० १३३७—आ० स० इ० भाग २१ पृष्ठ ५२। चन्देल **वीरवर्मदेव** के राजकाल का अजयगढ़ की चट्टान पर शिलालेख।

(२५५)

वि० सं० १३३७—आ० स० इ० भाग २१ पृष्ठ ७४। कालञ्जराधिपति चन्देल महाराजाधिराज **वीरवर्मदेव** का राहि में दानपत्र,

चन्द्रात्रेय राजकुमारों के वंश में मदनवर्मन, त्रैलोक्यवर्मन, वीरवर्मन 'इस वंश में प्रसिद्ध ये लोग हुए, जयशक्ति और विजयशक्ति आदि।

(२५६)

वि० सं० १३३९—बॉ० ग० भाग १ पृष्ठ २८३, महाराज-

कुल साम्वतसिंहदेव (?) के राजकाल का भिनमाल (श्रीमाल) में खण्डित शिलालेख ।

(२९७)

वि० सं० १३४०—ए० इ० भाग ४ पृष्ठ ३१३ , महाराजकुल साम्य (म ?) न्तसिंहदेव के राजकाल का रूपादेवी का 'बुर्ग' (अब जोधपुर) में शिलालेख ।

समरसिंह; उस का उत्तराधिकारी उदयसिंह; उस का पुत्र चाहमान चाच (चाच ?); उस की पुत्री (लक्ष्मीदेवी से) रूपादेवी जो राजा तेजसिंह की पत्नी हुई और जिस का पुत्र क्षेत्रसिंह हुआ ।

(२९८)

वि० सं० १३४०—डाक्टर बरगेस की एक प्रतिलिपि से, कालञ्जर का शिलालेख ।

(२९९)

वि० सं० १३४२—डाक्टर हार्नली की एक प्रतिलिपि से । चन्देल वीरवर्मदेव के राजकाल का गर्ह का शिलालेख जिसमे एक स्त्री के सती होने का वर्णन है ।

(३६०)

वि० सं० १३४२—इ० ए० भाग १६ पृष्ट ३४७ तथा भा० इ० पृष्ठ ८४ , मेदपाट (मेवाड) के गुहिल समरसिंह का आबू पर्वत पर शिलालेख (?) जिस प्रियपटु के पुत्र वेदशर्मन ने सकम्पित किया था । इस शिलालेख में नीचेलिखे गुहिल राजाओं की प्रशसा है वप्प (वप्पत्र) गुहिल भोज, शील काल्भोज, भर्तभट, सिंह, महाजिक, खुम्मान (खुम्मन), उल्लट, नरवाहन, शक्तिकुमार, शुचिवर्मन, नरवर्मन, कीर्तिवर्मन, वैरट, वैरिसिंह, विजयसिंह, अरिसिंह, चोड, विक्रमसिंह, क्षेमसिंह, सामन्तसिंह, कुमारसिंह, मथनसिंह, पद्मसिंह, जैत्रसिंह, तेतहसिंह, और समरसिंह ।

(२७३)

वि० सं० १३७२—आ० स० इ० भाग २१ पृष्ठ ९२, अज-यगढ़ के द्वार के स्तूप पर का शिलालेख।

(२७४)

वि० सं० १३७३—डाक्टर फुहेर की प्रतिलिपि से। सुल्तान कुतबुदी (कुत्बुद्दीन) के राजकाल का जोधपुर में शिलालेख।

(२७५)

वि० सं० १३७७—ए० रि० भाग १६ पृष्ठ २८२। आबू पर्वत का एक खण्डित शिलालेख।

इस शिलालेख में सिन्धुपुत्र, लक्ष्मण, शाकम्भरी का माणिक्य, अधिराज (?)............दन्दन (?), कीर्तिपाल, समरसिंह, उदयसिंह, मानवसिंह, प्रताप, आदि का वर्णन है।

(२७६)

वि० सं० १३८०—सर ए० कनिंघम की एक प्रतिलिपि से, उदयपुर (ग्वालियर) का शिलालेख।

(२७७)

वि० सं० १३८४—प्रो० ब० ए० सो० १८७३ पृष्ठ १०९, महमन्द साहि (मुहम्मद इब्न तुग़लक़) के समय का दिल्ली म्यूजि-यम में शिला लेख।

(२७८)

वि० सं० १३८४—ए० इ० भाग १ पृष्ठ ९३। महम्मद साहि (मुहम्मद इब्न तुग़लक़) के समय का दिल्ली म्यूजियम में एक दूसरा शिलालेख।

इस शिलालेख में म्लेच्छ सहाबदीन (शहाबुद्दीन गोरी) को प्रथम 'तुरुस' लिखा है जिसने ढिल्लिका (दिल्ली) में राज्य किया।

(२७९)

वि० सं० १३८४–इ० ए० भाग १९ पृष्ठ ३६० । मेहर के नायक ठेपक (टेवक) का हाथसिना (अब भावनगर म्यूज़ियम) में शिला लेख । इस लेख में पहिले चन्द्र (?) वंश में एक राजा शगार (खणर) का वर्णन है, जिस के वंश में जसधवल (यशो धवल) हुआ जिस ने सूर्यवंश की प्रियमला से विवाह किया और उस से तीन पुत्र, मह्ल, मण्डल और मेलिग हुए। इस लेख में फिर लिखा है कि वाशलराज (वाखलराज) के वंश में नागार्जुन (मण्डलीक का मित्र) हुआ, जिस के पुत्र महानन्द ने मङ्गलराज (?) की कन्या रूपा से विवाह किया। इस से टेपक उत्पन्न हुआ। इस मेहर ठेपक को राजा महिस ने राणपदवी दी और वह वह्लादित्य के वंशवाले (जो सूर्य विकुल का वंशज था) राजा कुन्तराज के आधीन था।

(२८०)

वि० सं० १३८७—आ० स० वे० ३० नम्बर २ ' चन्द्रावती के चाहुमान तेजसिंह (?) के राजकाल का आबूपर्वत पर शिलालेख '

(२८१)

वि० सं० १३९०—आ० स० इ० भाग २१ पृष्ठ १४३। केवटी-कुण्ड के स्तूप का शिलालेख।

(२८२)

वि० सं० १३९०—ज० ब० ए० सो० भाग ९ पृष्ठ ३४२। मुहम्मद इब्न तुगलक (?) के समय का चुनार के दुर्ग में शिलालेख।

(२८३)

वि० सं० १३९४–सर ए० कार्निंघम की एक प्रति लिपि से। उदयपुर (ग्वालियर) के दो शिलालेख।

२

(२८४)

वि० सं० १३२४–इ० ए० भाग २ पृष्ठ २९६ । चन्द्रावती के तेझसिंह के पुत्र चाहुमान राजा कान्हणदेव के राजकाल का आबूपर्वत पर शिलालेख।

(२८५)

वि०सं० १३९७–आ० स० इ० भाग २१ पृष्ठ १४३ । लूकस्थान के महाराज हमीरदेव के राजकाल के केवटीकुण्ड के तीन स्मारक स्तूपों के शिलालेख।

(२८६)

वि० सं० १४०४–आ० स० इ० भाग २१ पृष्ठ १९ । सिंघितुङ्ग (?) के राजकाल का मर्फा दुर्ग पर शिलालेख।

(२८७)

वि० सं० १४०४–आ० स० इ० भाग ९ पृष्ठ ३४ । महाराज वीरराजदेव (?) की रानियों के सती स्तूपों के रामपुर में शिलालेख।

(२८८)

वि० सं० १४१२–आ० स० इ० भाग ९ । उचहुडनगर के महाराज वीररामदेव के राजकाल का कारीतलाई में शिलालेख।

(२८९)

वि० सं० १४२९–इ० ए० भाग २० पृष्ठ ३१४ । सुल्तान पियरोज साह (फीरोज शाह) के राजकाल में गया के अनुशासक कुलचन्द का गया में शिलालेख।

ठाकुर कुलचन्द (कुलचन्दक), कुमार व्याघ्र (व्याघ्रराज) के वंश के ठाकुर ढाला के पौत्र तथा ठाकुर हेमराज के पुत्र थे।

(२९०)

वि० सं० १४३७–इ० ए० भाग ८ पृष्ठ १८६ तथा ए० रि० वा० प्रे० पृष्ठ १८१। प्रभास के वाजक नायक भर्म तथा उसके मन्त्री कर्मसिंह के समय का घामलेज में शिलालेख।

(२९१)

वि० सं० १४३९–आ० स० इ० भाग ६ पृष्ठ ७९। चाउ-गूजर वंश के आसलदेव के पुत्र महाराजाधिराज गोगादेव के समय का और सुलतान पीरोजसाहि (फ़ीरोजशाह) के राजकाल का माचाडी (अलवर के निकट) में शिलालेख।

(२९२)

वि० सं० १४४२–ए० रि० वा० प्रे० पृष्ठ १८९। राष्ट्रोड (राष्ट्रकूट) वंश के नायक भर्म के समय का वीरानल में शिलालेख।

(२९३)

वि० सं० १४४३–आ० स० इ० भाग ३ पृष्ठ ६८। महा-सार के राजा नाथदेव के राजकाल का मसार (महासार) की जैन-मूर्ति पर शिलालेख।

(२९४)

वि० सं० १४४५–आ० स० इ० भाग १७ पृष्ठ ४१। बीरमदेव के सतीस्तूप का शिलालेख।

(२९५)

वि० सं० १४४५–ए० रि० वा० प्रे० पृष्ठ १७८। चूडा-समा के कुछ नागरों का वन्थली (जूनागढ़) में शिलालेख।

इस शिलालेख में शङ्गार (खङ्गार), जयसिंह, महिपति, मोकल-सिंह आदि का वर्णन है।

(२९६)

वि० सं० १४४५–ए० रि० वा० प्रे० पृष्ठ १८२। पतृंश-वंश के कुछ नायकों का चोरवाड (जूनागढ़) में शिलालेख।

इस शिलालेख में लूणिग, उसके पुत्र भीमसिंह, उसके पुत्र लावण्यपाल, उसके पुत्र लक्ष्मसिंह, लक्ष और लक्षणपाल, लक्ष्मसिंह के पुत्र राजसिंहआदि का वर्णन है।

(२९७)

वि० सं० १४५२—ए० रि० पृष्ठ १७९। योगिनी पुर (दिल्ली) के नसरथ (नसरत शाह) और गुजरात के दफर खां (जफ़र खां) के समय का मड्ग्रोल में शिलालेख।

(२९८)

वि० सं० १४५५—मिथिला के देवसिंह के पुत्र महाराजाधिराज शिवसिंहदेव का विहार (दरभङ्गा) (सन्दिग्ध!) में दानपत्र जो पण्डितविद्यापतिको दिया गया था।

(२९९)

वि० सं० १४५८—इ० ए० भाग २२ पृष्ठ ८२। रायपुर के महाराजाधिराज ब्रह्मदेव तथा उसके मंत्री नायक हाजिराजदेव के समय का रायपुर (अब नागपुर म्यूजियम) में शिलालेख।

लक्षमिदेव (लक्ष्मीदेव), उसका पुत्र सिंघ (सिंह), उसका पुत्र रामचन्द्र, उसका पुत्र हरिरायब्रह्मन (ब्रह्मदेव अथवा रायब्रह्मदेव)

(३००)

वि० सं० १४६६—आ० स० इ० भाग २१ पृष्ठ १८। महिपति परमर्दिन का रासिन में शिलालेख।

(३०१)

वि० सं० १४६७—ज० ब० ए० सो० भाग ३१ पृष्ठ ४२२। महाराजाधिराज वीरङ्ग (अथवा (वीरम?) देव का ग्वालियर में शिलालेख।

(३०२)

वि० सं० १४७०–(१४७१ के स्थान पर)–ए० इ० भाग २ पृष्ठ २३० खल्लाटिका के कल्चुति (कल्चुरी) हरिब्रह्मदेव (ब्रह्मदेव) के समय का खलारी में शिलालेख जिसे मिश्रदामोदर ने सङ्कलित किया था।

अहिहय (हैहय) वंश के कल्चुति (कल्चुरी) शाखा में सिंहण, उस का पुत्र रामदेव (जिस ने भोणिङ्गदेव को लड़ाई में मार डाला), उस का पुत्र हरिब्रह्मदेव।

(३०३)

वि० सं० १४७३–ए० रि० बा० प्रे० पृष्ठ १७६। चूडासमा के नायक जयसिंह द्वितीय के समय का जूनागढ़ (गिरनार) में शिलालेख जिसे पाँधल के पौत्र तथा मर्त्तसिंह के पुत्र शामल ने सङ्कलित किया।

यदुवंश में मण्डलीक प्रथम, उसका पुत्र महिपाल, उस का पुत्र खङ्गार, उस का पुत्र जयसिंह प्रथम, उसका पुत्र मुक्तसिंह, उस का पुत्र मण्डलीक द्वितीय, उस का छोटा भाई मेलिग, उस का पुत्र जयसिंह द्वितीय।

(३०४)

वि० सं० १४८१–ज० ब० ए० सो० भाग ५२ पृष्ठ ७०। साहि आलम्भक मालवा का हूशङ्ग गोरी उर्फ़ अल्प खां (जिस ने माण्डू [मण्डपपुर] को बसाया) के समय का देवगढ (अब कलकत्ता म्यूजियम) का जैन शिलालेख।

(३०५)

वि० सं० १४८५–ए० इ० भाग २ पृष्ठ ४१० तथा भा० इ० पृष्ठ ९६। मादपाट (मेवाड) के गुहिल मोकल का चित्तौरगढ में शिलालेख जिसे भट्टविष्णु के पुत्र एकनाथ ने सङ्कलित किया।

गुहिलवंश में अरिसिंह, उस का पुत्र हम्मीर, उस का पुत्र क्षेत्र,

उस का पुत्र लक्षसिंह, उसका पुत्र मोकल (जिसने यवनों के राजा पीरोज अर्थात सुलतान फीरोजशाह को पराजित किया) ।

(३०६)

वि० सं० १४९३—डाक्टर बर्गेस की एक प्रतिलिपि से देवगढ का जैन शिलालेख ।

(३०७)

वि० सं० १४९४—भा० इ० पृष्ठ ११२। मेदपाट (मेवाड़) के मोकल के पुत्र गुहिल कुम्भकर्ण के राजकाल का नागड़ में जैन शिलालेख ।

(३०८)

वि० सं० १४९६—ज० ब० ए० सो० भाग १६ पृष्ठ १२२४। भैरवेन्द्र का ऊमंगा (विहार) में शिलालेख ।

ऊमंगा नगर में चन्द्रवंशी भूमिपाल था, उस का पुत्र कुमारपाल, उस का पुत्र लक्ष्मणपाल उस का पुत्र चन्द्रपाल उस का पुत्र नयनपाल उस का पुत्र सवढपाल, उस का पुत्र अभयदेव, उस का पुत्र भल्लदेव, उस का पुत्र केशिराज, उस का पुत्र वरसिंहदेव, उस का पुत्र भानुदेव, उस का पुत्र सोमेश्वर, उस का पुत्र भैरवेन्द्र ।

(३०९)

वि० सं० १४९६—भा० इ० पृष्ठ ११४ तथा प्रा० लें० मा० भाग २ पृष्ठ २८। मेदपाट (मेवाड़) के गुहिल राणाकुम्भकर्ण के राजकाल का सादडी में जैन शिलालेख ।

इस शिलालेख में निम्नलिखित गुहिल राजाओं की नामावली है:—

बप्प, गुहिल, भोज, शील, कालभोज, भर्तृभट, सिंह, महायक, खुम्माण, अल्लट, नरवाहन, शक्तिकुमार, सुचित्रवर्मन, कीर्तिवर्मन, योगराज, वंशपाल, वैरिसिंह, वीरसिंह, अरिसिंह, चोडसिंह, विक्रमसिंह, रणसिंह, खेमसिंह

सामन्तसिंह, कुमारसिंह, मथनसिंह, पद्मसिंह जैत्रसिंह, तेजस्विसिंह, समरसिंह, भुवनसिंह, (जिसने चाहुमान राजा कीतुक और सुल्तान, अल्लावदान को पराजित किया), उस का पुत्र जयसिंह, लक्ष्मसिंह (जिस ने मालव राजा गोगादेव को पराजित किया) उस का पुत्र अजयसिंह, उस का भाई अरिसिंह, हम्मीर, खेतासिंह, लक्ष, उस का पुत्र मोकल, कुम्भकर्ण।

(३१०)

वि० सं० १४९७—ज० ब० ए० सो० भाग ३१ पृष्ठ ४२२। महाराजाधिराज डुङ्गरेन्द्रदेव के राजकाल का ग्वालियर में शिलालेख।

(३११)

वि० सं० १५००—भा० इ० पृष्ठ ११२ तथा प्रा० ले० मा० भाग २ पृष्ठ २६ महुआ का शिलालेख जिस में गुहिल सारङ्ग की पृथ्वी पर श्रेष्ठिन् मोकाल के तालाब बनाने का वर्णन है।

(३१२)

वि० सं० १५०३—सर ए० कार्नघम की प्रतिलिपि से। उदयपुर (ग्वालियर) का शिलालेख।

(३१३)

वि० सं० १५१०—ज० ब० ए० सो० भाग ३१ पृष्ठ ४२३ तथा डाक्टर बर्गेस की एक प्रतिलिपि। महाराजाधिराज डुङ्गरेन्द्रदेव के राजकाल का ग्वालियर में शिलालेख।

(३१४)

वि० स० १५१५—आ० स० इ० भग २३। चितौरगढ़ में गुहिल कुम्भकर्ण के कीर्तिस्तम्भ के ऊपरी भाग का शिलालेख।

(३१५)

वि० सं० १५१६—आ० स० इ० भाग ३ पृष्ठ १३१। गया मे गयासुरी देवी के मन्दिर का शिलालेख। सर ए० कनिङ्घम के लिये

जो वृतान्त लिखा गया था उस के अनुसार इस लेख में निम्नलिखित नाम हैं—

सिन्धुराज, दामी (प्रथम); सन्देवर; दामी (द्वितीय); महीपाल; देवीदास; सूर्यदास; उस का पुत्र शक्तिसिंह, उस का पुत्र मदन।

(३१६)

वि० सं० १५४५—भा० इ० पृष्ठ ११७। मेदपाट (मेवाड़) के कुम्भकर्ण के पुत्र गुहिल राजमल्ल के समय का उदयपुर (राजपुताना) में शिलालेख जिसे केशव-ज्योतिष के पौत्र तथा अत्र के पुत्र महेश्वर ने सङ्कलित किया था।

इस शिलालेख में गुहिल राजा अरिसिंह, हमीर, क्षेत्रसिंह, लक्षसिंह, मोकल, कुम्भकर्ण तथा राजमल्ल की विशेषतः प्रशंसा है।

(३१७)

वि० सं० १५५३—ए० रि० बा० प्रे० पृष्ठ २६६। बोरसद में एक कुएं की सीढ़ी पर का शिलालेख।

(३१८)

वि० सं० १५५५—ए० रि० बा० प्रे० पृष्ठ २६४। पातसाह महमूद (सुलतान महमूद बैकर) के राजकाल का दण्डाहिदेश के बाघेल वीरसिंह की पत्नी राणी रुणादेवी का अडालिज के कुएं का शिलालेख।

बाघेल मोकलसिंह, उस का पुत्र कर्ण, उस का पुत्र मूलराज, उस का पुत्र महीप, उस का पुत्र वीरसिंह जिस ने रुडादेवी से विवाह किया, उन के पुत्र वरसिंह और जेत्र (? जैत्र)

(३१९)

वि० सं० १५५६—इ० ए० भाग ४ पृष्ठ ३६८ तथा ए० रि० बा० प्रे० पृष्ठ २९४ और ए० इ० भाग ४ पृष्ठ २९८। पातुसाह महमूद (सुलतान महमूद बैकर) के राजकाल का बाई-हरीर का अहमदाबाद के कुएं का शिलालेख।

(३२०)

वि० सं० १५५६ तथा १५६१—ज० ब० ए० सो० भाग ५६ पृष्ठ ७९। मेदपाट (मेवाड) के गुहिल **राजमल्ल** (कुम्भकर्ण का पुत्र) तथा उसकी पत्नी **शृंगारदेवी** [जो कि मरुस्थलि (मारवाड़) के रणमल्ल के पुत्र राजकुमार योध की पुत्री थी] कानगरी (चित्तौर के निकट) में शिला लेख जिसे जोटिङ्गकेशव के पौत्र तथा अतृ के पुत्र महेश ने सङ्कलित किया था।

(३२१)

वि० स० १५५७(?)—गुहिल रायमल्ल (राजमल्ल) के राज-काल का नारली में शिलालेख।

(३२२)

वि० सं० १५८१—आ० स० इ० भाग ९ पृष्ठ १४४। सुलतान **इब्राहीम लोदी** के राजकाल का दिल्ली सिवालिक स्तूप पर शिलालेख।

(३२३)

वि० सं० १५८७—ए० इ० भाग २ पृष्ठ ४२ तथा भा० इ० पृष्ठ १३४। पुण्डरीक के मन्दिर के सप्तम जीर्णोद्धार का शिला-लेख जिस में गुजरात के सुलतान महिमूद (महमूद बैकर), मदाफर साह (मुजफ्फ़र द्वितीय) और बाहदर साह (बहादुर) तथा चित्रकूट के गुहिल राजा कुम्भराज, उस के पुत्र राजमल्ल, उस के पुत्र सग्रामसिंह और उस के पुत्र रत्नसिंह का वर्णन है। इसे लावण्यसमय ने संकलित किया था।

(३२४)

वि० सं० १५९५—प्रो० ब० ए० सो० १८७१ पृष्ठ ११। सम्राट हुमाऊं (हुमायूं) के राजकाल का तिल्ब्रेगामपुर में शिला-लेख।

(३२५)

वि० सं० १५९७ (१५५७ के स्थान पर !)–भा० इ० पृष्ठ १४० । मेदपाट के कुम्भकर्ण के पुत्र गुहिल राणा रायमल्ल (राजमल्ल) तथा उस के पुत्र महाकुमार पृथ्वीराज के समय का नारले में शिलालेख ।

(३२६)

वि० सं० १६४६–प्रो० ब० ए० सो० १८७९ पृष्ठ ८३ । सम्राट् अकबर तथा उस के मंत्री टोडरमल के समय का बनारस में शिलालेख ।

(३२७)

वि० सं० १६५०ए० इ० भाग २ पृष्ठ ५० । शत्रुञ्जय आदीश्वर के मन्दिर का शिलालेख जिस में तपागच्छ के कुछ जनों की प्रशंसा तथा सम्राट अकब्बर (अकबर) का वर्णन है । इसे हेमविजय ने सङ्कलित किया था ।

(३२८)

वि० सं० १६५१ तथा १६५२–ए० इ० भाग १ पृष्ठ ३२३ अण हिलवाड में वाडीपुर–पार्श्वनाथ के मन्दिर का शिलालेख जिस में वृहत–खरतर गच्छ की पट्टावली है । इस का समय सम्राट अकब्बर (अकबर) के राजकाल का है ।

(३२९)

वि० सं० १६५२–इ० ए० भाग २ पृष्ठ ५९ । सम्राट अकबर के राजकाल का शत्रुञ्जय का जैन शिलालेख ।

(३३०)

वि० सं० १६५४–प्रो० ब० ए० सो० १८७६ पृष्ठ ११० । महाराजाधिराज मानसिंह के समय का रोहतास में शिलालेख ।

(३३१)

वि० सं० १६५४—मा० ३० पृष्ठ १४४। मेवाड के महाराणा अमरसिंहजी के राजकाल का सादडी में शिलालेख।

(३३२)

वि० सं० १६७५—ए० इ० भाग २ पृष्ठ ६०। सम्राट जहांगीर के राजकाल का शत्रुञ्जय का जैन शिलालेख।

(३३३)

वि० सं० १६७५ और १६७६—ए० इ० भाग २ पृष्ठ ६४। हाल्लार (हलार प्रान्त) में नवीनपुर (नवा नगर) के याम शत्रुशल्य के पुत्र जसवन्त के समय का शत्रुञ्जय में जैन शिलालेख।

(३३४)

वि० सं० १६८०—प्रो० व० ए० सो० १८७१ पृष्ठ ८२। चन्द्रवंश के राजकुमार वासुदेव के समय का बनारस में शिलालेख।

(३३५)

वि० सं० १६८३—ए० इ० भाग २ पृष्ठ ६८। सम्राट जिहांगीर (जहांगीर) के राजकाल का शत्रुञ्जय का जैन शिलालेख जिसे देवसागर ने सङ्कलित किया।

(३३६)

वि० सं० १६८६—ए० इ० भाग २ पृष्ठ ७२। सम्राट शाहाज्याहां (शाहजहां) के राजकाल का शत्रुञ्जय का जैन शिलालेख।

(३३७)

वि० सं० १६८८—ज० व० ए० सो० भाग ८ पृष्ठ ६९५। रोहतास दुर्ग के कोथौटिय फाटक के ऊपर की पटिया पर तोमर मित्रसेन का शिलालेख जिसे कृष्णदेव के पुत्र शिवदेव ने संकलित किया था।

तोमर वंश में गोपाचल (ग्वालियर) में वीरसिंह, उस का पुत्र उद्धरण, उस का पुत्र वीरम, उस का पुत्र गणपति, उस का पुत्र डूंगरसिंह (डूंग-

रासिंह ?), उस का पुत्र कीर्तिसिंह, उस का पुत्र कल्याणसाहि, उस का पुत्र मानसाहि, उस का पुत्र विक्रमसाहि, उस का पुत्र रामसाहि, उस का पुत्र शालिवाहन, उस के पुत्र श्यामसाहि और मित्रसेन (जो शाहिजल्लाउद्दीन के समकालीन थे)

(३३८)

वि० सं० १६८९–९० इ० भाग १ पृष्ठ ३०१ । वि० सं० १२०८ के वडनगर शिलालेख (संख्या १३६) के पुनः नवीन करके देने का समय।

(३३९)

वि० सं० १७१७–आ० स० इ० भाग २१ पृष्ठ १११ । चम्बा का शिलालेख।

(३४०)

वि० सं० १७१८, १७२२ तथा १७३२–भा० इ० पृष्ठ १४९ और १९० । राजनगर कांकरोली के शिलालेख जिस में रणछोड के " राजप्रशस्तिमहाकाव्य " के द्वितीय और तृतीय सर्ग हैं।

(३४१)

वि० सं० १७२४–ज० अ० ओ० सो० भाग ७ पृष्ठ ४ । गढ़ादेश के राज हृदयेश तथा उनकी रानी सुन्दरीदेवी का रामनगर में शिलालेख जिसे मण्डन के पुत्र जय गोविन्द ने संकलित किया था।

इस शिलालेख में निम्नलिखित राजाओं का वर्णन है:–यादवराय (गढ़ादेश का एक सम्राट), माधवसिंह, जगन्नाथ, रघुनाथ, रुद्रदेव, विहारीसिंह, नरसिंहदेव, सूर्यभानु, वासुदेव, गोपाल साहि, भूपाल साहि, गोपीनाथ, रामचन्द्र, सुरतानसिंह, हरिहरदेव, कृष्णदेव, जगत सिंह, महासिंह; दुर्जनमल्ल, यशहकर्ण, प्रतापादित्य, यशश्चन्द्र, मनोहरसिंह, गोविन्दसिंह, रामचन्द्र, कर्ण, रत्नसेन, कमलनयन, नरहरिदेव, वीरसिंह, त्रिभुवनराय, पृथ्वीराज, भारतीचन्द्र, मदनसिंह, उग्रसेन, रामसाहि, तारा-

चन्द्र, उदयसिंह, भानुमित्र, भवानीदास, शिवसिंह, हरिनारायण, सबलसिंह, राजसिंह, दादीराय, गोरक्षदास, अर्जुनसिंह, सग्रामसाहि, दलपति जिस ने दुर्गावती से विवाह किया, उन का पुत्र वीरनारायण, दलपति का लघुभ्राता चन्द्रसाहि, उस का पुत्र मधुकरसाहि, प्रेमनारायण (प्रेमसाहि), हृदयेश जिस ने सुन्दरीदेवी से विवाह किया, उन की पुत्री (?) मृगावती ।

(३४२)

वि० सं० १७७०— भा० इ० पृष्ठ १९१ । मेवाड के राणा सङ्ग्रामसिंह के समय का उदयपुर (राजपूताना) में शिलालेख ।

(३४३)

वि० सं० १८६१—प्रो० व० ए० सो० १८९९ पृष्ठ २०४ सम्भलपुर के नायक जयन्तसिंह की पत्नी रत्नकुमारिका का नागपुर में दानपत्र ।

(३४४)

वि० सं० १८७४, १८७५ तथा १८७७— इ० ए० भाग ९ पृष्ठ १९२ । महाराजाधिराज रणबाहादुरशाह की विधवा ललित त्रिपुरसुन्दरीदेवी का उन के पौत्र महाराजाधिराज राजेन्द्रविक्रमशाह के समय का नैपाल में शिलालेख ।

पृथ्वीनारायणशाह, उस का पुत्र सिंहप्रतापशाह, उस का पुत्र रण बाहादुर शाह, उस का पुत्र गीरवाणयुद्धविक्रमशाह, उस का पुत्र राजेन्द्र विक्रमशाह ।

(३४५)

वि० सं० १८७६— आ० स० इ० भाग ३ पृष्ठ २७० । मसार (महासार) का जैन शिलालेख ।

(३४६)

वि० सं० १८८१— ए० इ० भाग २ पृष्ठ २४४ । पभोसा का जैन शिलालेख ।

(३४७)

वि० सं० १९१९ तथा १९१७— आ० स० इ० भाग २१ पृष्ठ १३६। महाराजाधिराज श्रीसिंहदेव (*i*) का चम्बा का दान पत्र।

विक्रम संवत् के विना समय के शिलालेख।

(३४८)

गुप्त इ० पृष्ठ १४६। राजा यशोधर्मन (जिस के आधीन राजा मिहिरकुल था) का मन्दसोरस्तूप पर शिलालेख जिसे कक्क के पुत्र वासुल ने सङ्कलित किया तथा गोविन्द ने खोदा था।

(३४९)

ज० रो० ए० सो० १८९४ पृष्ठ ४। प्रतिहार वाउक का जोधपुर में शिलालेख।

ब्राह्मण हरिचन्द्र के उस की क्षत्राणी पत्नी से चार पुत्र थे, भोगभट, कक्कुक, रजिल्ल और दद्द, रजिल्ल का पुत्र नरभट पेल्लापेल्ली, उस का पुत्र नागभट जिस ने जज्जिकादेवी से विवाह किया, उस के पुत्र तात और भोज, तात का पुत्र यशोवर्धन, उस का पुत्र चन्दुक, उस का पुत्र शिलुक या शीलुक (जिस ने भट्टिकदेवराम को पराजित किया), उस का पुत्र झोट, उस का पुत्र भिल्लादित्य, उस का पुत्र कक्क जिस ने पद्मिनी से विवाह किया, उन का पुत्र वाउक (जिस ने उस मयूर को मारा जिस ने नन्दावल्ल को पराजित किया था।

(३५०)

ए० इ० भाग १ पृष्ठ २४४। कन्नौज के महेन्द्रपालदेव के राजकाल का पेहेवा (पहोआ, अब लाहोर म्यूजियम) में शिलालेख जिस में तोमरवंश के कुछ जनों के विष्णु के मन्दिर वनवाने का वर्णन है। इसी वंश में राजा जाउल थे, उन के एक सन्तान, वजूट ने मङ्गलदेवी से विवाह किया, उन का पुत्र जज्जुक जिस ने चन्द्र और नायिका

से विवाह किया, उन के पुत्र गोग्ग, पूर्णराज, तथा देवराज। (इसे भट्टराम के पुत्र मु .... (?) ने सङ्कलित किया।

(३९१)

ए० इ० भाग १ पृष्ठ १२२ तथा आ० स० इ० भाग २१। चन्देल्ल का खजुराहो में खण्डित शिलालेख जिस में जेज्जाक विज्जाक और हर्षदेव तथा (कन्नौज के) क्षितिपालदेव का वर्णन है।

(३९२)

ए० इ० भाग १८ पृष्ठ २३७ तथा आ० स० इ० भाग १०। महाराजाधिराज यशोवर्मन के पौत्र तथा कृष्णाप और उसकी स्त्री आसर्व के पुत्र चंद्रेल्लदेवलब्धि के दुदहि में शिलालेख।

(३९३)

ए० इ० भाग १ पृष्ठ २२१ तथा आ० स० इ० भाग २१ चन्द्रेल्ल का महोबा (अब लखनऊ म्यूजियम) में खण्डित शिलालेख जिस में जेजा और उस के लघुभ्राता वीजा, धङ्ग, उस के पुत्र गण्ड, उस के पुत्र विद्याधर (जो [धारा] के भोजदेव का समकालीन [?] था), विजयपाल (जो चेदी गांगेयदेव का समकालीन था), और उस के पुत्र कीर्तिवर्मन (जिस ने लक्ष्मीकर्ण अर्थात् चेदीकर्ण को विजय किया) का वर्णन है।

(३९४)

ए० इ० भाग १ पृष्ठ १९७। चन्देल्ल मदनवर्मदेव का मऊ (अब कलकत्ता म्यूजियम) में खण्डित शिलालेख जिस में धङ्ग, उस के पुत्र गण्ड, उस के पुत्र विद्याधर, उस के पुत्र विजयपाल, उस के पुत्र कीर्तिवर्मन, उस के पुत्र सल्लक्षणवर्मन, उसके पुत्र जयवर्मन, सल्लक्षणवर्मन के लघुभ्राता पृथ्वीवर्मन, और पृथ्वीवर्मन के पुत्र मदनवर्मन का वर्णन है।

(३९५)

ज० ब० ए० सो० भाग १७ पृष्ठ ३१७ तथा आ० स० इ०

भाग २१ पृष्ठ ३९ । चन्देल्ल का कालञ्जर में खण्डित शिलालेख जिस में विजयपाल, चेदीकर्ण, जयवर्मन, मदनवर्मन उस के लघुभ्राता प्रतापवर्मन और **वीरवर्मन** का वर्णन है ।

(३९६)

ए० इ० भाग १ पृष्ठ ३३३ तथा आ० स० इ० भाग २१ । चन्देल्ल भोजवर्मन के समय का अजयगढ़ की चट्टान का शिलालेख जिस में वास्तव्य कायस्थजाति के कुछ जनों का वर्णन तथा चन्देल्ल गण्ड, कीर्तिवर्मन, परमर्दिन, त्रैलोक्यवर्मन और भोजवर्मन का उल्लेख है ।

(३९७)

प्रो० वे० ज० पृष्ठ ८२ । अर (राजपुताना में उदयपुर के निकट) का खण्डित शिलालेख जिस में [गुहिल] राजा **शक्तिकुमार** का नाम है ।

(३९८)

भा० इ० पृष्ठ ७२ । उदयपुर (राजपुनाना) का खण्डित शिलालेख जिस में (गुहिल) राजा **शक्तिकुमार** और **शुचिवर्मन** का नाम है ।

(३९९)

ए० इ० भाग १ पृष्ठ २३३ । मालवा के **परमार** अनुशासकों का उदयपुर (ग्वालियर) में खण्डित शिलालेख जिस में परमार की वंशावली यों दी है, उपेन्द्रराज, उस का पुत्र वैरिसिंह प्रथम, उस का पुत्र सीयक, उस का पुत्र वाक्पति प्रथम, उस का पुत्र वैरिसिंह द्वितीय, वज्रट, उस का पुत्र हर्ष (जिस ने) [राष्टकूट] राजा खोट्टिग को पराजित किया), उसका पुत्र वाक्पति द्वितीय (जिस ने त्रिपुरी के युवराज द्वितीय को जीता), उस का लघुभ्राता सिन्धुराज, उस का पुत्रभोजराज (जो इन्द्ररथ तोग्गल [?] और [चालुक्य] भीम [प्रथम] से लड़ा था), और उदयादित्य ।

(३६०)

ए० ई० भाग १ पृष्ठ ३६० तथा ३०३० नम्बर ६२ । परमार महाराजाधिराज जयवर्मदेव का उज्जैन (अब रायल एशियाटिक सोसायटी) में प्रथम दानपत्र जो वर्धमानपुर में दिया गया था ।

उदयादित्य, नरवर्मन, यशोवर्मन, जयवर्मन ।

(३६१)

ए० इ० भाग १ पृष्ठ २१६ । सल्लक्षणसिंह का झामी (अब लखनऊ म्यूजियम) में खण्डित शिलालेख जिसमें कन्यानुज, नायक सीगुक और मामक (?), लखट और राजपाल, राजदेवा, [चन्देल] कीर्तिवर्मन, गणपाल (?) अवन्ति के [परमार] उदयादित्य, नृसिंह, हीर वा हीरागु (?) और सल्लक्षणसिंह का वर्णन है ।

(३६२)

भा० इ० पृष्ठ २०६ । चौलुक्य महाराजाधिराज कुमारपालदेव के राजकाल का रत्नपुर (मारवाड) में खण्डित शिलालेख जिसम पूनपाक्षदेव अथवा उसकी रानी महाराज्ञी गिरिजादेवी की एक आज्ञा तथा महाराज रायपालदेव का वर्णन है ।

(३६३)

भा० इ० पृष्ठ २१४ । चौलुक्य (बाघेला) विश्वलदेव का कोग्रे में अधूरा शिलालेख । अर्णोराज ने सल्क्षण देवी से विवाह किया उनका पुत्र लवणप्रसाद जिसने मदन देवी से विवाह किया, उनका पुत्र वीर धवल जिसने वयजल्ल देवी से विवाह किया, उनका पुत्र विश्वल्देव ।

(३६४)

आ० स० वे० इ० भाग २ पृष्ठ १६९ तथा ए० रि० वॉ० प्रे० पृष्ठ ३०२ । चूडासमा नायकों का गिरनार मे खण्डित शिलालेख । यादववंश में मण्डलीक (प्रथम), उसका पुत्र नवघन, उसका

पुत्र महिपाल (प्रथम) पङ्गार (खङ्गार), जयसिंह, मोकलसिंह, मेलग, महिपाल (द्वितीय), और उसका पुत्र मण्डलीक (द्वितीय) ।

---

(२) शक संवत के शिलालेख ।

(३६५)

श० सं० ४००—इ० ए० भाग १० पृष्ठ २८३ । भटार्क (भटार्क) के पुत्र गुहसेन के पुत्र महाराजाधिराज **धरसेनदेव** का बम्बई एशियाटिक सोसायटी में (सन्दिग्ध) दानपात्र जो बलभी में दिया गया था ।

(३६६)

श० सं० ४००—इ० ए० भाग ७ पृष्ठ ६३ । दद (दद्द) प्रथम के पुत्र जयभट्ट (जयभट) वीतराग के पुत्र गुजर महाराजाधिराज **दद्द द्वितीय प्रशान्तराग** का उमेता (सन्दिग्ध) में दानपत्र जो भरुकच्छ (के फाटक के सामने के तंबू) में दिया गया था ।

(३६७)

श० सं० ४१५—इ० ए० भाग १७ पृष्ठ १९९ । दद (दद्द) प्रथम के पुत्र जयभट्ट (जयभट) वीतराग के पुत्र गुरजर महाराजाधिराज **दद्द द्वितीय प्रशान्तराग** का बगुम्रा में (सन्दिग्ध) दानपत्र जो भरुकच्छ (के फाटक के सामने के तम्बू) में दिया गया था ।

(३६८)

श० सं० ४१७—इ० ए० भाग १३ पृष्ठ ११६ । दद (दद्द) प्रथम के पुत्र, जयभटवीतराग के पुत्र गुरजर महाराजाधिराज **दद्द द्वितीय प्रशान्तराग** का इलाओ (सन्दिग्ध) में दानपत्र जो भरुकच्छ (के फाटक के सामने के तम्बू) में दिया गया था ।

(३६९)

श० सं० ६३१—इ० ए० भाग १८ पृष्ठ २३४ । राष्ट्रकूट **नन्दराज युद्धासुर** का मुलताई (मध्यप्रदेश) में दानपत्र ।

राष्ट्रकूट वंश में दुर्गराज, उसका पुत्र गोविन्दराज, उसका पुत्र (?) स्वामिकराज, उसका पुत्र नन्दराज युद्धासुर ।

(३७०)

श० सं० ७२६ (?)—ए० इ० भाग १ पृष्ठ ११२ । कीरग्राम के राजानक लक्ष्मण चन्द्र के समय का तथा तृगर्त (जालन्धर) के राजा जयच्चन्द्र के राजकाल का वैजनाथ में शिलालेख (दूसरी प्रशस्ति) जिसे भृङ्गक के पुत्र राम ने सङ्कलित किया ।

इस शिलालेख में कीरग्राम के निम्नलिखित राजान का वर्णन है—कन्द, उसका पुत्र बुद्ध, उसका (?) पुत्र बिग्रह, उसका पुत्र ब्रह्मन, उसका पुत्र डोम्मक, उसका पुत्र भुवन, उसका पुत्र कल्हण, उसका पुत्र बिल्हण जिसने तृगर्त के राजा हृदयचन्द्र की कन्या लक्षणिका से विवाह किया । उनके पुत्र राम और लक्ष्मण (लक्ष्मणचन्द्र जिसने मयतल्ला से विवाह किया)

(३७१)

श० सं० ७८४—कन्नौज के महाराजाधिराज **भोजदेव** तथा उसके अधीनस्थ लुअच्छगिर (देवगढ़) के अनुशासक महासामन्त विष्णुम के राजकाल का देवगढ़ जैन स्तूप पर शिलालेख ।

(३७२)

श० सं० ८३६—इ० ए० भाग १२ पृष्ठ १९३ । राजाधिराज **महीपाल देव** के अधीनस्थ चाप महासामन्ताधिपति **धरणीवराह** का हड्डाला में दानपत्र जो वर्धमान में दिया गया था ।

चापवंश में विक्रमार्क, उसका पुत्र अड्डक, उसका पुत्र पुलकेसि, उसका पुत्र ध्रुवभट, उसका छोटाभाई धरणीवराह ।

(३७३)

श० सं० ९४०—बी० जी० भाग ७ पृष्ठ ८८। निम्बार्क के पुत्र वारप्प का पौत्र तथा गोग्गिराज के पुत्र, लाटदेश के चालुक्य महामण्डलेश्वर **कीर्तिराज** के राजकाल का सूरत में दानपत्र जिस में कुन्दराज के पौत्र तथा अमृतराज के पुत्र राष्ट्रकूट नायक सम्बुराज के दान का उल्लेख है।

(३७४)

श० सं० ९६०—ए० इ० भाग ४ पृष्ठ १९०। तृकलिङ्गाधिपति गङ्ग महाराजाधिराज **वज्रहस्तदेव** के राज्याभिषेक का समय जैसा कि नडगाम के श० सं० ९७९ के दानपत्र में दिया है।

(३७५)

श० सं० ९७२—इ० ए० भाग १२ पृष्ठ २०१। लाटदेश के चौलुक्य **त्रिलोचनपाल** का सूरत में दानपत्र।

चौलुक्यवंश में (जोकि पौराणिक चौलुक्य तथा कन्याकुब्ज की एक राष्ट्रकूट राजकुमारी से चला वारप्पराज, उसका पुत्र गोग्गिराज, उसका पुत्र कीर्तिराज, उसका पुत्र वत्सराज, उसका पुत्र त्रिलोचनपति (त्रिलोचनपाल)।

(३७६)

श० सं० ९७९—इ० ए० भाग ४ पृष्ठ १८९। त्रिकालिङ्गाधिपति गङ्ग महाराजाधिराज **वज्रहस्तदेव** का नडगाम (जिला गञ्जम) में दानपत्र जो कलिङ्गनगर में दिया गया था।

त्रिकलिङ्गवंश में (१) महाराज गुणमहार्णव (२) उसका पुत्र वज्रहस्त (जिसने ४४ वर्ष राज्य किया), (३) उसका पुत्र गुण्डम (३ वर्ष), (४) उसका छोटाभाई कामार्णव (३५ वर्ष, (५) उसका छोटा भाई विनयादित्य (३ वर्ष), (६) कामार्णव का पुत्र वज्रहस्त

अनियंकभीम (३९ वर्ष), (७) उसका सब से बड़ा पुत्र कामार्णव (½ वर्ष), उसका छोटा भाई गुण्डम (३ वर्ष), (९) उसका, (दूसरी माता से भाई) मधु-कामार्णव (१९ वर्ष), (१०) वज्रहस्त—कामार्णव (७) का वैदुम्ब वश की विनयमहादेवी से पुत्र।

(३७७)

शा० सं० ९९९—इ० ए० भाग १८ पृष्ठ १६३। त्रिकलिङ्गाधिपति गंग महाराजाधिराज अनन्त वर्मन-चोडगंगदेव के राज्याभिषेक का समय जैसा कि उसके विजगापटम) के श० सं १००३ के दानपत्र में दिया है (संख्या ३७८)।

(३७८)

शा० सं० १,००३—इ० ए० भाग १८ पृष्ठ १६१। त्रिकलिंगाधिपति गग महाराजाधिराज अनन्त वर्मन-चोड़गंगदेव का विज़गपटम (अब मद्रास म्यूज़ियम) में दानपत्र जो कलिंग नगर में दिया गया था।

वंशावली, वज्रहस्त (१०) तक संख्या ३७६ में दी है; (११) उसका पुत्र राजराज प्रथम (८ वर्ष), (१२) उसका पुत्र, राजेन्द्रचोल की कन्या राजसुन्दरी से, अनन्त वर्मन-चोडगंग।

(३७९)

शा० सं० १०४०—इ० ए० भाग १८ पृष्ठ १६६। त्रिकलिंगाधिपति गंग राजाधिराज महाराज अनन्तवर्मन-चोड गंगदेव का विज़गपटम (अब मद्रास म्यूज़ियम) में दान पत्र जो सिन्दूरपोर में दिया गया था। अनन्त (विष्णु) से चन्द्र तदनन्तर गांगेय तक, उस से कोलाहल तक (जो गंगा वाड़ी कोलाहलपुर का संस्थापक था), और उसके पुत्र विरोचन तक की वंशावली दी है। इसके आगे कोलाहलपुर के ८१ राजाओं का वर्णन कर के इस प्रकार वंशावली दी है—वीरसिंह जिसके पांच पुत्र कामार्ण्य (प्रथम) दानार्ण्य, गुणार्ण्य (प्रथम)

चन्द्रवंश में पुरुषोत्तम; उस का पुत्र मधु सूदन; उस का पुत्र वासुदेव; उस का पुत्र दामोदर।

(३८६)

श० सं० १२१७—(१२१८ के स्थान पर)—ज० व० ए० सो० भाग ६५ पृष्ठ २३९। [कलिंग के] गंग राजा **नरसिंह-देव द्वितीय** के इक्कीसवें वर्ष का केन्दु पाटन (उरीसा में) में दान-पत्र जो रेमुणा में दिया गया था।

विष्णु से चन्द्र तदनन्तर गांगेय तक, उस से कोलाहलअनन्तवर्मन तक जिस ने कोलाहलपुर बसाया, और उसके पीछे अनेक राजाओं की वंशावली दी है। उन के पीछे कामार्णव और अन्य चार राजाओं ने कलिंग पर अधिकार जमाया। इस गंग वंश में कामार्णव के वंशधर ये हुए। (१) वज्रहस्त जिसने नङ्ग से विवाह किया (२) उसका पुत्र पहिला राजराज जिसने राजसुन्दरी से विवाह किया (३) उनका पुत्र चोड़गंग जिसने ७० वर्ष राज्य किया (४) उसका पुत्र स्तुरि-कामोदिनी से कामार्णव हुआ जिसका अभिषेक शक १०६४ में हुआ और जिसने १० वर्ष राज्य (५) सूर्य वंश की इन्दिरा से चोड़गंगा का पुत्र राघव हुआ जिसने १५ वर्ष राज्य किया (६) चन्द्रसेखा से चोड़गग का पुत्र दूसरा राजराज हुआ जिसने २५ वर्ष राज्य किया (७) उस का छोटा भाई अनियाङ्कभीम हुआ जिसने १० वर्ष राज्य किया (८) उस का पुत्र वाघल्ल देवी से तीसरा राज राग हुआ जिसने १७ वर्ष राज्य किया (९) उस का पुत्र चालुन्य वंश की मानं कुनदेवी से अनंग भीम हुआ जिसने ३४ वर्ष राज्य किया (१०) उसका पुत्र कस्तूरादेवी से पहिला नरसिंह हुआ जिसने ३३ वर्ष राज्य किया (११) उस का पुत्र मालन राजा का कन्या सीतादेवी से पहिला हुआ जिसने ऊचालुका वंश की जाकरल्लदेवी से विवाह किया और जो अपने राजकाल के १८ वे वर्ष में मरा (१२) उसका पुत्र दूसरा नरसिंह हुआ।

(३८७)

श० सं० १३०४—सुल्तान पीरोजसाहि (फ़ीरोज़ शाह) के राजकाल का बडगूजरवंश के आसल देव के पुत्र महाराजाधिराज गोगादेव के समय का माचाडी (अलवर के निकट) में शिलालेख।

(३८८)

श० सं० १३०५—ज० ब० ए० सो० भाग ६४ पृष्ठ १३६। [कलिंग के] गंग राजा नरसिंह देव चतुर्थ के अठवें वर्ष का पुरी (उडीसा) में दान पत्र जो वाराणासि-कटक (?) में दिया गया था।

(१२) नरसिंह [द्वितीय] तक की वंशावली संख्या ३६७ में (उसने ३४ वर्ष राज्य किया) (१३) उसका पुत्र, चोडदेवी से, भानुदेव [द्वितीय] (२४ वर्ष), (१४) उसका पुत्र. लक्ष्मी से, नरसिंह [तृतीय] (२४ वर्ष), (१५) उसका पुत्र, कमलदेवी से भानुदेव [तृतीय] (२६ वर्ष), (१६) उसका पुत्र, चालुक्य वंश की हीरादेवी से, नरसिंह [चतुर्थ]

(३८९)

श० सं० १३१६ (१३१७ के स्थान पर)—ज० ब० ए० सो० भाग ६४ पृष्ठ १५१। [कलिंग के] गंग राजा नरसिंह देव चतुर्थ के बाईसवें तथा तेईसवें वर्ष का पुरी (उड़ीसा में) का दानपत्र जो वाराणासि—कूटक (?) में दिया गया था।

(३९०)

श० सं० १३२१—[मिथिला के] देव सिंह के पुत्र महाराजाधिराज शिवसिंहदेव का बिहार (दरभंगा) में (संदिग्ध ?) दानपत्र जिसमें एक दान का वर्णन है जो कवि विद्यापति को दिया गया था।

(३९१)

श० सं० १३२२ (१३२३ के स्थान पर)—रायपुर के महाराजाधिराज ब्रह्मदेव तथा उस के मंत्री, नायक हाजिराज देव के समय का रायपुर में शिलालेख।

(३९२)

श०सं० १३३४ (१३३६ के स्थान पर)—खल वाटिका के कल्चुटि (कल्चुरि) हरिब्रह्मदेव (ब्रह्मदेव) के समय का खलारि में शिलालेख।

(३९३)

श० सं० १३४६—साहि आलम्भक के समय का देवगढ़ का जैन शिलालेख।

(३९४)

श० सं० १३५८—देवगढ़ का जैन शिलालेख।

(३९५)

श० सं० १३७७—इ० ए० भाग २० पृष्ठ ३९१। कटक (उड़ीसा) के कपिल-गजपति के समकालीन और सामंत (?) कोण्डवीडु के गाणदेव का किस्तन जिले में दानपत्र।

इस शिलालेख में कटक के सूर्यवंशी कपिलेन्द्रगजपति (कपिल-कुम्भिराज), जो कि उस समय राज्य करता था, की प्रशंसा है। उस के वंश में (?) चन्द्रदेव हुआ; उस का पुत्र गुहिदेव पात्र; उसका पुत्र कोराडवीडु का गाणदेव (उपनाम रौतराय या राहुत्तराय)।

(३९६)

श० सं० १४२०—'पातसाह' महमूद (सुलतान महमूद बेकर) के राजकाल का, दराडाहिदेश के वाघेल वीरसिंह की पत्नी, रानी रूड़ादेवी का अडालिज कुएं का शिलालेख।

(३९७)

श० सं० १४२१–'पातुसाह' महमूद (सुलतान महमूद वैकुर) के राजकाल का बाई हरीर का अहमदाबाद के कुए का शिलालेख।

(३९८)

श० सं० १४२६–मेदपाट (मेवाड) के गुहिल राजमल्ल और उसकी पत्नी शृङ्गारदेवी का नगरी (चित्तौर के निकट) में शिला-लेख।

(३९९)

श० सं० १४५३–पुराडरीक के मन्दिर के सातवें वार मरम्मत होने का शत्रुञ्जय में शिलालेख।

(४००)

श० सं० १४६०–सम्राट हुमाऊ (हुमायू) के राजकाल का तिल्वेगामपुर में शिलालेख।

(४०१)

श० सं० १५२०–[मेवाड़ के] महाराणा अमरसिंह जी के राजकाल का सादड़ी में शिलालेख।

(४०२)

श० सं० १५४१–नवीनपुर (नवानगर) के याम शत्रुशल्य के पुत्र जसवन्त के समय का शत्रुञ्जय में जैन शिलालेख।

(४०३)

श० सं० १५५१–सम्राट शाहाज्याहाम् (शाहजहा) के राज-काल का शत्रुञ्जय में जैन शिलालेख।

(४०४)

श० सं० १५८२–चम्बा के एक शिलालेख की नोटिस।

(४०५)

श० सं० १६३५—मेवाड़ के राणा संग्रामसिंह के समय का उदयपुर (राजपुताना) में शिलालेख।

---

(४) कलचुरी-चेदि संवत् के शिलालेख।

(४०६)

क० सं० १७४—गु० इ० पृष्ठ ११८। महाराज जयनाथ का कारीतलाई में दानपत्र जो उच्चकल्प में दिया गया था।

महाराज ओघदेव, कुमारदेवी से उसका पुत्र महाराज कुमारदेव, जयस्वामिनी से उसका पुत्र महाराज जयस्वामिन्, रामदेवी से उसका पुत्र महाराज व्याघ्र, अज्झित देवी से, उसका पुत्र महाराज जयनाथ।

(४०७)

क० सं० १७७—गु० इ० पृष्ठ १२२। महाराज जयनाथ का खोह में दानपत्र जो उच्चकल्प में दिया गया था।

(४०८)

क० सं० १९३—गु० इ० पृष्ठ १२६—महाराज शर्वनाथ का खोह में दानपत्र जो उच्चकल्प में दिया गया था।

जयनाथ तक वंशावली जैसी संख्या ४०६ में, उसका पुत्र मुरुण्ड देवी से महाराज शर्वनाथ।

(४०९)

क० सं० १९७—गु० इ० पृष्ठ १३३। महाराज शर्वनाथ का खोह में दूसरा दानपत्र।

(४१०)

क० सं० २०७—ज० व० ए० सो० भाग १६ पृष्ठ ३४७। त्रैकुटकवंश के महाराज दह्रसेन का पर्दि (सूरत जिले में) में दान पत्र जो आम्रका में दिया गया था।

(४११)

क० सं० २१४—गु० इ० पृष्ठ १३६ । महाराज शर्वनाथ का खोह में दान पत्र जो उच्चकल्प में दिया गया था ।

(४१२)

क० सं० २४५—के० टे० वे० इ० पृष्ठ ५८ । डाक्टर वर्ड का कहेरी ताम्रपत्र जिसमें कृष्णगिरि के महाविहार में एक चैत्य बनवाने का समय है । इस लेख का समय त्रैकुटक के राजकाल का है ।

(४१३)

क० सं० ३४६—ए० इ० भाग २ पृष्ठ २० । [गुरजर राजा का ?] साखेडा में दूसरा दानपत्र ।

(४१४)

क० सं० ३८०—ज० रो० ए० सो भाग १ पृष्ठ २७३ तथा इ० ए० भाग १३ पृष्ठ ८२ । गुरजर दद्द द्वितीय प्रशान्तराग का कैर में दानपत्र जो नान्दीपुरी में दिया गया था ।

गुरजर राज्यवंश में सामन्त दद्द (प्रथम), उसका पुत्र जयभट (प्रथम), वीतराग, उसका पुत्र दद्द (द्वितीय) प्रशान्तराग ।

(४१५)

क० सं० ३८५—ज० रो० ए० सो० भाग १ पृष्ठ २७३ तथा इ० ए० भाग १३ पृष्ठ ८८ । गुरजर दद्दद्वितीयप्रशान्तराग के समय का कैर में दानपत्र जो नान्दीपुरी में दिया गया था ।

(४१६)

क० सं० ३९१—ए० इ० भाग २ पृष्ठ २१ । दद्द के सम्बन्धी तथा वीतराग के पुत्र रणग्रह का [रणग्रह के भाई (?) गुरजर दद्द द्वितीय प्रशान्तराग के समय का] साखेडा में दूसरा दानपत्र ।

(४१७)

क० सं० ३९२—ए० इ० भाग ५ पृष्ठ ३९ । [जयभट प्रथम]

वीतराग के पुत्र गुर्जर दद्द द्वितीय प्रशान्तराग का साङ्खेडा में दान-पत्र जो नान्दीपुर में दिया गया था।

(४१८)

क० सं० ३९२–ए० इ० भाग ५ पृष्ठ ३९। [जयभट प्रथम] वीतराग के पुत्र गुर्जर दद्द द्वितीय प्रशान्तराग का साङ्खेडा में दूसरा दानपत्र जो नान्दीपुर में दिया गया था।

(४१९)

क० सं० ३९४–इ० ए० भाग ७ पृष्ठ २४८। गुर्जर चौलुक्य **विजयराज** का कैर (अत्र रायल एशियाटिक सोसायटी) में दानपत्र जो विजयपुर में दिया गया था।

चौलुक्यों के वंश में जयसिंहराज, उसका पुत्र बुद्धवर्मराज (उपनाम वल्लभ-रणविक्रान्त), उसका पुत्र विजयराज।

(४२०)

क० सं० ४०६–इ० ए० भाग १८ पृष्ठ २६७। सेन्द्रक **निकुम्भल्लशक्ति** का बगुम्रा (अत्र बृटिश म्यूजियम) में दानपत्र।

सेन्द्रक राजाओं के वंश में भाणुशक्ति, उसका पुत्र आदित्यशक्ति, उसका पुत्र पृथिवीवल्लभ-निकुम्भल्लशक्ति।

(४२१)

क० सं० ४२१–ज० ब० ए० सो० भाग १६ पृष्ठ २। गुजरात के चौलुक्य युवराज **श्र्याश्रय-शीलादित्य** का नौसारी में दानपत्र जो नवसारिका में दिया गया था।

चौलुक्यों के वंश में पुल्केशि-वल्लभ, उसका पुत्र धराश्रय-जयसिंहवर्मन (महाराजाधिराज विक्रमादित्य-सत्याश्रय-पृथिवी-वल्लभ का छोटा भाई), उसका पुत्र युवराज श्र्याश्रय-शीलादित्य।

(४२२)

क० सं० ४४३–वी० ओ का० पृष्ठ २२९। पश्चिमी चलुक्य

विनयादित्य सत्ताश्रय-वल्लभ के समय का गुजरात चलुक्य युवराज श्र्याश्रय-शीलादित्य का सूरत में दानपत्र जो कार्मणेय के समाप कुसुमेश्वर में दिया गया था।

महाराज सत्याश्रय-पुलकेशि वल्लभ (जिसने उत्तरखण्ड के राजा हर्षवर्धन को पराजित किया था), उसका पुत्र महाराज विक्रमादित्य-सत्याश्रय वल्लभ, उसका पुत्र महाराजाधिराज विनयादित्य सत्याश्रय श्रीपृथिवीवल्लभ, उसका चाचा धराश्रय जयसिंह वर्मन, उसका पुत्र युवराज श्रयाश्रय शीलादित्य।

(४२३)

क० सं० ४५६—इ० ए० भाग १३ पृष्ठ ७७। गुर्जर **जयभट तृतीय** का नौसारी में दानपत्र जो कायावतार मे दिया गया था।

महाराज कर्ण के वंश में दद्द [द्वितीय] (जिसने हर्षदेव से पराजित किए हुए वल्लभी के एक राजा की रक्षा की थी), उसका पुत्र जयभट [द्वितीय], उसका पुत्र दद्द [तृतीय] बाहुसहाय, उसका पुत्र जयभट [तृतीय]।

(४२४)

क० सं० ४८६—इ० ए० भाग ९ पृष्ठ ११३। गुर्जर **जयभट तृतीय** का कावी में दानपत्र।

(४२५)

क० सं० ४९०—श्री० ओ० का० पृष्ठ २३०। गुजरात के चालुक्य **पुलकेशिराज** का नौसारी में दानपत्र।

महाराजाधिराज सत्याश्रय पृथिवीवल्लभ-कीर्तिवर्मराज, उसका पुत्र सत्याश्रय पुल्केशि वल्लभ (जिसने उत्तराखण्ड के राजा हर्षवर्धन को पराजित किया), उसका पुत्र सत्याश्रय विक्रमादित्यराज, उसका छोटा भाई धराश्रय जयसिंहवर्मराज, उसका पुत्र जयाश्रय मङ्गलरसराज, उसका

छोटाभाई पुलकेशिराज (जिसने राजा श्रीवल्लभ से अवनिजनाश्रय का नाम) तथा उसकी और उपाधियां पाई थीं)।

(४२६)

क० सं० ७२४—इ० ए० भाग २० पृष्ठ ८९। योगी प्रशान्त शिव तथा मत्तमयूर के अन्य जनों का चन्द्रेहे में शिलालेख जिसे मेहुक के पौत्र तथा जेईक और अमरिका के पुत्र धांसट ने सङ्कलित किया था।

(४२७)

क० सं० ७८९ (?)—आ० स० इ० भाग २१ पृष्ठ ११३। कलचुरि (चेदि) गङ्गेयदेव का पिआवन की चट्टान पर शिलालेख।

(४२८)

क० सं० ७९३—ए० इ० भाग २ पृष्ठ ३०९। त्रिकलिङ्गाधिपति कलचुरि (चेदि) महाराजाधिराज कर्णदेव का बनारस में दानपत्र जो प्रयाग में वेणी के तट पर दिया गया था।

हैहय वंश में कोकल्ल [प्रथम] (जो भोज, वल्लभराज, चित्रकूट के चन्देल्ल हर्ष तथा शङ्करगण का समकालीन था और जिसने चन्देल्ल राजकुमारी नट्टा (नट्टदेवी) से विवाह किया), उसका पुत्र प्रसिद्धधवल, उनका पुत्र बालहर्ष और युवराज [प्रथम], युवराज का पुत्र लक्ष्मणराज, उसका पुत्र शङ्करगण और युवराज [द्वितीय], युवराज का पुत्र कोक्कल्ल [द्वितीय], उसका पुत्र गेङ्गय, उसका पुत्र कर्ण।

(४२९)

क० सं० ८४०— आ० स० इ० भाग १७ पृष्ठ ३९। राणक गोपालदेव के राजकाल का बोरमदेओ में शिलालेख।

(४३०)

क० सं० ८६६—ए० इ० भाग १ पृष्ठ ३४। रत्नपुर के जाजल्लदेव प्रथम का रत्नपुर (अब नागपुर म्यूज़ियम) में शिलालेख।

हैहयवंश में चेदि का राजा कोकल्ल था जिसके अठारह पुत्रों में से सबसे बड़ा पुत्र त्रिपुरी का राजा हुआ। उस के एक छोटे पुत्र की सन्तति कलिङ्गराज ने दक्षिणकोशल को विजय किया, उसका पुत्र कमलराज, उसका पुत्र रत्नराज (रत्नेश) [प्रथम] जिसने कोमो मण्डल के वज्जूक की पुत्री नोनल्ल से विवाह किया, उनका पुत्र पृथ्वीश (पृथ्वीदेव) [प्रथम] जिसने राजल्ला से विवाह किया, उनका पुत्र जाजल्ल [प्रथम] (जो किसी सोमेश्वर का समकालीन था)।

(४३१)

क० सं० ८७४—ए० इ० भाग २ पृष्ठ ३। कलचुरी (चेदि) महाराजाधिराज **यशाहकर्णदेव** का जबलपुर (अब नागपुर म्यूजियम) में प्रथमशिलालेख।

कलचुरिवंश में त्रिपुरी का युवराज [द्वितीय], उसका पुत्र कोकल्ल [द्वितीय], उसका पुत्र गाङ्गेयदेव विक्रमादित्य, उसका पुत्र कर्ण जिसने हूणराजकुमारी आवल्लदेवी से विवाह किया, उनका पुत्र यशाहकर्ण।

(४३२)

क० सं० ८९३—इ० ए० भाग २० पृष्ठ ८४। रत्नपुर के **पृथ्वीदेव** द्वितीय के राजकाल का कुगुड में खण्डितशिलालेख।

इस शिलालेख में रानी लच्छल्लदेवी, रत्नदेव (?), तथा किसी वल्लभराज का उल्लेख है।

(४३३)

क० सं० ८९६—इ० ए० भाग १७ पृष्ठ १३९। रत्नपुर के **पृथ्वीदेव द्वितीय** के समय का नायक जगपाल (जगसिंह) का राजिम में शिलालेख जिसे जसोधर के पुत्र जमानन्द ने सङ्कलित किया था।

इस शिलालेख में जाजल्ल (प्रथम) रत्नदेव द्वितीय और पृथिवीदेव (द्वितीय) का उल्लेख तथा जगपाल के वंश का वर्णन है जिस का प्रारम्भ ठाकुरसाहिल्ल से हुआ जो उस राजमालवंश का एक उत्तम

भूपण था जिसने पंचहंसवंश को आनन्दित किया था। साहिल्ल का एक छोटा भाई वासुदेव और तीन पुत्र माथिल, देसल और स्वामी थे। स्वामी के लडके जयदेव और देवसिंह हुए जिसमें से एक का पुत्र जयपाल हुआ जिसके गाजल और जयतसिंह दो छोटे भाई हुए।

(४३४)

क० सं० ८९८—आ० स० इ० भाग ९ पृष्ठ ८६ तथा सर ए० कनिंघम की प्रतिलिपि। किसी सेओरिनारायन के शिलालेख का समय।

(४३५)

क० सं० ९०२—इ० ए० भाग १८ पृष्ठ २१०। कलचुरि (चेदि) **गयाकर्णदेव** तथा उसके पुत्र युवराज **नरसिंह** के समय का तेवर में शिलालेख जिसे धरणीधर के पुत्र पृथ्वीधर ने सङ्कलित किया था।

आत्रेयगोत्र में कर्ण, उसका पुत्र यशहकर्ण, उसका पुत्र गयाकर्ण, उसका पुत्र युवराज नरसिंह,

(४३६)

क० सं० ९०७—ए० इ० भाग २ पृष्ठ १० तथा के० टे० वे० इ० पृष्ठ १०७। **गयकर्ण देव** की विधवा कल्चुरि (चेदि) रानी **अल्हण देवी** का, उसके पुत्र **नरसिंहदेव** के राजकाल का भेरघाट (अब अमेरिकन ओरिएण्टल सोसायटी) में शिलालेख जिसे धरणीधर के पुत्र शशिधर ने सङ्कलित किया था।

चन्द्रवंशी सहस्रार्जुन के वंश में कोकल्ल [द्वितीय], उसका पुत्र गङ्गेय, उसका पुत्र कर्ण, उसका पुत्र यशहकर्ण, उसका पुत्र गयकर्ण जिसने विजयसिंह (जो हंसपाल के पुत्र गुहिल वैरिसिंह का पुत्र था) तथा उसकी रानी श्यामलदेवी (जो मालव के परमार उदयादित्य की पुत्री थी) की एक पुत्री अल्हणदेवी से विवाह किया, उनके पुत्र नरसिंह तथा जयसिंह हुए।

(४३७)

क० सं० ९०९—इ० ए० भाग १८ पृष्ठ २१२ तथा आ० स० इं० भाग ९। त्रिकलिङ्गाधिपति कल्चुरि (चेदि) **नरसिंहदेव** के समय का लाल पहाड चट्टान पर शिलालेख।

(४३८)

क० सं० ९१०—आ० स० इ० भाग १७। रत्नपुर के **पृथ्वीदेव द्वितीय** के राजकाल के रत्नपुर (अब नागपुर म्यूजियम) में एक शिलालेख का समय।

(४३९)

क० सं० ९१९—ए० इ० भाग १ पृष्ठ ४०। रत्नपुरके **जाजल्लदेव द्वितीय** के समय का मल्हार (अब नागपुर म्यूजियम) में शिलालेख जिसे वास्तव्यवंश के मामे के पुत्र रत्नसिंह ने सङ्कलित किया था।

चन्द्रवंश में रत्नदेव द्वितीय (जिसने चोडगङ्ग को पराजित किया था), उसका पुत्र पृथ्वीदेव द्वितीय, उसका पुत्र जाजल्ल द्वितीय।

(४४०)

क० सं० ९२६—इ० ए० भाग १७ पृष्ठ २२९। त्रिकलिङ्गाधिपति कल्चुरि (चेदि) महाराजाधिराज **जयसिंहदेव** के राजकाल का, कक्करेडिका के महाराणक **कीर्तिवर्मन** का रीवां (अब ब्रिटिश म्यूजियम) में दानपत्र।

कौरववंश में महाराणक जयवर्मन, उसका पुत्र महाराणक वत्सराज, उसका पुत्र महाराणक कीर्तिवर्मन।

(४४१)

क० सं० ९२८—आ० स० इ० भाग ९ पृष्ठ १११ तथा इ० इ० पृष्ठ ११। भेरघाट का शिलालेख।

(४४२)

क० सं० ९२८—ए० इ० भाग २ पृष्ठ १८ तथा के० टे०

ये० इ० पृष्ठ ११९ गयाकर्ण के पुत्र तथा नरसिंह देव के छोटे भाई कलचुरि (चेदि) **जयसिंहदेव** के समय का तेवर (अब अमेरिकन ओरियण्टेल सोसायटी) में शिलालेख।

(४४३)

क० सं० ९३२—ज० ब० ए० सो० भाग ८ पृष्ठ ४८१ तथा भाग ३१ पृष्ठ ११६। कल्चुरि (चेदि) **विजयसिंहदेव** तथा उसकी माता **गोसलदेवी** का कुम्भी में दानपत्र जो नर्मदा के तट पर त्रिपुरी में दिया गया था।

यशहकर्ण तक वंशावली संख्या ४३१ में, यशहकर्ण का पुत्र गयाकर्ण जिसने अल्हणदेवी से विवाह किया, उनका पुत्र नरसिंह, उसका छोटा भाई जयसिंह, उसका पुत्र विजयसिंह, महाकुमार अजयसिंह।

(४४४)

क० सं० ९३३—इ० ए० भाग २२ पृष्ठ ८२। रत्नपुर के **रत्नदेव तृतीय** के समय का खोरोद में शिलालेख।

हैहयवंश में कलिङ्ग, उसका पुत्र कमल, उसका पुत्र रत्नराज [प्रथम], उसका पुत्र पृथ्वीदेव प्रथम, उसका पुत्र जाजल्ल प्रथम (जिसने सुवर्णपुर के भुजबल को पराजित किया), उसका पुत्र रत्नदेव द्वितीय (जिसने कलिङ्ग के चोडगङ्ग को पराजित किया), उसका पुत्र पृथ्वीदेव द्वितीय, उसका पुत्र जाजल्ल द्वितीय जिसने सोमल्लदेवी से विवाह किया, उनका पुत्र रत्नदेव तृतीय।

(४४५)

क० सं० ९३४—आ० स० इ० भाग १७। यशोराज सहसपुर में एक मूर्त्ति पर शिलालेख।

इस शिलालेख में यशोराज के अतिरिक्त रानी लक्ष्मदेवी (यकर्ण पुत्र राजकुमार भोजदेव और राजदेव, तथा राजकुमारी जासल्लदेवी का वर्णन था)

(४४६)

क० सं० ९५८—आ० स० इ० भाग २१ पृष्ठ १०२ बेशाखा में खण्डितशिलालेख।

—०—

(५) कलचुरी संवत् के बिना समय के शिलालेख ।

— ० —

(४४७)

गु० इ० पृष्ठ १३० । महाराज सर्वनाथ का खोह में प्रथम दानपत्र जो उच्चकल्प में दिया गया था ।

(४४८)

ए० इ० भाग २ पृष्ठ २३ । भोगिकपाल महापिलुपति निरिहुल्लक (जिसने कृष्णराज के पुत्र [कलचुरि ?] शङ्करण [शङ्करगण] के चरणों का ध्यान किया था) के बलाधिकृत शान्तिल्ल का साखेडा में प्रथम दानपत्र जो निर्गुण्डिप्रद्रक में दिया गया था ।

(४४९)

ए० इ० भाग २ पृष्ठ १७५ । कलचुरि (चेदि) लक्ष्मणराज तथा उसके मंत्री सोमेश्वर (युवराज के मंत्री भाकमिश्र का पुत्र था) के समय का कारीतलाई (अब जबलपुर म्यूजियम) में खण्डित शिलालेख । इसमें युवराज [प्रथम], [उसके पुत्र] लक्ष्मणराज जिसकी रानी राधा थी, और [उनके पुत्र] शङ्क [रगण] का वर्णन है ।

(४५०)

ए० इ० भाग १ पृष्ठ २५४ । कलचुरि (चेदि) युवराजदेव द्वि
तीय का बिल्हरि (अब नागपुर म्यूजियम) में शिलालेख । (इस लेख के प्रथम अंश को स्थिरानन्द के पुत्र श्रीनिवास ने, तृ
तीय अंश को धीर के पुत्र सज्जन ने तथा अंत के श्लोकों को शीघ्र सङ्कलित किया था) ।

हैहयवंश में कोकल [प्रथम] जिसने दक्षिण में कृष्णराज तथा उ
त्तर में भोजदेव की सहायता की थी), उसका पुत्र मुग्धतुङ्ग, उसका पुत्र केयूरवर्ष युवराज [प्रथम जिसने नोहला (जो सिंहवर्मन के पौत्र

तथा सधन्व के पुत्र चौलुक्य अवनिवर्मन की पुत्री थी) से विवाह किया; उनका पुत्र लक्ष्मणराज; उसका पुत्र शङ्करगण; उसका लघुभ्राता युवराज [द्वितीय]-इस शिलालेख में एक शैव योगी मत्तमयूरनाथ के सम्बन्ध में किसी राजा अवन्ति का भी वर्णन है ।

(४९१)

ए० इ० भाग १ पृष्ठ ३९४ । रनोड (नरोड अथवा नरवड) का शिलालेख जिसमें कुछ शैवयोगिओं (कदम्बगुहाधिवासिन, शङ्ख-मठिकाधिपति, तेरम्बिपाल, आमर्दकतीर्थनाथ, पुरन्दर, कचवशिव सदाशिव, हृदयेश, और व्योमशिव) का वर्णन तथा (पुरन्दर के सम्बन्ध में) किसी राजा अवन्ति या अवन्तिवर्मन का वर्णन है जो मत्तमयूर पर रहता था' इसे देवदत्त ने सङ्कलित किया था।

(४९२)

इ० ए० भाग १८ पृष्ठ २१६ । कलचुरि (चेदि) जयसिंहदेव का कारनबेल में अधूरा शिलालेख ।

कलचुरी वंश में युवराज द्वितीय, उसका पुत्र कोकल्ल द्वितीय, उसका पुत्र गङ्गेय, उसका पुत्र कर्ण, उसका पुत्र यशहकर्ण, उसका पुत्र गयकर्ण जिसने [गुहिल] विजयसिंह (जो प्रागवाट में हंसपाल के पुत्र वैरिसिंह का पुत्र था) तथा उसकी पत्नी श्यामलदेवी (जो धारा के परमार उदयादित्य की कन्या थी) की पुत्री अल्हणदेवी से विवाह किया; उनके पुत्र नरसिंह और जयसिंह ।

(४९३)

इ० ए० भाग १८ पृष्ठ २१८ । कलचुरि (चेदि) विजयसिंह-देव के समय का गोपालपुर में खण्डितशिलालेख । इस शिलालेख में कलचुरि राजा कर्ण, यशहकर्ण, गयाकर्ण, नरसिंह, जयसिंह, जिसने गोसलदेवी से विवाह किया, और उनके पुत्र विजय-सिंह का वर्णन है ।

(४९४)

इ० ए० भाग २० पृष्ठ ८४ । रत्नपुर के कल्चुरि अनुशासकों का अकलतारा में खण्डितशिलालेख, जिसमें रत्नदेव, हरिगण, राल्ह-ल्लदेवी, वल्लभराज, और जयसिंह देव का उल्लेख है ।

(४९५)

इ० ए० भाग २० पृष्ठ ८४ । रत्नपुर के कलचुरि अनुशासकों का मुहम्मदपुर में शिलालेख जिसमें जाजल्लदेव, रत्नदेव, पृथ्वीदेव, तथा वल्लभराज का उल्लेख है ।

(४९६)

इ० ए० भाग २० पृष्ठ ८५ । तेवर मे एक खण्डितशिलालेख, जिसमें भीमपाल का उल्लेख है ।



(६) गुप्तवल्लभी संवत के शिलालेख ।

(४९७)

गु० सं० ८२—गु० इ० पृष्ठ २१ । उदयगिरि की गुहा में शिलालेख जिसमें महाराजाधिराज चन्द्रगुप्त द्वितीय के अधीनस्थ महाराज छगलग के पौत्र तथा महाराज विष्णुदास के पुत्र सनकादिक महाराज . ध (?) क के एक दान का वर्णन है ।

(४९८)

गु० सं० ८८—गु० इ० पृष्ठ ३७ । महाराजाधिराज चन्द्रगुप्त द्वितीय के समय का गढ़वा (अब कलकत्ता म्यूजियम) में शिलालेख ।

(४९९)

गु० सं० ९३—गु० इ० पृष्ठ ३१ । महाराजाधिराज चन्द्रगुप्त द्वितीय के समय का साञ्ची में शिलालेख जिसमें काकनादबोट (अर्थात् साञ्ची) के महाविहार में एक दान का वर्णन है जो आर्य सिंह को दिया गया था ।

(४६०)

गु० सं० ९६—गु० इ० पृष्ठ ४३। महाराजाधिराज **कुमारगुप्त प्रथम** के राजकाल का किसी ध्रुवशर्मन का बिल्सड के स्तूप पर शिलालेख।

महाराज गुप्त; उसका पुत्र महाराज घटोत्कच; उसका पुत्र महाराजाधिराज चन्द्रगुप्त [प्रथम]; उसका पुत्र, लिच्छवि की पुत्री कुमारदेवी से, महाराजाधिराज समुद्रगुप्त; उसका पुत्र, दत्तदेवी से, महाराजाधिराज चन्द्रगुप्त [द्वितीय]; उसका पुत्र, ध्रुवदेवी से महाराजाधिराज कुमारगुप्त [प्रथम]।

(४६१)

गु० सं० ९८—गु० इ० पृष्ठ ४१। महाराजाधिराज **कुमारगुप्त प्रथम** के समय का गढ़वा (अब कलकत्ता म्यूजियम) खण्डित शिलालेख।

(४६२)

गु० सं० १०६—गु० इ० पृष्ठ २५८। उदयगिरि की गुहा का जैन शिलालेख।

(४६३)

गु० सं० ११३ (?)—ए० इ० भाग २ पृष्ठ २१०। महाराजाधिराज **कुमारगुप्त प्रथम** के राजकाल का मथुरा (अब लखनऊ म्यूजियम) की जैनमूर्त्ति का शिलालेख।

(४६४)

गु० सं० १२९—गु० इ० पृष्ठ ४६। महाराज **कुमारगुप्त प्रथम** के राजकाल का मनकुवार में बौद्ध शिलालेख।

(४६५)

गु० सं० १३१—गु० इ० पृष्ठ २६१। साञ्ची का शिलालेख जिसमें एक दान का वर्णन है जो काकनादबोट (साञ्ची) के महाविहार में आर्यसिंह को दिया गया था।

(४६६)

गु० सं० १३१—गु० इ० पृष्ठ २६३। मथुरा (अब लखनऊ म्यू॰ ज़ियम) की एक बौद्ध मूर्ति का लेख।

(४६७)

गु० सं० १३६, १३७ तथा १३८—गु० इ० पृष्ठ ५८ तथा भा० इ० पृष्ठ २४। राजाधिराज स्कन्दगुप्त के समय का जूनागढ़ के चट्टान का शिलालेख जिसमें सुराष्ट्र के अनुशासक पर्णदत्त के पुत्र चक्रपालित का सुदर्शन झील की बांध को दुरुस्त कराने का उल्लेख है।

(४६८)

गु० सं० १३९—गु० इ० पृष्ठ २६७। महाराज भीमवर्मन के समय का एक मूर्ति पर की खण्डितशिलालेख।

(४६९)

गु०सं० १४१—गु० इ० पृष्ठ ६६। स्कन्दगुप्त के राजकाल का कहाऊ के जैनस्तूप का शिलालेख।

(४७०)

गु० सं० १४६—गु० इ० पृष्ठ ७०। महाराजाधिराज स्कन्दगुप्त तथा उनके अधीनस्थ अन्तर्वेदी देश के विषयपति शर्वनाग के समय का ब्राह्मण देवविष्णु का इन्दौर में दानपत्र।

(४७१)

गु० सं० १४८—गु० इ० पृष्ठ २६८। गढ़वा (अब कलकत्ता म्यूजियम) का खण्डित वैष्णवशिलालेख।

(४७२

गु० सं० १५६—गु०इ० पृष्ठ ९५। महाराज देवाढ्य के पपौत्र

महाराज प्रभञ्जन के पौत्र तथा महाराज दामोदर के पुत्र परिव्राजक महाराज हस्तिन का खोह (अब लखनऊ म्यूजियम ?) में दानपत्र ।

(४७३)

गु० सं० (?) १५८—ए० इ० भाग २ पृष्ठ ३६४ । महाराज लक्ष्मण का पाली (अब लखनऊ म्यूजियम) में दानपत्र जो जयपुर में दिया गया था ।

(४७४)

गु० सं० १६३—गु० इ० पृष्ठ १०२ । परिव्राजक महाराज हस्तिन का खोह (अब लखनऊ म्यूजियम) में दानपत्र ।

(४७५)

गु० सं १६५—गु० इ० पृष्ठ ८९ । बुधगुप्त तथा उसके अधीनस्थ महाराज सुरश्मिचन्द्र के समय का ईरान के स्तूप का शिलालेख जिसमें महाराज मातृविष्णु तथा उसके छोटे भाई धन्यविष्णु के एक स्तूप बनवाने का वर्णन है ।

(४७६)

गु सं १९१—गु० इ० पृष्ठ ९२ । राजा माधव के पुत्र तथा किसी राजा भानुगुप्त के अनुगामी (?) गोपराज की विधवा का ईरान के सतीस्तूप पर शिलालेख ।

(४७७)

गु० सं० १९१—गु० इ० पृष्ठ १०७ । परिव्राजक महाराज हस्तिन के समय का मझगवां में दानपत्र ।

(४७८)

गु० सं० २०७—ए० इ० भाग ३ पृष्ठ ३२० । वल्लभी के महासामन्त महाराज ध्रुवसेन प्रथम का गणेशगढ़ (बरोदा) में दानपत्र जो वल्लभी में दिया गया था ।

मैत्रक वंश में सेनापति भटक्क (भटार्क), उसका पुत्र सेनापति धरसेन [प्रथम] ; उसका छोटा भाई महाराज द्रोणसिंह, उसका छोटा भाई महासामन्त महाराज ध्रुवसेन [प्रथम] ।

(४७९)

गु० सं० २०७—इ०ए० भाग ५ पृष्ठ २०५ । वल्लभी के महाराज **ध्रुवसेन प्रथम** का भावनगर में दानपत्र जो वल्लभी में दिया गया था ।

(४८०)

गु० सं० २०९—गु० इ० पृष्ठ ११४ । योगिराज सुशर्मन के वंश के महाराज दत्ताढ्य के पुत्र महाराज प्रभञ्जन के पौत्र, महाराज दामोदर के पौत्र तथा महाराज हस्तिन के पुत्र परिव्राजक महाराज **संक्षोभ** का खोह में दानपत्र ।

(४८१)

गु० सं० २१६—इ० ए० भाग ४ पृष्ठ १०५ । वल्लभी के महासामन्त महाप्रतिहार महादण्डनायक महाकार्ताकृतिक महाराज **ध्रुवसेन प्रथम** का वला में दानपत्र जो गुड्डनेडीय ग्राम में दिया गया था ।

(४८२)

गु० सं० २१७—ज० रा० ए०सो० १८९५ पृष्ठ,३८२ । वल्लभी के महाप्रतिहार महादण्डनायक महाकार्ताकृतिक महासामन्त महाराज **ध्रुवसेन प्रथम** का वृटिशम्यूजियम में दानपत्र ।

(४८३)

गु० सं० २२१—वी० जा० भाग ७ पृष्ठ २९७ । वल्लभी के महाराज **ध्रुवसेन प्रथम** का पालिआ-जोगिआ में दानपत्र ।

(४८४)

गु० सं० २३०—गु० इ० पृष्ठ २७३ । मथुरा (अब लखनऊ म्यूजियम) के बौद्धमूर्त्ति का शिलालेख ।

(४८५)

गु० सं० २४० (? २३७)–इ० ए० भाग ७. पृष्ठ ६७ । वल्लभी के महाराज **गुहसेन** का दानपत्र ।

भटार्क से ध्रुवसेन प्रथम तक की वंशावली संख्या ४७८ में; उसके पश्चात (धरपट्ट [संख्या ४८९] को छोड़ कर) महाराज गुहसेन ।

(४८६)

गु० सं० २४६–इ० ए० भाग ४ पृष्ठ १७५ । वल्लभी के महाराज **गुहसेन** का वला में द्वितीय दानपत्र ।

(४८७)

गु० सं० [२] ४७–इ० ए० भाग १४ पृष्ठ ७५ । वला का खण्डित शिलालेख जिसमें वल्लभी के महाराज **गुहसेन** का नाम है ।

(४८८)

गु० सं० २४८–इ०ए० भाग ५ पृष्ठ २०७ । वल्लभी के महाराज **गुहसेन** का भावनगर में द्वितीय दानपत्र जो वल्लभी में दिया गया था ।

(४८९)

गु० सं० २५२–भा० इ० पृष्ठ ३१ तथा इ० ए० भाग १५ पृष्ठ १८७ । वल्लभी के सामन्त महाराज **धरसेन द्वितीय** का इार में दानपत्र जो वल्लभी में दिया गया था ।

भटार्क से ध्रुवसेन प्रथम तक की वंशावली संख्या ४७८ में, ध्रुवसेन का छोटा भाई महाराज धरपट्ट; उसका पुत्र महाराज गुहसेन, उसका पुत्र सामन्त महाराज धरसेन द्वितीय ।

(४९०)

"गु० सं० २५२–गु० ई० पृष्ठ १६५ । वल्लभी के महाराज **धरसेन द्वितीय** का मालिया (जुनागढ़) में दानपत्र जो वल्लभी में दिया गया था ।

(४९१)

गु० सं० २५२–इ०ए० भाग ७ पृष्ठ ६८ । वल्लभी के महाराज **धरसेन द्वितीय** का सोरठ (जुनागढ़) में दानपत्र जो वल्लभी में दिया गया था ।

(४९२)

गु० सं० २५२—इ० ए० भाग ८ पृष्ठ ३०१ । वल्लभी के महाराज **धरसेन द्वितीय** का बाम्बे एशियाटिक सोसायटी में दानपत्र जो वल्लभी में दिया गया था ।

(४९३)

गु० सं० २५२—भा० इ० पृष्ठ ३९ । वल्लभी के महाराज **धरसेन द्वितीय** का कतपुर (अब भावनगर म्यूजियम) में दानपत्र जो भद्रपत्तनक (?) में दिया गया था ।

(४९४)

गु० सं० २६९—इ० ए० भाग ६ पृष्ठ ११ । वल्लभी के महासामन्त महाराज **धरसेन द्वितीय** का वला में दानपत्र जो भद्रावास्त (?) में दिया गया था ।

वंशावली संख्या ४८९ में—इस शिलालेख में दूतक सामन्त शीलादित्य का उल्लेख है ।

(४९५)

गु० सं० २६९ (?)—गु० इ० पृष्ठ २७६ । बौद्ध गुरु **महानामन** का बुद्ध गया (अब कलकत्ता म्यूजियम) में शिलालेख ।

(४९६)

गु० सं० २७०—इ० ए० भाग ७ पृष्ठ ७१ । वल्लभी के महासामन्त महाराज **धरसेन द्वितीय** का अलीना म दानपत्र जो भर्तृटाद्रनक (?) में दिया गया था ।

इस शिलालेख में भी दूतक सामन्त शीलादित्य का उल्लेख है ।

(४९७)

गु० सं० २८६—इ० ए० भाग १ पृष्ठ ४६ । वल्लभी के **शीलादित्य प्रथम धर्मादित्य** [धरसेन द्वितीय के पुत्र] का वला में खण्डित दूसरा दानपत्र ।

(४९८)

गु० सं० २८६—इ० ए० भाग १४ पृष्ठ ३२९ । वल्लभी के शीलादित्य प्रथम धर्मादित्य का वला (अब बाम्बे एशियाटिक सोसायटी) में दानपत्र जो वल्लभी में दिया गया था ।

भटार्क के वंश में गुहसेन; उसका पुत्र धरसेन द्वितीय ; उसका पुत्र शीलादित्य प्रथम धर्मादित्य ।

(४९९)

गु० सं० २९०—इ० ए० भाग ९ पृष्ठ २३८ । वल्लभी के शीलादित्य प्रथम धर्मादित्य का ढाङ्क (अब राजकोट म्यूजियम) में दानपत्र जो वल्लभी द्वार के सामने होम्व (?) में दिया गया था ।

इस शिलालेख में दूतक खरग्रह का उल्लेख है ।

(५००)

गु० सं० ३१०—इ० ए० भाग ६ पृष्ठ १३ तथा भा० इ० पृष्ठ ४० । वल्लभी के ध्रुवसेन द्वितीय बालादित्य का बोटाद (अब भावनगर म्यूजियम) में दानपत्र जो वल्लभी में दिया गया था ।

शीलादित्य प्रथम धर्मादित्य तक की वंशावली संख्या ४९८ में; उसका छोटा भाई खरग्रह [प्रथम]; उसका पुत्र धरसेन तृतीय; उसका छोटा भाई ध्रुवसेन द्वितीय बालादित्य ।

(५०१)

गु० सं० ३१६—(अथवा ३१८ ?)—इ०ए० भाग १४ पृष्ठ ९८ तथा प्रो०बे०ज० पृष्ठ ७२ । लिच्छवि वंश के महाराज शिवदेव प्रथम का गोलमढि टोल (भाटगांव में) शिलालेख जिसमें एक आज्ञा लिखी हुई है जो महासामन्त अंशुवर्मन की प्रार्थना पर मानगृह में दी गई थी ।

(५०२)

गु० सं० ३२६—ज० ब० ए० सो० भाग १० पृष्ठ ७७ तथा इ० ए० भाग १ पृष्ठ १४ । वल्लभी के महाराजाधिराज धरसेन चतुर्थ का दानपत्र जो वल्लभी में दिया गया था ।

ध्रुवसेन द्वितीय बालादित्य तक की वंशावली संख्या ९०० में ; उसका पुत्र परमभट्टारक महाराजाधिराज परमेश्वर चक्रवर्तिन धरसेन चतुर्थ। इस शिलालेख में राजपुत्र ध्रुवसेन को दूतक करके लिखा है।

(९०३)

गु० सं० ३२६—इ० ए० भाग १ पृष्ठ ४९। वल्लभी के महाराजाधिराज ध्रुवसेन चतुर्थ का भावनगर में द्वितीय दानपत्र।

(९०४)

गु० सं० ३३०—इ० ए० भाग ७ पृष्ठ ७३। वल्लभी के महाराजाधिराज धरसेन चतुर्थ का अलीना मे दानपत्र जो भरुकच्छ में दिया गया था।

इस शिलालेख में राजदुहित्री भूपा को दूतक कर के लिखा है।

(९०५)

गु० सं० ३३०—इ० ए० भाग १९ पृष्ठ ३३९। वल्लभी के महाराजाधिराज धरसेन चतुर्थ का कैर में दानपत्र जो भरुकच्छ में दिया गया था।

(९०६)

गु० सं० ३३४—ए० इ० भाग १ पृष्ठ ८६। वल्लभी के ध्रुवसेन तृतीय का कापड़वणज में दानपत्र जो सिरिसिम्मिणिका में दिया गया था।

धरसेन चतुर्थ तक की वंशावली संख्या ९०२ में; उसका उत्तराधिकारी ध्रुवसेन तृतीय जो धरसेन चतुर्थ के दादा [खरग्रह प्रथम] के [बड़े] भाई शीलादित्य प्रथम के पुत्र डेरभट का पुत्र था।

(९०७)

गु० सं० ३३७—इ० ए० भाग ७ पृष्ठ ७६। वल्लभी के खरग्रह द्वितीय का अलीना में दानपत्र जो पुलेण्डक (?) में दिया गया था।

ध्रुवसेन तृतीय तक की वंशावली संख्या ९०६ में; उसका बड़ा भाई खरग्रह द्वितीय हुआ।

(९०८)

गु० सं० ३५०—ए० इ० भाग ४ पृष्ठ ७६ । वल्लभी के शी-लादित्य तृतीय का लुन्सडी में दानपत्र जो खेटक में दिया गया था।

खरग्रह [द्वितीय] धर्मादित्य तक की वंशावली संख्या ९०७ में; उसके पश्चात शीलादित्य तृतीय जो खरग्रह द्वितीय के बड़े भाई शीला-दित्य द्वितीय का पुत्र था—इस शिलालेख में राजपुत्र ध्रुवसेन को दूतक कर के लिखा है।

(९०९)

गु० सं० ३५२—इ० ए० भाग ११ पृष्ठ ३०६ तथा भा० इ० पृष्ठ ४९। वल्लभी के शीलादित्य तृतीय का लुन्सडी (अब भावनगर म्यूज़ियम) में दानपत्र जो मेघवन में दिया गया था।

वंशावली संख्या ९०८ में—इसमें भी राजपुत्र ध्रुवसेन को दूतक कर के लिखा है।

(९१०)

गु० सं० ३६५ (?)—ज० ब० ए० सो० भाग ७ पृष्ठ ९६८। वल्लभी के शीलादित्य तृतीय का कैर में दानपत्र।

वंशावली संख्या ९०८ में—इसमें भी राजपुत्र ध्रुवसेन को दूतक कर के लिखा है।

(९११)

गु० सं० ३७२—इ० ए० भाग ९ पृष्ठ २०९। वल्लभी के महाराजाधिराज शीलादित्य चतुर्थ का भावनगर में दानपत्र जो वाला-दित्य के तलाव पर के डेरे में दिया गया था।

शीलादित्य तृतीय तक की वंशावली संख्या ९०८ में; उसका पुत्र परमभट्टारक महाराजाधिराज परमेश्वर शीलादित्य चतुर्थ हुआ। इसमें

राजपुत्र खरग्रह को दूतक करके लिखा है।

(९१२)

गु० सं० ३७५—वी० जी०भाग १ पृष्ठ २९३ तथा भा० ३० पृष्ठ ९९। बल्लभी के महाराजाधिराज **शीलादित्य चतुर्थ** का देवलि (अब भावनगर म्यूजियम) में दानपत्र जो पूर्णाकि ग्राम में दिया गया था।

वंशावली संख्या ९११ में—इसमें भी राजपुत्र खरग्रह को दूतक करके लिखा है।

(९१३)

गु० सं० ३७६—डाक्टर बरगेस की प्रतिलिपि से। बल्लभी के महाराजाधिराज **शीलादित्य चतुर्थ** का दानपत्र।

वंशावली संख्या ९११ में—इस शिलालेख में भी राजपुत्र खरग्रह को दूतक करके लिखा है।

(९१४)

गु० सं० ३८२—डाक्टर फ्लीट की प्रतिलिपि से। बल्लभी के महाराजाधिराज **शीलादित्य चतुर्थ** का दानपत्र जो बल्लभी में दिया गयाथा।

वंशावली संख्या ९११ में—इसमें राजपुत्र धरसेन को दूतक करके लिखा है।

(९१५)

गु० सं० ३८६—इ० ए० भाग ९ पृष्ठ १६३। **मानदेव** का चाङ्गुनारायण (काटमाण्डु के निकट) के स्तूप पर शिलालेख।

वृषदेव, उसका पुत्र शङ्करदेव जिसने राज्यवती से विवाह किया; उनका पुत्र मानदेव।

(९१६)

गु० सं० ४०३—ज० बा० ए० सो० भाग ११ पृष्ठ ३३९। बल्लभी के महाराजाधिराज **शीलादित्य पञ्चम** का गोण्डल में दान-पत्र जो खेटक में दिया गया था।

शीलादित्य चतुर्थ तक की वंशावली संख्या ९११ में; उसका पुत्र परमभट्टारक **महाराजाधिराज परमेश्वर, शीलादित्य** पञ्चम हुआ इसमें राजपुत्र शीलादित्य को दूतक करके लिखा है।

(९१७)

गु० सं० ४०३—ज० बा० ए० सो० भाग ११ पृष्ठ ३३५—वल्लभी के महाराजाधिराज **शीलादित्य पञ्चम** का गोण्डल में दानपत्र जो खेटक में दिया गया था।

वंशावली संख्या ९१६ में—इसमें भी राजपुत्र शीलादित्य को दूतक करके लिखा है।

(९१८)

गु० सं० ४१३—इ० ए० भाग ९ पृष्ठ १६७। **मानदेव** के समय का देवपाटन (काठमाण्डु के निकट) में खण्डित शिलालेख।

(९१९)

गु० सं० ४३५—इ० ए० भाग ९ पृष्ठ १६७। महाराज **वसन्तसेन** का लगण्टोल (काठमाण्डु) में खण्डित शिलालेख जो मानगृह में लिखा गया था।

(९२०)

गु० सं० ४४१—इ० ए० भाग ६ पृष्ठ १७। वल्लभी के महाराजाधिराज **शीलादित्य छठवें** का लूणावाडा में दानपत्र जो गोद्रहक् में दिया गया था।

शीलादित्य पञ्चम तक की वंशावली संख्या ९१६ में; उसका पुत्र परमभट्टारक महाराजाधिराज परमेश्वर शीलादित्य छठवां।

(९२१)

गु० सं० ४४७—गु० इ० पृष्ठ १७३। वल्लभी के महाराजाधिराज **शीलादित्य सप्तम ध्रुवट** का अलीना (अब रॉयल एशियाटिक सोसायटी) में दानपत्र जो आनन्दपुर में दिया गया था।

शीलादित्य छठवें तक की वंशावली संख्या ९२० में; उसका पुत्र ध्रुवट, जिसकी पदवी परमभट्टारक महाराजाधिराज परमेश्वर शीलादित्य [सप्तम] थी।

(९२२)

गु० सं० ५३५–इ० ए० भाग ९ पृष्ठ १९८ । लगण्टोल (काटमाण्डु) का खण्डित शिलालेख जिसमें राजपुत्र विक्रमसेन को दूतक करके लिखा है।

(९२३)

गु० सं० ५८५–इ० ए० भाग २ पृष्ठ २५७ । जैनक का मोर्वी में दूसरा दानपत्र ।

(९२४)

गु० सं० ८५०–पी० भी० भाग ३ पृष्ठ ७ तथा भा० इ० पृष्ठ १८६ । पुनेरी भाव बृहस्पति का वेरावल में शिलालेख ।

इस शिलालेख में चौलुक्य जयसिंह सिद्धराज और कुमारपाल (जिन्हों ने धारा के राजा बल्लाल को पराजित किया था) का वर्णन है।

(९२५)

गु० सं० ८५० (?)–भा० इ० पृष्ठ १८४ । चौलुक्य कुमारपाल के समय का जूनागढ़ में खण्डित शिलालेख ।

(९२६)

गु० सं० ९११–भा० इ० पृष्ठ १६१ । वेलाणा (माङ्गोल के निकट) का खण्डित शिलालेख ।

(९२७)

गु० सं० ९२७–ए० इ० भाग ३ पृष्ठ ३०२ । वेरावल की मूर्ति का शिलालेख ।

(९२८)

गु० सं० ९४५–चौलुक्य (वाघेला) महाराजाधिराज अर्जुनदेव के राजकाल का वेरावल में शिलालेख ।

—*—

(७) गुप्त वल्लभी संवत के बिना समय के शिलालेख।

(९२९)

गु० इ० पृष्ठ १४१ । मेहरौली (मिहरौली) के लोहस्तूप पर खुदा हुआ लेख जिसमें पराक्रमी राजा चन्द्र के विजयों का उल्लेख है जो उसकी मृत्यु के पीछे खोदा गया था ।

(९३०)

गु० इ० पृष्ठ ६ । महाराजाधिराज **समुद्रगुप्त** का इलाहाबाद के स्तूप पर शिलालेख, जिसने कोसल के महेन्द्र, महाकान्तार के व्याघ्रराज, केरल के मण्टराज, पिष्टपुर के महेन्द्र, कोट्टूर पहाड़ी के स्वामिदत्त, एरण्डपल्ल के दमन, काञ्ची के विष्णुगोप, अवमुक्त के नीलराज, वेङ्गी के हस्तिवर्मन, पल्लक्क के उग्रसेन, देवराष्ट्र के कुबेर, कुस्थलपुर के धनञ्जय तथा दक्षिणापथ के और सब राजाओं को लड़ाई में पकड़ कर फिर छोड़ दिया और रुद्रदेव, मतिल, नागदत्त, चन्द्रवर्मन, गणपतिनाग, नागसेन, अच्युत, नन्दिन, बलवर्मन तथा आर्यावर्त के और राजाओं को उजाड़ दिया था (इसमें गद्य तथा पद्य में एक काव्य है जिसे ध्रुवभूति के पुत्र सन्धिविग्रहिक कुमारामात्य महादण्डनायक हरिषेण ने सङ्कलित किया था)

(९३१)

गु० इ० पृष्ठ २० । **समुद्रगुप्त** का एरण (अब कलकत्ता म्यूजियम) में खण्डित शिलालेख ।

(९३२)

गु० इ० पृष्ठ २५६ । महाराजाधिराज **समुद्रगुप्त** का गया (सन्दिग्ध) में दानपत्र जो अयोध्या में दिया गया था ।

(९३३)

गु० इ० पृष्ठ ३५ । **चन्द्रगुप्तद्वितीय** के समय का उदयगिरि की गुहा का शिलालेख, जिसमें उसके मंत्री, पाटलिपुर के कवि वीरसेन उपनाम शाब की आज्ञा से इस गुफा के खोदे जाने का उल्लेख है ।

(९३४)

गु० इ० पृष्ठ २६ । महाराजाधिराज चन्द्रगुप्त द्वितीय का मथुरा (अब लाहौर म्यूजियम) में खण्डित शिलालेख ।

(९३५)

गु० इ० पृष्ठ ४० । महाराजाधिराज कुमारगुप्त प्रथम के राजकाल का गढ़वा (अब कलकत्ता म्यूजियम) में खण्डित शिलालेख ।

(९३६)

गु० इ० पृष्ठ २६९ । कुमारगुप्त प्रथम के समय का गढ़वा (अब कलकत्ता म्यूजियम) में खण्डित शिलालेख ।

(९३७)

गु० इ० पृष्ठ ४९ । महाराजाधिराज स्कन्दगुप्त के समय का बिहार के खण्डितस्तूप का शिलालेख ।

कुमारगुप्त प्रथम तक की वंशावली संख्या ४६० में; उसका पुत्र महाराजाधिराज स्कन्दगुप्त ।

(९३८)

गु० इ० पृष्ठ ९२ । स्कन्दगुप्त का भितरी के स्तूप पर शिलालेख, जिसमें विष्णु भगवान की एक मूर्त्ति को स्थापित करने तथा उस मूर्त्ति के निमित्त एक ग्रामप्रदान करने का उल्लेख है ।

(९३९)

ज० ब० ए० सो० भाग ५८ पृष्ठ ८९ तथा इ० ए० भाग १९ पृष्ठ २२५—महाराजाधिराज कुमारगुप्त द्वितीय की भितरी (अब लखनऊ म्यूजियम) में मोहर ।

कुमारगुप्त प्रथम तक की वंशावली संख्या ४६० में, उसका पुत्र अनन्त देवी से, महाराजाधिराज पुरगुप्त; उसका पुत्र, वत्सदेवी से, महाराजाधिराज नरसिंहगुप्त, उसका पुत्र, महालक्ष्मी देवी से, महाराजाधिराज कुमारगुप्त [द्वितीय] ।

(९४०)

ए० इ० भाग १ पृष्ठ २३९ । राजाधिराज महाराज तोरमाण शाह (या शाही) जऊल्ल का कुर (अब लाहौर म्यूजियम) में शिलालेख, जिसमें एक बौद्ध मठ के बनाने का उल्लेख है ।

(९४१)

गु० इ० पृष्ठ १५९—महाराजाधिराज तोरमाण के राजकाल के प्रथम वर्ष का ईरान के पत्थर पर एक वराह की मूर्ति का शिलालेख, जिसमें उस मन्दिर का, जिसमें वराह बना है, महाराज मातृविष्णु के छोटे भाई धन्यविष्णु से बनवाए जाने का उल्लेख है ।

(९४२)

गु० इ० पृष्ठ १६२ । तोरमाण के पुत्र मिहिरकुल (जिसने पशुपति को पराजित किया था) के राजकाल के १५ वर्ष का ग्वालियर (अब कलकत्ता म्यूजियम) में शिलालेख जिसमें गोप (ग्वालियर) के पर्वत पर किसी मातृचेट नामक मनुष्य से एक सूर्यमन्दिर बनवाए जाने का उल्लेख है ।

(९४३)

गु० इ० पृष्ठ १११ । उच्चकल्प के महाराज शर्वनाथ तथा परिव्राजक महाराज हस्तिन का भुमरा स्तूप पर शिलालेख ।

(९४४)

भा० इ० पृष्ठ ३० । वाङ्कोडि (अब भावनगर म्यूजियम) का खण्डित शिलालेख, जिसमें वल्लभी के गुहसेन का नाम है ।

(९४५)

इ० ए० भाग १२ पृष्ठ १४८ तथा भा० इ० पृष्ठ ६४ । एक वल्लभी दान का लेख, जिसमें खरग्रह के पुत्र धरसेन तृतीय का वर्णन है और जो वल्लभी में दिया गया था ।

(९४६)

गु० इ० पृष्ठ २७९। बुद्धगया की बौद्ध मूर्ति का शिलालेख, जिसमें स्थविर महानामन के उस मूर्त्तिस्थापित करने का वर्णन है जो इस लेख के ऊपर स्थित है।

(९४७)

इ० ए० भाग ९ पृष्ठ १६८। एक खण्डित शिलालेख जो काठमाण्डू से ५ मील उत्तर शिवपुरी पहाड़ी के निकट मिला था, जिसमें लिच्छविवंश के महाराज शिवदेव प्रथम के कुछ कार्यों का वर्णन है जो महासामन्त अंशुवर्मन की प्रार्थना पर किए गए थे। यह मानगृह में दिया गया था।

(९४८)

भा० इ० पृष्ठ २०८। भावबृहस्पति का खण्डित वेरावल का शिलालेख, जिसमें चालुक्य (जयसिंह) सिद्धराज, कुमारपाल, अजयपाल, मूलराज द्वितीय और भीमदेव द्वितीय का उल्लेख है।



(८) हर्ष संवत के शिलालेख।

(९४९)

इ० स० २२—ए० इ० भाग ४ पृष्ठ २१०। महाराजाधिराज हर्ष का बन्सखेर (अब लखनऊ म्यूजियम) में दानपत्र जो वर्धमानकोटी में दिया गया था।

महाराज नरवर्धन; उसका पुत्र, वज्रिनीदेवी से, महाराज राज्यवर्धन [प्रथम]; उसका पुत्र अप्सरोदेवी से, महाराज आदित्यवर्धन; उसका पुत्र, महासेनगुप्तदेवी से, महाराजाधिराज प्रभाकरवर्धन, उसका पुत्र, यशोमतीदेवी से, महाराजाधिराज राज्यवर्धन द्वितीय (जिसने देवगुप्त तथा और राजाओं को विजय किया); उसका लघु भ्राता महाराजाधिराज हर्ष। इस शिलालेख में महासामन्त स्कन्दगुप्त और महासामन्त भान (?) का भी उल्लेख है।

(९९०)

ह० सं० २५—ए० इ०, भाग १ पृष्ठ ७२। महाराजाधिराज हर्ष का मधुवन (अब लखनऊ म्यूजियम) में दानपत्र जो कपित्थिका में दिया गया था।

वंशावली संख्या ९४९ में—इस शिलालेख में महासामन्त स्कन्दगुप्त और सामन्त महाराज ईश्वरगुप्त का राजपुरुषों की भांति वर्णन है।

(९९१)

ह० सं० ३४—मो० बे० ज० पृष्ठ ७४। महासामन्त अंशुवर्मन का सुन्धारा में शिलालेख जो कैलासकूटभवन में दिया गया था।

(९९२)

ह० सं० ३४—इ० ए० भाग ९ पृष्ठ १६९। महासामन्त अंशुवर्मन का (काठमाण्डू के निकट) बङ्गमती में खण्डित शिलालेख, जो कैलासकूटभवन में दिया गया था।

(९९३)

ह० सं० ३९—इ० ए० भाग ९ पृष्ठ १७०। अंशुवर्मन का (काठमाण्डु के निकट) देवपाटन में शिलालेख जो कैलासकूटभवन में दिया गया था।

इस शिलालेख में युवराज उदयदेव का दूतक की भांति उल्लेख है। इसमें अंशुवर्मन की बहिन भोगदेवी का भी, जो राजपुत्र शूरसेन की पत्नी तथा भोगवर्मन और भाग्यदेवी की माता थी, वर्णन है।

(९९४)

ह० सं० ४५—इ० ए० भाग ९ पृष्ठ १७१। अंशुवर्मन का (काठमाण्डु के निकट) सतधारा में शिलालेख।

(९९५)

ह० सं० ४८—इ० ए० भाग ९ पृष्ठ १७१। विष्णुगुप्त का (काठमाण्डु के निकट) ललितपट्टन में शिलालेख, जो कैलासकूट भवन में दिया गया था।

इस शिलालेख में मानगृह के सम्बन्ध में महाराज ध्रुवदेव का, महाराजाधिराज अंशुवर्मन का तथा दूतक की भांति युवराज विष्णुगुप्त का उल्लेख है।

(११६)

इ० सं० ६६—गु० इ० पृष्ठ २१०। मगध के गुप्तवंश के आदित्यसेनदेव के राजकाल का शाहपुर के मूर्ति का शिलालेख, जिसमें बलाधिकृत सालपक्ष का नालन्द (?) में इस मूर्ति के स्थापन करने का वर्णन है।

(११७)

इ० सं० ८२—प्रो० बे० ज० पृष्ठ ७७। गैरिधारा का खण्डित शिलालेख, जो कैलासकूटभवन में दिया गया था।

इस शिलालेख में युवराज स्कन्ददेव (?) का दूतक की भांति वर्णन है।

(११८)

इ० सं० १००—मुन्सिफ़ देवीप्रसाद तथा डाक्टर फुहरर की प्रतिलिपियों से। महाराज भोजदेव प्रथम का दौलतपुरा (अब जोधपुर) में दानपत्र जो महोदय (कन्नौज) में दिया गया था।

महाराज देवशक्ति; उस का पुत्र, भूयिकादेवी से, महाराज वत्सराज, उस का पुत्र, सुन्दरीदेवी से, महाराज नागभट, उसका पुत्र ईश्वरीदेवी से, महाराज रामभद्र, उसका पुत्र, अप्पादेवी से, महाराज भोज [प्रथम] [उपनाम प्रभास ?]—इस शिलालेख में युवराज नागभट का भी दूतक की भांति वर्णन है।

(११९)

इ० सं० ११९—इ० ए० भाग ९ पृष्ठ १७४। महाराजाधिराज शिवदेव द्वितीय का लगण्टोल (काटमाण्डु) में शिलालेख, जो कैलासकूटभवन में दिया गया था।

इस शिलालेख में राजपुत्र जयदेव का दूतक की भांति वर्णन है।

(९६०)

ह० सं० १४३—इ० ए० भाग ९ पृष्ठ १७१। महाराजाधिराज **शिवदेव द्वितीय** का काटमाण्डु में खण्डित शिलालेख।

(९६१)

ह सं १४५—इ० ए० भाग ९ पृष्ठ १७०। (काठमाण्डु के निकट) ललितपत्तन का खण्डित शिलालेख।

इस शिलालेख में युवराज विजयदेवका दूतक की भांति वर्णन है।

(९६२)

ह० स० १५१—प्रो० बे० ज० पृष्ठ ७९। काटमाण्डु में जैसि के निकट नहर में एक शिलालेख।

(९६३)

ह० सं० १५६—इ० ए० भाग ९ पृष्ठ ७९। **जयदेव परचक्रकाम** काटमाण्डु में शिलालेख—पांच श्लोकों को छोड कर, जिसे कि राजा ने स्वयं बनाया था, इसे बुद्ध कीर्ति ने सङ्कलित किया।

सूर्यवंश में लिच्छवि था, उसके कुल में सुपुष्प हुआ जो पुष्पपुर (पाटलिपुत्र में) जन्मा; उसके पीछे २३ राजाओं के उपरान्त जयदेव हुआ; उसके पीछे ११ राजाओं के उपरान्त वृपदेव हुआ; उसका पुत्र शंकरदेव; उसका पुत्र धर्मदेव; उसका पुत्र मानदेव (संख्या ९१९ तथा ९१८ देखो);उस का पुत्र महीदेव; उस का पुत्र वसन्तदेव (संख्या९१९) इसके पश्चात् इस शिलालेख में उदयदेव (जिनका ९९३ में युवराज की भांति वर्णन है) का उल्लेख है, उसका पुत्र नरेन्ददेव, उसका पुत्र शिवदेव द्वितीय (संख्या ९९९ और ९६०) जिसने मगध के आदित्यसेन की नातिन तथा मौखरि भोगवर्मन की पुत्री वत्सदेवी से विवाह किया, उनका पुत्र जयदेव परचक्रकाम जिसने राजा भगदत्त के वंशज और कलिङ्ग, कौशल, गौड़ उद्र आदि के राजा हर्षदेव की पुत्री राज्यमती, से विवाह किया।

(९६४)

ह० सं० १९९—इ० ए० भाग १९ पृष्ठ ११२। महाराज महेन्द्रपालदेव का दिघवा दुबौली में दानपत्र जो महोदय (कन्नौज में दिया गया था।

महाराज देवशक्ति; उसका पुत्र, भूयिकादेवी से, महाराज वत्सराज उसका पुत्र, सुन्दरीदेवी से, महाराज नागभट्ट, उसका पुत्र ईसटदेवी से, महाराज रामभद्र, उसका पुत्र अप्पादेवी से महाराज भोज प्रथम, उसका पुत्र, चन्द्रभट्टारिकादेवी से, महाराज महेन्द्रपाल [उपनाम भाक ?]

(९६५)

ह० सं० १८४—इ० ए० भाग २६ पृष्ठ २९। किसी विग्रह(?) के राजत्वकाल का पंजाब में शिलालेख।

(९६६)

ह० सं० १८८—इ० ए० भाग १९ पृष्ठ १४०। महाराज विनायकपालदेव का बङ्गाल एशियाटिक सोसायटी में दानपत्र जो महोदय (कन्नौज) में दिया गया था।

महेन्द्रपाल तक की वंशावली संख्या ९६४ में, उसका पुत्र, देहनागादेवी से, महाराज भोज द्वितीय, उसका भाई, अर्थात् महीदेवी से महेन्द्रपाल का पुत्र, महाराज विनायकपाल [उपनाम हर्ष ?]

(९६७)

ह० सं० २१८—इ० ए० भाग २६ पृष्ठ ३१—खजुराहो की मूर्ति का शिलालेख।

(९६८)

ह० सं० २७६—ए० इ० भाग १ पृष्ठ १८६। कन्नौज के महाराजाधिराज रामभद्रदेव के उत्तराधिकारी महाराजाधिराज भोजदेव के राजत्वकाल का पेहेवा (पेहोआ) में शिलालेख।

(९६९)

ह० सं० ५६४—(या ५६२ ?)—इ० ए० भाग २६ पृष्ठ २३,

मदनपाल और देवपाल; देवपाल का पुत्र भीमपाल ; उसका पुत्र सूरपाल; उसका पुत्र अमृतपाल; उसका छोटा भाई लखणपाल । इस शिलालेख में शैव योगी वर्मशिव (जिसका पुर्व निवास अणहिल पाटक में था), मूर्ति गण और ईशान शिव (जो हरियाण देश में सिंह पल्ली के निवासी वसावण का सबसे बड़ा पुत्र था) का भी वर्णन है

(६२८)

इ० ए० भाग १६ पृष्ठ ९९ । महाराज **रुद्रदास** का शिवपुर (खान्देश में) खण्डित दानपत्र ।

(६२९)

ज० बा० ए० सो० भाग १६ पृष्ठ ९० । राजा मानाङ्क के प्रपौत्र देवराज के पौत्र तथा भविष्य के पुत्र राष्ट्रकूट **अभिमन्यु** का दानपत्र जिसमें एक दान का, जो (किसी जयसिंह के सामने जो कि कोइ हरिवत्स का दण्डप्रणेता वर्णन किया गया है) मानपुर में दिया गया था, वर्णन है ।

(६३०)

आ० सा० वे० इ० भाग ४ पृष्ठ १३३ । अजण्टा का कुछ नष्ट शिलालेख जिसमें बौद्ध योगी बुद्धभद्र का एक गुहा में मन्दिर बनवाने का वर्णन है । इस शिलालेख में राजा **अश्मक** के मंत्री भव्विराज और देवराज का तथा योगी स्थविर अचल का भी वर्णन है ।

(६३१)

गु० इ० पृष्ठ २८० । साञ्ची (भूपाल राज्य में) के खण्डित स्तूप का शिलालेख । ऐसा जान पड़ता है कि इसमें गोशूर सिंहबल के पुत्र विहारस्वामिन रुद्र....के इस स्तूप को दान करने का वर्णन है ।

(६३२)

गु० इ० पृष्ठ १९३ । आरङ्ग (मध्यप्रदेश में, अब नागपुर म्यूजियम) में **महा जयराज** का दानपत्र जो शरभपुर में दिया गया था ।

(६३३)

गु० इ० पृष्ठ १९७ । महा-सुदेवराज का रायपुर (मध्यप्रदेश में, अब नागपुर म्युजियम) में दानपत्र जो शरभपुर में दिया गया था ।

(६३४)

ज० ब० ए० सो० भाग ३५ पृष्ठ १९६ । महा सुदेवराज के सम्बलपुर (मध्यप्रदेश में) में प्रथम और द्वितीय दानपत्र जो शरभपुर में दिए गए थे ।

(६३५)

ज० ब० ए० सो० भाग १७ पृष्ठ ६९ । उदयपुर (ग्वालियर) का शिलालेख जिसमें सूर्य की स्तुति है ।

(६३६)

आ० स० इ० भाग २१ । कालञ्जर की पहाड़ी पर शिलालेख। इसमें पाण्डव वश के एक राजा **उदयन** का वर्णन है ।

(६३७)

ए० इ० भाग ४ पृष्ठ २५७ । नागपुर म्यूजियम के एक खण्डित शिलालेख की नोटिस, जिसका एक लीथोग्राफ तथा अनुवाद ज० बा० ए० सो० भाग १ पृष्ठ १५१ में दिया है । इस शिलालेख में पहिले एक राजा **सूर्यघोष** का उल्लेख है; उसके बहुत पीछे पाण्डव वश के **उदयन** हुए, उसके चार पुत्र थे जिसमें सब से बडा इन्द्रबल (?) और सब से छोटा भावदेव था जिन्हें रण के सारन और चिन्तादुर्ग भी कहते हैं । इसे भास्कर भट्ट ने सङ्कलित किया ।

(६३८)

गु० इ० पृष्ठ २९४। । पाण्डु वश के इन्द्रबल के पुत्र नन्नदेव के पुत्र कोसलाधिपति राजा **तिव्वरदेव (महाशिवतिव्वरराज)** का राजिम (मध्य प्रदेश में) में दानपत्र जो श्रीपुर में दिया गया था।

मदनपाल और देवपाल; देवपाल का पुत्र भीमपाल ; उसका पुत्र सूर-पाल; उसका पुत्र अमृतपाल; उसका छोटा भाई लखणपाल । इस शिला-लेख में शैव योगी धर्मशिव (जिसका पूर्व निवास अणहिल पाटक में था), मूर्ति गण और ईशान शिव (जो हरियाण देश में सिंह पल्ली के निवासी वसावण का सबसे बड़ा पुत्र था) का भी वर्णन है

(६२८)

इ० ए० भाग १६ पृष्ठ ९९। महाराज रुद्रदास का शिवपु (खान्देश में) खण्डित दानपत्र।

(६२९)

ज० बा० ए० सो० भाग १६ पृष्ठ ९०। राजा मानाङ्क के प्रपौत्र देवराज के पौत्र तथा भविष्य के पुत्र राष्ट्रकूट अभिमन्यु का दानपत्र जिसमें एक दान का, जो (किसी जयसिंह के सामने जो कि कोइ हरि-घस का दण्डप्रणेता वर्णन किया गया है) मानपुर में दिया गया था, वर्णन है।

(६३०)

आ० सा० वे० इ० भाग ४ पृष्ठ १३३। अजण्टा का कुछ नष्ट शिलालेख जिसमें बौद्ध योगी बुद्धभद्र का एक गुहा में मन्दिर बनवाने का वर्णन है। इस शिलालेख में राजा अश्मक के मंत्री भवि-राज और देवराज का तथा योगी स्थविर अचल का भी वर्णन है।

(६३१)

गु० इ० पृष्ठ २८०। साञ्ची (भूपाल राज्य में) के खण्डित स्तूप का शिलालेख। ऐसा जान पड़ता है कि इसमें गोशूर सिंहबल के पुत्र विहारस्वामिन रुद्र....के इस स्तूप को दान करने का वर्णन है।

(६३२)

गु० इ० पृष्ठ १९३। आरङ्ग (मध्यप्रदेश में, अब नागपुर म्यूजियम) में महा-जयराज का दानपत्र जो शरभपुर में दिया गया था।

(१३३)

गु० इ० पृष्ठ १९७ । महा-सुदेवराज का रायपुर (मध्यप्रदेश में, अब नागपुर म्युजियम) में दानपत्र जो शरभपुर में दिया गया था ।

(१३४)

ज० ब० ए० सो० भाग ३९ पृष्ठ १९६ । महा सुदेवराज के सम्बलपुर (मध्यप्रदेश में) में प्रथम और द्वितीय दानपत्र जो शरभपुर में दिए गए थे ।

(१३५)

ज० ब० ए० सो० भाग १७ पृष्ठ ६९ । उदयपुर (ग्वालियर) का शिलालेख जिसमें सूर्य की स्तुति है ।

(१३६)

आ० स० इ० भाग २१ । कालञ्जर की पहाड़ी पर शिलालेख। इसमें पाण्डव वश के एक राजा उदयन का वर्णन है ।

(१३७)

ए० इ० भाग ४ पृष्ठ २५७ । नागपुर म्यूजियम के एक खण्डित शिलालेख की नोटिस, जिसका एक लीथोग्राफ तथा अनुवाद ज० बा० ए० सो० भाग १ पृष्ठ १५१ में दिया है । इस शिलालेख में पहिले एक राजा सूर्यघोष का उल्लेख है, उसके बहुत पीछे पाण्डव वश के उदयन हुए, उसके चार पुत्र थे जिसमें सब से बड़ा इन्द्रबल (?) और सब से छोटा भावदेव था जिन्हें रण के सारन और चिन्तादुर्ग भी कहते हैं । इसे भास्कर भट्ट ने सङ्कलित किया ।

(१३८)

गु० इ० पृष्ठ २९४ । पाण्डु वश के इन्द्रबल के पुत्र नन्नदेव के पुत्र कोसलाधिपति राजा तिवरदेव (महाशिवतिवरराज) का राजिम (मध्य प्रदेश मे) में दानपत्र जो श्रीपुर में दिया गया था ।

के राजसाही जिले में, अब कलकत्ता म्यूजियम) में शिलालेख । इसे उमापतिधर ने सङ्कलित किया और मनदास के पोत्र तथा बृहस्पति के पुत्र राणक शूलपाणि ने खोदा ।

चन्द्रवंश में वीरसेन तथा अन्य, दक्षिणी अनुशासक थे । उस सेन वंश में सामन्तसेन हुआ; उसका पुत्र हेमन्तसेन जिसने यशोदेवी से विवाह किया; उनका पुत्र विजयसेन (जिसने नान्य, वीर आदि राजाओं को पराजित किया) ।

(६७०)

ज० ब० ए० सो० भाग ४४ पृष्ठ ११ । महाराजाधिराज बल्लालसेन देव के उत्तराधिकारी महाराजाधिराज लक्ष्मणसेनदेव का तरपन्दिघी में दानपत्र जो विक्रमपुर में दिया गया था ।

चन्द्रवंश के सेन कुल में हेमन्त हुआ; उसका पुत्र विजयसेन; उसका पुत्र बल्लालसेन; उसका पुत्र लक्ष्मणसेन ।

(६७१)

ज० ब० ए० सो० भाग ७ पृष्ठ ४२ । गौड़ाधिपति महाराजाधिराज लक्ष्मणसेनदेव के उत्तराधिकारी, गौड़ाधिपति महाराजाधिराज विश्वरुपसेनदेव का बेकरगञ्ज में दानपत्र जो जम्बुग्राम के निकट दिया गया था ।

चन्द्रवंश में विजयसेन; उसका पुत्र बल्लालसेन; उसका पुत्र लक्ष्मणसेन जिसने........(?) से विवाह किया; उनका पुत्र विश्वरुप (विश्वरुपसेन)

(६७२)

ज० ब० ए० सो० भाग ६५ पृष्ठ ९ । गौड़ाधिपति महाराजाधिराज लक्ष्मणसेनदेव के उत्तराधिकारी, गौड़ाधिपति महाराजाधिराज विश्वरुपसेनदेव का मदनपाड में दानपत्र जो फल्गुग्राम के निकट दिया गया था ।

(६७३)

प्रो० ब० ए० सो० १८८९ पृष्ठ ९१। राजा (नृपति) देव-खड्ग का दक्क (अशरफपुर अब बंगाल एशियाटिक सोसायटी) में दानपत्र।

(६७४)

ज० ब० ए० सो० भाग ९ पृष्ठ ७६७। प्राग्ज्योतिष के महा-राजाधिराज वनमालवर्मदेव का तेजपुर (आसाम) में दानपत्र।

आदिवराह (विष्णु) और पृथ्वी से नरक उत्पन्न हुए, उसके पुत्र भगदत्त और वज्रदत्त। भगदत्त के वंश में प्रालम्भ जिसने जीवदा से विवाह किया; उनके पुत्र हर्जर जिसने तारा से विवाह किया, उनका पुत्र वनमाल।

(६७५)

प्रो० ब० ए० सो० १८८० पृष्ठ १४८। केशवदेव का सिल्हेत (आसाम) में दानपत्र।

चन्द्रवंश में खरवाण (?), उसका पुत्र गोकुल (? गोल्हण), उसका पुत्र नारायण, उसका पुत्र गोविंद-केशवदेव।

(६७६)

प्रो० ब० ए० सो० १८८० पृष्ठ १९२। ईशानदेव का सिल्हेत (आसाम) में दानपत्र जिसे दासवंश के माधव ने संकलित किया।

चद्रवंश में गोकुल (? गोल्हण); उसका पुत्र नारायण, उसका पुत्र केशवदेव; उसका पुत्र ईशानदेव।

(६७७)

ज० ब० ए० सो० भाग ४० पृष्ठ १६९ भञ्जवंश के कोट्टभञ्ज के पुत्र दिग्भञ्ज के पुत्र रणभञ्जदेव का रामझाटी (उरीसा में, अब कलकत्ता म्यूजियम) में दानपत्र।

(१७८)

ज० व० ए० सो० भाग ४० पृष्ठ १६८। भञ्जवंश के रणभञ्जदेव, जो कि यहां पर कोट्टभञ्ज का पुत्र वर्णन किया गया है, के पुत्र **राजभञ्जदेव** का बामहृगटी (अब कलकत्ता म्यूजियम) में दानपत्र।

(१७९)

ज० व० ए० सो० भाग ६ पृष्ठ ६६९। भञ्जवंश के शत्रुभञ्जदेव के पौत्र तथा रणभञ्जदेव के पुत्र **नेतृभञ्जदेव** का गूंमुर (गंजम जिले में) में दानपत्र।

(१८०)

ज० व० ए० सो० भाग ५६ पृष्ठ १५९। भञ्जवंश के न (?) रणभञ्जदेव के परपौत्र, दिव (?) भञ्जदेव के पौत्र तथा शिलीभञ्जदेव की पुत्र महाराज **विद्याधरभञ्जदेव** का उरीसा (?) में दानपत्र।

(१८१]

ए० इ० भाग ३ पृष्ठ ३४१। चंद्रवंशी महाराजाधिराज शिवगुप्त देव के उत्तराधिकारी, त्रिकलिंगाधिपति महाराजाधिराज **महा-भवगुप्त राजदेव [प्रथम] जनमेजयदेव** का पटना (अब बंगाल एशियाटिक सोसायटी) में दानपत्र जो कटक में दिया गया था।

(१८२)

ए० इ० भाग ३ पृष्ठ ३४७। चन्द्रवंशी महाराजाधिराज शिवगुप्त देव के उत्तराधिकारी, त्रिकलिङ्गाधिपति महाराजाधिराज **महा-भवगुप्त देव [प्रथम]** का कटक (कटक या चौदवार उरीसा में) में दानपत्र जो कटक में दिया गया था।

(६८३)

प्रो० ब० ए० सो० १८८२ पृष्ठ ११ तथा ए० इ० भाग ३ पृष्ठ ३४६ । महाराधिराज महा-भवगुप्तदेव [प्रथम] का उसी समय का कटक (या चौदवार, अब बङ्गाल एशियाटिक सोसायटी) में दूसरा दानपत्र ।

(६८४)

ए० इ० भाग ३ पृष्ठ ३४६ । महाराजाधिराज महा-भवगुप्तदेव [प्रथम] का उसी समय के कटक (?) में दूसरे दानपत्र की नोटिस।

(६८५)

ए० इ० भाग ३ पृष्ठ ३५१ तथा ज० ब० ए० सो० भाग ४६ पृष्ठ १५३ । चन्द्रवंशी महाराजाधिराज महा-भवगुप्तराजदेव [प्रथम] जनमेजय के पुत्र तथा उत्तराधिकारी, त्रिकलिङ्गाधिपति महाराजाधिराज महा-शिवगुप्तराजदेव ययातिराजदेव का कटक में दानपत्र जो विनीतपुर में दिया गया था ॥

(६८६)

ए० इ० भाग ३ पृष्ठ ३५६ । चन्द्रवंशी महाराजाधिराज महा-शिवगुप्तराजदेव ययाति (जो जनमेजय का पुत्र था) के पुत्र तथा उत्तराधिकारी त्रिकलिंगाधिपति महाराजाधिराज महा-भवगुप्तराजदेव [द्वितीय] भीमरथदेव का कटक (?) में दानपत्र जो ययातिनगर में दिया गया था ।

(६८७)

ए० इ० भाग ४ पृष्ठ २५८ । ययातिनगर के चन्द्रवंशी महाराजाधिराज महा शिवगुप्तराजदेव के उत्तराधिकारी त्रिकलिंगाधिपति महाराजाधिराज महा-भवगुप्तराजदेव (द्वितीय) के राजत्काल का, मथुर-वंश के वोडा (?) के पुत्र राणक पुञ्ज का कुदोपलि (मध्यप्रदेश के

सम्बलपुर जिले में अत्र नागपुर म्यूजियम) में दानपत्र जो था (!) मण्डापाटी में दिया गया था ।

(१८८)

ज० ब० ए० सो० भाग ६४ पृष्ठ १२९ । महाराज कुलस्तम्भदेव या रल (ण !) स्तम्भदेव (!) का पुरी (उरीसा में) में दानपत्र ।

(१८९)

ए० इ० भाग ३ पृष्ठ ३१३ । महाराजाधिराज विजयराजदेव का इण्डिया ओफिस में दानपत्र जो कटक में दिया गया था ।

इस शिलालेख में महाराज्ञी लच्छिदेवी तथा हंसिर्गादेवी का वर्णन है।

(१९०)

ज० ब० ए० सो० भाग ७ पृष्ठ ५५१ । त्रिकलिंगाधिपति महाराजाधिराज उद्योतकेसरिराजदेव के राजत्काल का भुवनेश्वर (उरीसा में) में किञ्चित् नष्ट शिलालेख । इसे भट्टपुरुषोत्तम ने सङ्कलित किया ।

इस शिलालेख के छपे हुए वर्णन के अनुसार इसमें निम्न लिखित उल्लेख है चन्द्रवंशी जनमेजय; उसका पुत्र दीर्घरव और उसका पुत्र अपवार जो निरपत्य मर गया; उसके पीछे विचित्रवीर्य (जनमेजय का दूसरा पुत्र), उसका पुत्र अभिमन्यु, उसका पुत्र भण्डीहर, और उसका पुत्र उद्योतकेसरिन् जिसकी माता सूर्यवंश की कोलावती थी।

(१९१)

ज० ब० ए० सो० भाग ६ पृष्ठ ८९ । भुवनेश्वर (उरीसा में) का शिलालेख जिसमें हरिवर्मदेव के मन्त्री भट्टभवदेव उपनाम बालवलभीभुजङ्ग का प्रशस्ति है । इसे वाचस्पति ने सङ्कलित किया ।

(१९२)

ज० ब० ए० सो० भाग ६ पृष्ठ २८० तथा भाग ६६ पृष्ठ १८

त्रिकलिंग के गग अनियङ्कभीम के समय का भुवनेश्वर (उरीसा में) में शिलालेख ।

इस शिलालेख में पहिले (गौतमगोत्र के) राजपुत्र द्वारदेव का वर्णन है । उसका पुत्र मूलदेव, उसका पुत्र आहिराम, और उसके पुत्र और पुत्री स्वपनेश्वर और सुरमा, इसके पश्चात् चन्द्रवंशी चोडगग, उसका पुत्र राजराज जिसने सुरमा से विवाह किया, और राजराज का छोटा भाई अनियङ्कभीम ।

(१९३)

इ० ए० भाग १ पृष्ठ ३५५ । महाराज पुरुषोत्तमदेव का बळसोर (उरीसा में) में दानपत्र ।

(१९४)

ए० इ० भाग ४ पृष्ठ १९९ । कलिंग के महिन्द्रवर्मदेव के पुत्र गग महाराजाधिराज महाराज पृथिवीवर्मदेव का गञ्जम में दानपत्र जो श्वेतक (?) में दिया गया था ।

(१९५)

ए० इ० भाग ३ पृष्ठ ४३ । माधववर्मन का छुगुड (जिला गञ्जम में (अब मद्रास म्यूजियम) में दानपत्र जो कैंगोद में दिया गया था ।

इस शिलालेख में ' कलिंगदेश में सुप्रसिद्ध ' पुलिन्दसेन, शैलोद्भव, रणभीत, उसके पुत्र सैन्यभीत (प्रथम) (यशोभीत,) उसके पुत्र सैन्यभीत (द्वितीय) , और उसके पुत्र माधववर्मन का वर्णन है ।

(१९६)

ए० इ० भाग ४ पृष्ठ १४४ । कलिंगाधिपति महाराज चण्ड वर्मन का कोमर्ति (गञ्जम जिले में) में दानपत्र जो सिंहपुर में दिया गया था ।

प्रभञ्जनवर्मन का चिकाकोल (जिला गञ्जम में, अब मद्रास म्यूजि-यम में) में दानपत्र जो शिरपल्लि में दिया गया था।

(६९८)

गं० सं० (?) ८७–ए० इ० भाग ३ पृष्ठ १२८। कलिंग के गंग महाराज इन्द्रवर्मन राजसिंह का अच्युतपुरम (जिला गञ्जम में, अब मद्रास म्यूजियम में) में दानपत्र जो कलिंगनगर में दिया गया था।

(६९९)

गं० सं० (?) ९१–इ० ए० भाग १६ पृष्ठ १३४ तथा इ० इ० नम्बर १८। कलिंग के गंग महाराज इन्द्रवर्मन राजसिंह का मर्लाकिमेडि (जिला गञ्जम में, अब मद्रास म्यूजियम में) में दानपत्र जो कलिंग नगर में दिया गया था।

(७००)

गं० सं० (?) १२८–इ० ए० भाग १३ पृष्ठ १२०। कलिङ्गगङ्ग महाराज इन्द्रवर्मन का चिककोल (जिला गञ्जम में, अब मद्रास म्यूजियम में) में दानपत्र जो कलिङ्ग नगर में दिया गया था।

(७०१)

गं० सं० (?) १४६ (?)–इ० ए० भाग १३ पृष्ठ १२३। [कलिङ्ग के] गङ्ग महाराज इन्द्रवर्मन का चिककोल (जिला गञ्जम में, अब मद्रास म्यूजियम में) में दानपत्र जो कलिङ्ग नगर में दिया गया था।

(७०२)

गं० सं० (?) १८३–ए० इ० भाग ३ पृष्ठ १३१। कलिंग के गुणार्णव के पुत्र गंग महाराज देवेन्द्रवर्मन का चिककोल (जिला गञ्जम में, अब मद्रास म्यूजियम में) में दानपत्र जो कलिंगनगर में दिया गया था।

(७०३)

गं० सं० २५४–कलिंग के महाराज अनन्तवर्मन के पुत्र गंग देवेन्द्रवर्मन का विजगपतम में दानपत्र जो कलिंगनगर में दिया गया था।

(७०४)

गं० सं० ५१ (?)—इ० ए० भाग १३ पृष्ठ २७५ । महाराज अनन्तवर्मदेव के पुत्र गग देवेन्द्रवर्मदेव का चिकक्कोल (जिला गञ्जम में, अब मद्रास म्यूजियम में) में दानपत्र जो कालिंग नगर में दिया गया था ।

(७०५)

गं० सं० ३०४—ए० इ० भाग ३ पृष्ठ १८ । महाराज राजेन्द्रवर्मन के पुत्र गग अनन्तवर्मदेव का अल्मण्ड (जिला विजग पतम में) में दानपत्र जो कलिंगनगर में दिया गया था ।

(७०६)

गं० सं० ३५१—इ० ए० भाग १४ पृष्ठ ११ । कलिंग के महाराज देवेन्द्रवर्मन के पुत्र गंग सत्यवर्मदेव का चिकक्कोल (जिला गञ्जम में, अब मद्रास म्यूजियम में) में दानपत्र जो कलिंगनगर में दिया गया था ।

(७०७)

ए० इ० भाग ३ पृष्ठ २२२ । गग महाराजाधिराज वज्रहस्तदेव के राजकाल का, चोल कामदिराज के पुत्र गंग दारपराज का पर्ला किमेडी (जिला गञ्जम, अब मद्रास म्यूजियम में) में दानपत्र जो कलिंगनगर में दिया गया था ।

(७०८)

इ० ए० भाग ५ पृष्ठ १७६ । महाराज चण्डवर्मन के सब से बड़े पुत्र शालङ्कायन महाराज विजयनन्दिवर्मन का कोल्लेरु झील (जिला गोदावरी) का दानपत्र जो वेंगीपुर में दिया गया था ।

(७०९)

ए० इ० भाग ४ पृष्ठ १९५ । विष्णुकुण्डि (वंश) के महाराज

प्राचीन-लेख-मणि-माला

की

अनुक्रमणिका ।

अ

अकबर वा अकब्बर वा अकबर, सम्राट १२६, १२७, १२८, १२९

अङ्गरेज १४५, १४६

अचल, बौद्ध स्थविर ६३०

अचल वर्मन समरपहल, चिहलपुराधिपति ६२२

अच्युत, आर्यावर्त का एक राजा ५१०

अड्डक, घापाधिपति १०२

अजयपाल, चौलुक्य राजा १६७, १७०, ११९, ५४८,

[अ] जयपाल, राजा ११४

अजय वर्मन, परमार राजा २०४

अजय सिंह, गुहिल राजा १०९

अजय सिंह, कलचुरि राजा ४४३

अजित, शूरसेन का नायक ६११

अजितमान, नायक ६५०,

अझिमत देवी , उच्चकल्पाधिपति व्याघ्र की रानी ४००

अणहिल, नड्डूल का चाहमान नायक १४८

अणहिला, मल्हण की रानी ५१

अणहिलपाटक वा अणहिलपुर वा अणहिल्लपाटक वा अणहिल्लवाटक, नगर (अणहिलवाड़) ५०, ६१, ७५, १६६, १६९, २०१, २१५, २१६, २१८, २२१, २२५, २२६, २३०, ७५२, ६०४, ६२७,

अतियधावल वा यशोबल, महपति वंश का एक पुरुष ५५

अद्वैत दात, १८१

अर्जुन कृष्णराज (वा कृष्णराज ?) नायक ६४

अधिराज (?) नायक २०५

अनङ्ग, नायक १०१

अनङ्ग भीम, पूर्वी गङ्ग का राजा १८६

अनङ्ग भीम, वा अनियङ्क भीम, पूर्वी गङ्ग का राजा १८८, ६६२

अनन्त देवी प्रथम कुमार गुप्त की रानी ५३६,

अनन्त वर्मन्, पूर्वी गङ्ग का राजा ७०३, ७०४, ७०५

अनन्त वर्मन् मौखरि राजा ५७७, ५०८

अनन्त वर्मन्-चोडगङ्ग, पूर्वी गङ्ग का राजा ३७८, ३७६, ३८०
अनन्त वर्मन्, कोलाहल, गङ्ग राजा ३८६
अनियङ्क भीम वा अनङ्ग भीम, पूर्वी गङ्ग का राजा ३८६, ६६२
अनियङ्क भीम, पूर्वी गङ्ग के एक यजूहत्त का उपनाम ३७६
अन्तर्वेदी, देश ४७०
अपराजित, गुहिल राजा ५
अपराजित, कच्छपघाट देवपाल का उपनाम ८१
अपवार, नृकलिङ्ग का राजा ६६०
अप्पा देवी, महोदयाधिपति रामभद्र की रानी ५५८ ५६४,
अप्रतीहार (वा मद प्रतीहार (?) नगर १०१
अप्सरा प्रिया, अजित की रानी ६११
अप्सरो देवी, राज्यवर्धन प्रथम की रानी ५४६
अभयचन्द्र जैन सूरि ५६२
अभयदत्त ५
अभयदेव, उमङ्गाधिपति ३०८
अभिमन्यु, कच्छपघाट का राजा ७४
अभिमन्यु, राष्ट्रकूट का नायक ६२६
अभिमन्यु, त्रिकलिङ्गाधिपति ६६०
अभिनवसिद्धराज, उपनाम चौलुक्य भीम द्वितीय १६६
अभिनवसिद्धराज, उपनाम चौलुक्य जयन्त सिंह २११
अमर, कवि २६५
अमरदेव ३२
अमर मल्ल वा नरेन्द्रमल्ल, नेपाल का राजा ५८६, ५८७
अमर सिंह, मेवाड़ का राजा ३३१
अमरेश्वर तीर्थ, स्थान २०७
अमोघ वर्ष, उपनाम परमार वाक्पतिराज ४६
अम्बा, वीरबाहु की रानी ७१४
अमृतपाल, कोन्नमपृता राष्ट्रकूट नायक ६२७
अमृतराज, राष्ट्रकूट नायक ३७३
अयोध्या, नगर ५३२, ६५०
अरिसिंह, गुहिल राजा २६०, ३०५, ३०६, ३१६
अर्जुन, कच्छपघाट राजा ७४
अर्जुन वा अर्जुन देव, बघेला राजा २३६, २६२, २६८
अर्जुन वा अर्जुन वर्मन, परमार राजा २०५, २०६, २०७
अर्जुन सिंह, गढ़ाविहा का नायक ३४१
अर्णोराज (वा आरण्यराज ?) नायक ६४
अर्णोराज शाकम्भरी का चाहमान राजा १३६, १८३

अर्णोराज वेघला राजा २७०, ३६३
अर्बुद, पर्वत (आबू) २७५
अलावदीन या अल्लावदीन सुलतान (अलाउद्दीन मसऊद) २९३, ३०९
अल्हण देवी, गयकर्ण की रानी ४३६, ४४३, ४५२
अल्लट, गुहिल राजा २४७, २६०, ३०९
अल्लट शैव योगी ४१
अल्लावदीन, अर्थात् अलावदीन ३०९
अवधुन्क, नगर या देश ५०
अवनिजनाश्रम, पुलकेशिराज का उपनाम ४२५
अवनिवर्मन, चौलुक्य नायक ४५०
अवन्ति, देश ३६२
अवन्ति या अवन्तिवर्मन, मत्तमयूर नायक ४५०, ४५१
अवन्तिवर्मन, मगध (?) का राजा ५७४
अवल्लदेव, शाकम्भरी का चाहमान राजा १४१
अंशुवर्मन, नेपाल का राजा ५०१ ५४७, ५५१, ५५२, ५५३, ५५४, ५५५
अश्मक, जाति ६३०
अशोकवल्ल सपादलक्ष का राजा ५१७ ५१८, ५१९
असमसदीन, सुलतान (शम्सुद्दीन अल्तमिश) २४२
अहिहय या हैहय ३०२
अहिराम, नायक ६१७
अहिवर्मन, नायक ७१९
आगिमाम, वश ६६८
आत्रेय गोत्र ४३५
आदि सिंह, मगध का राजा ६५०
आदित्य भोगिक, सान्धि विग्रहिक ४१३
आदित्य शक्ति, सेन्द्रकाधिपति ४२०
आदित्य सेन, मगध का गुप्त वंशी राजा ५५६, ५६३, ५७२, ५७३ ५७४
आदित्य वर्धन, कन्नौज का राजा ५४९
आदित्य वर्मन, राजा ६१७
आदित्य वर्मन मौखरि का राजा ५७६
आदिवराह, उपनाम कन्नौज का राजा भोज १९
आनन्दपुर नगर (आनन्द) ५२१
आमर्दक तीर्थनाथ, शैव योगी ४५१
आमू, कवि ४२
आमूका, नगर ४१०
आमू प्रसाद, गुहिल राजा २४७
आरण्यराज (या अर्णोराज ?) नायक ६४

आर्य वर्मन, सिद्ध पुर का नायक ६२२
आर्यावर्त, देश ५३०
आल्हण नडूल का चाहमान नायक १४०, १४८
आवल्लदेवी, कलचुरि कर्ण की रानी ४३१
आसट, राजा ६१९
आसतिका, नगर ८० ८६
आसफ खान (आसफ खा) ३४१
आसर्वा, कृष्णप की रानी ३५२
आसलदेव, बडगूजर का नायक २११
आसल देव, नलपुर का नायक २७०
आसाराज, नडूल का चाहमान नायक १४८
ओघदेव, उच्चकल्प का नायक ४०६

इ

इङ्गणपद्र, नगर (इङ्गणोड) १११
इज्जा देवी, मगध क विष्णु गुप्त की रानी ५७४
इन्दिरा, चोडगङ्ग की रानी ३८६
इन्द्रबल, नायक ६३७ ६३८, ३३९
इन्द्रभट्टारक, राजा वही जो इन्द्रभट्टारक वर्मन ७१०
इन्द्रभट्टारकवर्मन, विष्णुकुण्डिन का राजा ७०१
इन्द्ररथ, राजा ३५९
इन्द्रराज, राजा ६६०
इन्द्रवर्मन, पूर्वी गङ्ग का राजा ७००, ७०१
इन्द्रवर्मन राजसिंह, पूर्वी गङ्ग का राजा ६९८, ६९९
इन्द्राधिराज, नायक ७१०
इब्राहीम लोदी, सुल्तान ३२२
इटगण, राजा ६२५
इशानदेव, शैव योगी ६२७
ईशानवर्मन, मौखरि राजा ५७२, ५७६
ईशाम्रतिष्ठान, नगर १०२
ईश्वरगुप्त, ५५०,
ईश्वरवर्मन, मौखरियश का राजा ५७५, ५७६
ईश्वरवर्मन, सिंपपुर का नायक ६२२
ईश्वरा, सिंपपुर की राजकुमारी ६२२
ईसटादेवी, महोदय के नायक नागभट की रानी ५५८ ५६४,
ईसुक, चाहमान नायक १२

उ

उग्रसेन, गढ़ादेश का नायक १४१

उग्रसेन, पलक्क का राजा ७१०
उच्चहडनगर, २८८
उच्चकल्प, नगर ४०६ ४०७ ४०८, ४११, ५४१
उज्जयनी नगर (उज्जैन) ४६
उड्र देश (उड़ीसा) ५६३
उत्पलराज नायक ६४
उदयपुर (?) नगर २७६
उदयकर्णनि शाहू सिंह, नायक, ३८३
उदयदेव, नेपाल का युवराज तथा राजा ५५३ ५६३
उदयन, मागधक ६३६ ६३७, ६३९
उदयन कवि ६९७
उदयपुर नगर (ग्वालियर का उदयपुर) १५२
उदयमान, नायक ६५०
उदयवर्मन, परमार राजा १९७
उदयसिंह, चहमान राजा २०० २११ २३२ २४६ २५०, २५७
उदयसिंह, मड़ाईश का नायक ३४३
उदयसिंह, राजा २७५
उदया, रानी ४३३
उदयादित्य परमार राजा ६८ ७३ ८२, ८५, १२६, १७१, २०४ २११ ३६०, ३६१ ४१६, ४५१
उदयिन्, कवि १६
उद्योतकेसरिन्, त्रिकलिङ्ग का राजा ६९०
उद्धरण, ग्वालियर का तोमर नायक ३३७
उन्नभट, नायक १८, १९
उपगुप्ता, मौखरि ईश्वरवर्मन की रानी ५७६
उपेन्द्रगुप्त, नायक ६४६
उपेन्द्रराज परमार राजा ३५१
उमापतिधर, कवि ६६९
ऊमङ्गा, नगर (ऊगा) ३०८
ऊर्जयन्ततीर्थ, स्थान १४५

ए

एकनाथ, कवि ३०५
एरण्डपल्ल, नगर ५३०

क

ककरेडी (वही जो कक्करड़िका) नगर (ककेरि) ११४ २२८, २२९
कक्क प्रतिहार नायक, १३ ३४९
कक्करड़िका वही जो ककरेडी, ग्राम ४४०
कक्कुक, प्रतिहार नायक, ३३
कङ्कदेव, परमार नायक ७२

कच्छपघाट वा कच्छपारि, वंश ४७, ६५, ७४, ७६, ८३, ९८
कच्छुका, चन्देल हर्ष की रानी ३५, ५६
कट, नगर (कर्रा) ६२
कटक, वाराणसि कटक देखो
कटक, नगर ३९५, ६८१, ६८२, ६८९
कराहुल्ला, महिपराम की रानी १२
कदम्बगुहाधिवासिन, शैव योगी ३५१
कनौज नगर १४, १५, १६, १७, १८, २१, ३५, ४१, ४९, ६०, ७४, ७८, ८०, ८३, ८४, ८६, ८७, ८८, ८९ ९१, ९२, ९३, ९४, ९५, ९७, ९९, १००, १०१, १०२, १०३, १०४, १०७ १०९, ११० ११२, ११४, १२०, १२२, १२३, १२४, १२७, १२८, १३३, १३७, १४२, १५५, १५७, १५८, १६०, १६३, १६६, १६८, १६९, १७१, १७२, १७४, १७५, १७६, १७८, १८०, १८१, १८२, १८५, १८९, २१६ ३५०. ३५१, ५५८, ५६४, ५६६ ५६८, ५७१, ५७२, ६६०,
कन्ह, कौरग्राम का नायक ३७०
कन्यकुब्ज वा कन्याकुब्ज, नगर (कनौज), ७८, ८०, ३६१, ३७५
कपित्थिका, नगर ५९०
कपिलगजपति वा कपिलकुम्भिराज वा कपिलेन्द्रगजपाही, कटक का राजा ३९५
कपिलवर्धन, नायक ३२२
कमल वा कमल राज, कलचुरि का नायक ४३०, ४४४
कमलदेवी, मगध के देवगुप्त की रानी ५७४
कमलदेवी, नरसिंह तृतीय की रानी ३८८
कमलनयन, गढादेश का नायक ३४१
कमलराज वा कमल, कलचुरि का नायक ४३०, ४४४
कमा, देश ५७७
करिवर्ष, शालिवाहन का उपनाम ३१९
कर्ण, चौलुक्य राजा ७५, १३६, १९६
कर्ण, गढादेश का नायक ३४१
कर्ण, राजा ८०
कर्ण, राजा, गुर्जर राजाओं का पूर्वपुरुष ४१३
कर्ण कलचुरि राजा ८१, २३७, ३५५, ४२८, ४३१, ४३५ ४३६, ४५२, ४५३
कर्ण, बघेल नायक ३१८
कर्णत्रैलोक्यमल, वही जो चौलुक्य कर्ण ७२, १९६
कर्णाट, देश ७२
कर्मचन्द्र, त्रिगर्त का राजा ५९३
कर्मसिंह, भर्म का मंत्री २१०
कलचुति, वही जो कलचुरि ३०२
कलचुरि वंश ७१, ९७, १४७, १९४, ४२७ ४२८ ४३१, ४३५, ४३६, ४३७, ४४०, ४४२, ४४३, ४४८, ४४९, ४५०, ४५२, ४५३, ४५४, ४५५

कलिङ्ग, देश ३११, ३८६, ३८८, ३८९, ४४४, ५६३, ६६१, ६९४, ६९६, ६९७, ६९८, ६९९, ७००, ७०१, ७०२, ७०३, ७०६,
कलिङ्ग या कलिङ्गराज, कलचुरि नायक ४३०, ४४४
कलिङ्गनगर या कलिङ्गानगर, नगर (मुखलिङ्गम्) ३७६, ३७८, ३८०, ६९८, ६९९, ७००, ७०१, ७०२, ७०३, ७०४, ७०५, ७०६, ७०७
कलिङ्गराज या कलिङ्ग, कलचुरि नायक ४३०, ४४४
कलिङ्गलाङ्कुश, पूर्वीगङ्ग का राजा ३७१
कल्याणदेवी, वीरवर्मन की रानी २३०
कल्याण शाहि, ग्वालियर का तोमरवंशी नायक ३३७
कल्याण, कीरग्राम का नायक ३००
कवचशिव, शैव योगी ४५१
कस्तूरिदेवी, अनङ्गभीम की रानी ३८६
कस्तूरिका मोहनी, चोडगङ्ग की रानी ३६०, ३८६
काकनादबोट, नगर (सांचि) ४५१, ४६१
काच प्रथम और द्वितीय, नायक ६४६
काञ्ची, नगर ५३०
कान्तालि, नगर ७१०
कान्हडदेव, चन्द्रावती का चाहुमान नायक २८४
कान्हडदेव, चन्द्रावती का परमार नायक २११
कामदेव सिंह, कामदेश का नायक ५७३
कामरूप, देश ६६६
कामार्णव, पूर्वी गङ्ग का राजा ३७६, ३७१, ३८६
कायावतार, नगर ४२३
कारूपदेश ३४५
कार्तिकेयपुर, नगर ६२५
कार्मेयोय, नगर ४२२
कालञ्जर, नगर ५४, ६६, १०८, ११३, ११३, ११४ १६१, २११
कालभोज, गुहिल राजा २४७, २६०, ३०१
कालिका, नगर ५४
काशी, नगर (बनारस) १६१, १०१, ६२३
कौतुक, चाहुमान राजा ३०१
कीर, देश ३५
कीरग्राम, नगर ३००, ५११
कीर्तिपाल, राजा २७५
कीर्तिराज, लाटदेश का चौलुक्य (वा चालुक्य ?) नायक ३७३, ३७५,
कीर्तिराज, कच्छपघात वंश का राजा ७६
कीर्तिराज, राष्ट्रकूट वंशी नायक ६५२

कीर्तिवर्मन, चन्देल राजा ७१, ११३, २३७, ३५३, ३०४ ३०६ ३६१,
कीर्तिवर्मन, गुहिल राजा २६०, ३०१
कीर्तिवर्मन, ककरेंडी का नायक १९८, २२१, ४८०
कीर्तिसिंह, ग्वालियर का तोमर नायक ३३७
कुत्बुदी, सुलतान (कुत्बुद्दीन) २७४
कुन्दराज, राष्ट्रकूट नायक ३०३
कुबेर, देवराष्ट्र का राजा ५३०
कुमार गुप्त प्रथम, गुप्तवंशी राजा ३, ४६०, ४६१, ४६३, ४६४, ५३५, ५३६, ५३७, ५२
कुमार गुप्त द्वितीय, गुप्तवंशी राजा ५३९
कुमार गुप्त, मगध का गुप्त वंशी राजा ५७२
कुमार देव, उच्चकल्प का नायक ४०६
कुमार देवी, चन्द्रगुप्त प्रथम की रानी ४६०
कुमार देवी, घोषदेव की रानी ४०६
कुमारपाल, चौलुक्य राजा २११, १३५, १३६ १४०, १५०, १६०, २१६, २२०, ३१२,
५२५, ५४८
कुमारपाल, ककरेडी का नायक २७८
कुमारपाल, पालवंशी राजा ६६६
कुमारपाल ऊमड्डा का नायक ३०८
कुमारसिंह, गुहिल राजा २६०, ३०१
कुम्भकर्ण या कुम्भराज, गुहिल राजा ३००, ३०१, ३१४, ३१६, ३२०, ३२३, ३२५
कुम्भिराज, वही जो गजपति ३९५
कुलचन्द, गया का शासक २८१
कुलदेवी, ब्रह्मपाल वर्मन की रानी ७११
कुलभद, शूरसेन वंश का नायक ६११
कुलस्तम्भ या [रल (ण ?) स्तम्भ], नायक ६८८
कुलादित्य, नायक १७३
कुसुमेश्वर, नगर ४२२
कुस्थलपुर नगर ५३०
कुन्तराज, राजा १७९
कृत कीर्ति विजयपुर के एक नायक का मन्त्री ६२६
कृष्णगिरि, नगर (कर्णहरि) ४१२
कृष्णगुप्त, मगध का गुप्त वंशी राजा ५७२
कृष्णदास, नायक ६४६
कृष्णदेव गदारेस का नायक ३४१
कृष्णानन्दिन् कवि ६३९
कृष्णप, चन्देल का नायक ३५२

कृष्णराज (या अद्भुत कृष्णराज ?) नायक ६४
कृष्णराज कलचुरि (?) राजा ४४८
कृष्णराज चन्द्रावती का परमार नायक २२०
कृष्णराज परमार राजा ८६
कृष्णराज राष्ट्रकूट राजा कृष्ण द्वितीय ४२०
केयूरवर्ष वही जो कलचुरि युवराज प्रथम ४५७
केरल वंश ५३०
केल्हण नड्डूल का चाहमान राजकुमार १४०
केशव वही जो गोविन्द-केशव ६७० ६७६
केशिराज ऊमट्टा का नायक ३०८
कैहाव नगर ६९५
कैलासकूट भवन नेपाल में राजभवन ५५१ ५५२ ५६३ ५६५ ५६७ ५६९
कोकल्ल या कोक्कल प्रथम कलचुरि राजा ४२८ ४३० ४५०
कोकल या कोक्कल द्वितीय कलचुरि राजा ४२८ ४३१ ४३६ ४५२
कोकल या काकल महपाल वंश का पुरुष ९९
कोट्टमज्ज नायक ६७७ ६७८
कोड हारवरस ६२९
कोड्डूर पहाड़ी ५३०
कोण देवी आदित्य सेन की रानी ५७२ ५७३ ५७४
कोण्डराज ६४१
कोण्डवाड्ड नगर ३९५
कोमा मण्डल प्रदेश ४३०
कोलाहल या कोलाहल अनन्त वमन गङ्ग का राजा ३०१ ३८६
कोलाहलपुर नगर (कोलार) ३०१ ३८६
कौलावती ब्रह्मास्त्र सेन की माता ६९०
कौसल या कोशल वंश ५३० ५६३ ६३८
कौरव वंश २२८ ४४०
कौशाम्ब मण्डल प्रदेश ६२
क्षितिपाल कन्नौज का राजा ३१ ३९ ३५१
क्षेत्र या क्षेमसिंह या क्षात्रसिंह गुहिल राजा ३०४ ३०९ ३१६
क्षेत्रसिंह राजकुमार २५७
क्षमसिंह या क्षेमसिंह गुहिल राजा २६० ३०९

ख

खंगार (पंगार) राजा २७१
खड्गार (पड्गार) चूडासमा वंशी नायक २९४
खदरा नगर ९१
खरग्रह प्रथम वलभी राजा ५०० ५०६ ५१४

खरग्रह द्वितीय धर्मादित्य, वल्लभी राजा ५०७ ५०८
खरग्रह वल्लभी राजकुमार ४९०, ५११, ५१२, ५१३
खरवाण (?), नायक ६७०
खल्वाटिका, नगर (खजारि) ३०२
खस, जाति ५९९
खेटक, ग्राम (कैर) ५०८, ५१६, ५१७
खतसिंह वा क्षेत्र वा क्षेत्रसिंह, गुहिल राजा ३०५, ३०९, ३१६
खमसिंह वा क्षमसिंह, गुहिल राजा २६०, ३०९
खुडड गडीय, ग्राम ४८१
खुम्माण (घुम्माण), गुहिल राजा २४७ २६०, ३०९
खाजूक वा धाजरमन, ककरडा का नायक १९४, २२८
खोट्टिग, राष्ट्रकूट वंशी नायक ३५९

ग

गगन सिंह, कच्छपघाट वंशी राजा ९८
गङ्ग वा गाङ्ग, वंश ३७६, ३७८, ३७९, ३८०, ३८६, ३८८, ३८९, ६९२, ६९४, ६९८, ७००, ७०१, ७०२, ७०३, ७०४, ७०५, ७०६, ७०७
गङ्गदेव, नेपाल का राजा ५८६
गङ्गाधर, मगब्राह्मण कवि ३८१
गङ्गपाडी, देश ३७९
गङ्गा, नदी ६० ८३ ९४, १०१ १०२, १८०, १८१, १८२
गजपति कटक के राजा कपिल का उपनाम ३९९
गजरथपुर, नगर ६००
गढादेश, देश ३४१
गण्ड चन्देल राजा ३५३, ३५४, ३५६
गण्डका, नदी ७१
गणप.ल (?) नायक ३६१
गणपति, नलपुर का नायक २६७, २७०
गणपति, ग्वालियर का तोमर नायक ३३७
गणपति नाग, आर्यावर्त का राजा ५३०
गलणति व्यास, कवि २४५
गया, नगर १७३, २८१ ५९७, ६६८
गयाकर्ण, वा गयकर्ण, कलचुरि राजा ४३५, ४३६, ४४२, ४४३, ४५२, ४५३
गयासुद्दीन, सुल्तान (गियासुद्दीन बल्बन) २४२, २५३
गयाभुमत, ग्राम (कुमार कोट) ४७१
गाङ्गेय, गङ्ग का राजा ३७९, ३८६
गाङ्गेय देव, कलचुरि राजा ३५३, ४२७, ४२८, ४३१, ४३६, ४५२
गाजन, नायक ४३३

गाङ्गेय सौन्दत्ती का नायक २१८
गाधिनगर या गाधिपुर नगर (कन्नौज) ७८ ९६
गारडन ड्यूक ८० ८३ ८०
गियासुद्दीन बलबन सुल्तान २४७ २५३
गिरिजा देवी पुनपाल की रानी ३६२
गीर्वाण युद्ध विक्रम शाह नेपाल का राजा ३४४
गुणपुर ग्राम ४१
गुणमहार्णव पूर्वी गङ्ग का राजा ३१६
गुणराज नायक २१
गुणार्णव पूर्वी गङ्ग का राजा ३०० ७०२
गुणावलोक नाग का उपनाम ६०२
गुण्डम पूर्वी गङ्ग का राजा ३०८ ३०९
गुप्त राजा ४६०
गुप्तराजा (चन्द्रगुप्त प्रथम और द्वितीय कुमारगुप्त प्रथम और द्वितीय नरसिंहगुप्त
पुरुगुप्त समुद्रगुप्त और स्कन्दगुप्त देखो)
गुप्तराजा मगध का ७०६ ७८७ ७०३ ७०४
गुर्जर वंश ३६६ ३६७ ३६८ ४१३ ४१४ ४१५ ४१६ ४१७ ४१८ ४२३ ४२४
गुर्जर प्रतिहार वंश ३१
गुवाडाघट्ट स्थान १९७
गुहसेन वलभी राजा ३६७ ४८० ४८६ ४८७ ४८८ ४९० ४९८ ५४४
गुहिलेश पाव पाण्डवाङ्क का नायक ३९७
गुहिल वंश ७, ३४ ४२ ४८ १२८ २४१ २४७ २५१ २६० २६४ ३०९ ३०७ ३०९
३१४ ३१६ ३२० ३२१ ३२३ ३२५ ३५७ ३५८ ४३६ ४५२
गुहिल राजा २४७ २६० ३०९
गूवक प्रथम और द्वितीय चाहमान राजा ४४
गोकुल (या गाङ्गल ?) नायक ६०५ ६०६
गोगादेव मालवा का राजा ३०९
गोविन्द बडगुजर का नायक २११
गोग्गा भामर नायक ३९०
गोग्गिराज चौलुक्य (या चालुक्य ?) लाटेश्वर का नायक ३७३ ३७५
गोढ़हक नगर (गाधू) १३० ५२०
गोप या गोपाचल या गोपाद्रि या गोप गिरि पर्वत या देश (ग्वालियर) ७६
३१० ३१३ ३३७ ५४२
गोपराज नायक ४७६
गोपाल [प्रथम ?] पालवंशी राजा ६५३ ६५४ ६५६ ६५७ ६६०

गोपाल, गाधिपुर (कन्नौज) का राजा १६
गोपाल, नलपुर का नायक २६७, २७०.
गोपाल द्वितीय, पालवंशी राजा ६६२
गोपाल, वादामयुता का राष्ट्रकूट नायक ६२७
गोपालदेव, नायक ४२२
गोपालसाहि, गढ़ोदेश का नायक ३४१
गोपीनाथ, गढ़ादेश का नायक ३४१
गोमतिकोट्टक, स्थान ६७४
गोरक्षदास, गढ़ादेश का नायक ३४१
गोविन्दकेशव, नायक ६७९
गोविन्द, ४, ३४८
गोविन्दचन्द्र, कन्नौज का राजा ८०, ८३, ८६, ८७, ८८, ८९, ९१, ९२, ९३ ९४, ९५, ९७ ,९६, १००, १०१, १०२, १०३, १०४, १०७, १०९, ११०, ११२, ११४, १२१, १२२, १२३, १२४, १२७, १२८, १३३, १३७, १४२, १५५, १६३,
गोविन्दचन्द्र, कवि (?) ६२७
गोविन्दपाल, पाल (?) वंशी राजा ९०३
गोविन्दराज, चाहमान राजकुमार ४४
गोविन्दराज नायक १७७, २३७
गोविन्दराज, राष्ट्रकूटवंशी नायक ३६१
गोविन्द सिंह, गढ़ादेश का नायक ३४१
गोघूर सिहवल ६३१
गोसलदेवी, गोविन्दचन्द्र की रानी १३३, १३७
गोसलदेवी, कलचुरि जयसिंह की रानी ४४३, ४५३
गौड, देश ५९, ५६३, ६६६, ६७१, ६७२
गौतम, गोत्र ६९२
गौतमी पुत्र, वाकाटक राजकुमार ६४१
ग्रहपति वंश ५९, १३१, १३९, १४६

घ

घटोत्कच, राजा, गुप्त का पुत्र ४६०
घृतदेवी, धन्धुक (बन्धुक ?) की रानी ६४

च

चक्रपाणि, मग ब्राह्मण ३६१

चक्रपालित सुराष्ट्र का शासक ४८७
चक्रायुध राजा ६६०
चण्ड या चण्डमहासेन चाहमान नायक १२
चण्डप परमार नायक ७२
चण्डका ग्राम ६१५ ६१६
चण्डवर्मन कलिङ्ग का राजा ६१६
चण्डवर्मन शालङ्कायन राजा ७०८
चण्डीहर तुरुन्विक्षाधिपति ६९०
चन्दन चाहमान राजा ४४
चन्दुक प्रतिहार का नायक १२ ३४१
चन्देल वंश १५ १६ ५४ ५६ ६६ ७४ ७९ ९० १०५ १०६ १०८ ११३ १३८
१४३ १४६ १४९ १५१ १५४ १६५, १८३ १८६ १९३ १९८ २०५ २२८ २२९
२३७ २३८, २४३ २४४ २४५ २७१ २८० ३१७ ३५३ ३५४ ३५५ ३५६ ३६३,
४२८
चन्द्र कवि ७२
चन्द्र वाशनगूना का राष्ट्रकूट नायक ६२७
चन्द्र ५२१
चन्द्रक (?) नायक १७७
चन्द्रगुप्त ६३
चन्द्रगुप्त नायक ६३१
चन्द्रगुप्त प्रथम गुप्तवंशी राजा ४६०
चन्द्रगुप्त द्वितीय गुप्तवंशी राजा ४१७ ४५८ ४५९, ४६० ५१३ ५३४
चन्द्रगुप्त जालन्धर का राजकुमार ६२२
चन्द्रदेव कन्नौज का राजा ७८ ८० ८३ ८६ ८७ १५५ १६३
चन्द्रल या चन्देल १५२
चन्द्रदेव कोण्डवीडु का नायक ३९५
चन्द्रपाल कमक्ष्मा का नायक ३९०
चन्द्रभट्टारिकादेवी महोदय के नायक भोज प्रथम की रानी ४६४
चन्द्रराज चाहमान राजा ४४
चन्द्रराज चाहमान राजकुमार ४५
चन्द्रलेखा, चौडगङ्ग की रानी ३८६
चन्द्रवर्मन आर्यावर्त का राजा ५३०
चन्द्रसाहि गदासचा का नायक ३४१
चन्द्रा, जज्जूक की रानी ३९०
चन्द्रात्रेय ऋषि या (चन्देल) वंश ३६, ५४ ५६ ११३ १५१ १९१ २५५
चन्द्रावती नगर २०२ २११ २२० २८४

चलुक्य वंश ४१९, ४२१, ४२२, ४२७
चाच् (या चाच ?) या चाचिग २५७
चाचिग चाहमान राजा २४९, २५०
[चा] ल्ल नायक २३७
चाप वंश ३७२
चापोत्कट वंश १३६
चामुण्डराज, चाहमान राजा ३५०
चामुण्डराज चौलुक्य राजा १३६, १९६, २१५, २१६
चामुण्डराज राजा ४३
चामुण्डराज परमार नायक ७२
चालुक्य वंश, ३८६, ३८८
चालुक्य (या चौलुक्य ?), वंश ३७३
चाच (या चाच ?) या चाचिग २५७
चाहड, नलपुर का नायक २७०
चाहमान, वंश ३५ ४४, १४१ १५१ १७६ १६१, १६२, १८३, १९१,
चाहवाण, वंश १२
चाहुमान वंश १४८, २५०, २५७, २८० २८४, ३०१
चाहुयाण वंश १७०
चित्रकूट, नगर (चित्तौड़) ३७३
चित्रकूट, ग्राम या वंश ४२८
चिल्लाहुण, भयह्न का उपनाम ६३७
चुलुकीश्वर वंश ५१
चूडासमा, वंश २९९ ३०३, ३६४,
चेदि, देश ८२, १४७ १९४, २३७, ३५३ ३५५, ४२७, ४२८, ४३०, ४३१, ४३५, ४३६
४३७, ४४०, ४४२, ४४३, ४४९, ४५०, ४५२, ४५३,
चोड वंश ३७१
चाड़ या चोडसिंह, गुहिल राजा ३६०, ३०९
चोडगङ्ग, पूर्वी गङ्ग के अनन्त वर्मन का उपनाम १९२. ३७८, ३७९ ३८०, ३८६, ४३
४४४, ६१२
चोड़देवी, नरसिंह द्वितीय की रानी ३८८,
चाउकामरिराज गङ्ग का नायक ७०७
चौलुक्य, वंश ४५, ५०, ५२ ५३, ६१, ७२ १११, १२१, १२९, १३५, १३६, १४०, १५
१६७, १७०, १९६, १९९ २०४ २०७ २०३, २०९ २१२, २१५, २१६, २१८, २१
२२०, २२१, २२७ २२६, २३०, ३६२, ३७२, ४५०, ५२४, ५२५, ५४८, ६०४.
चौलुक्य वाघेला वंश २१९, २२०, २२२ २३३, २३६, २३९, २४५, २४८, २५२, २६
२६८, ३६३.

चौलुकिक या चौलुक्य वंश ५०
चौहान वंश ३५३
च्यवन ऋषि, छिन्दवंश को उत्पन्न करने वाले ५१.

छ

छाजग, सनकानिक का नायक ४५७
छिड्ला ग्राम ६५०
छिन्द वंश ५१ ५९७
छोहुल नायक १४७

ज

जउव्ल तोरमाण शाह (या शाहि) का उपनाम ५४०
जगसिंह गङ्गवंश का नायक ३४१
जगन्नाथ गङ्गवंश का नायक ३४१
जगपाल या जगसिंह नायक ४३३
जगमल्ल मेवर का नायक २०१
जज्जक, कवि ११
जज्जिका देवी, प्रतिहार नागभट्ट की रानी १४९
जज्जुक तोमर नायक ३५०
जनमेजय महाभव गुप्त प्रथम का उपनाम ६९१, ६८० ६८६
जनमेजय तृकलिङ्ग का राजा ६९०
जन्तापुर, ग्राम ३७९
जम्बुग्राम, ग्राम ६७१
जयकीर्तिमल्ल नेपाल का राजकुमार ५८४
जय गोविन्द, कवि ३४१
जयचन्द्र, कन्नौज का राजा १५५ १५८, १६३ १६६ १६८, १६९ १७१, १७२ १७४, १७५ १७६, १७८ १८० १८१, १८२ १८५, १८९
जयचन्द्र, सुगर्स का राजा ३७०, ५९२
जयज्योतिमल्ल नेपाल का राजा ५८४
जयतलदेवी, गुहिल तेजसिंह की रानी २५१
जयत सिंह (?), राजा (?] १८४
जयन्त सिंह कमारिदा का नायक ५१७
जयतसिंह नायक ४३३
जयदेव, नायक ४३३
जयदेव नेपाल का लिच्छवि राजा ५६३
जयदेव मदपाल वंश का पुरुष ५६
जयरुद्र नेपाल का राजकुमार ५९१
जयदेव परचक्रकाम नेपाल का राजा ५६३

जयधर्ममल्ल, नेपाल का राजा ५८४
जयनाथ, उच्चकल्प का नायक ४०६, ४०७, ४०८, ४४७
जयन्तराज नेपाल का राजकुमार ५८४
जयन्तसिंह, चौलुक्य राजा २१०
जयन्तसिंह सम्बलपुर का नायक ३४३
जयपाल, पालवंशी राजा ६६०
जयपुर, ग्राम ४७३
जयप्रतापमल्ल, नेपाल का राजा ५८६ ५८७
जयभट प्रथम वीतराग, गुर्जर राजा ३६६, ३६७, ३६८, ४१४, ४१७ ४१८
जयभट द्वितीय, गुर्जरराजा ४२३
जयभट तृतीय ४२३, ४२४
जयभैरव जयज्योतिमल्ल का दामाद ५८४
जयमाल, प्राग्ज्योतिष का राजा ७१४
जयलक्ष्मी, नेपाल की राजकुमारी ५८४
जयवर्मन् चन्देल्ल राजा १०, २३७, २५४, २५५
जयवर्मन्, काकरेडी का नायक १६४, २२८, ४४०
जयवर्मन्, परमार राजा १७२, १७७, १८०
जयशक्ति, चन्देल राजा ३०, २१३, २५३ २५५
जयाश्रय-मङ्गलराज गुजरात का चौलुक्य नायक ४२५
जयसिंह नायक (?) ६२१
जयसिंह चौलुक्य राजा ११९, १२१, १२१ १३६ १७०, ११६, ५२४, ५४८
जयसिंह चूडा समा के नायक २६५ ३०३, ३६४
जयसिंह, गुहिल राजा ३०६
जयसिंह, राजा २०४
जयसिंह, कलचुरि राजा ४३८, ४४०, ४४२, ४४३, ४५२, ४५३, ४५४
जयसिंह, परमार राजा ६७, २३४, २४४ २७२
जयसिंह गुजरात का चौलुक्य नायक ४१९
जयसिंह सिद्धचक्रवर्ती, वही जो चौलुक्य जयसिंह ११६
जयसिंह-सिद्धराज, " १२१, ५२४, ५४८
जय सिंह सिद्धाधिराज, " ११६
जयस्कन्ध, नायक ७१५
जयस्थितिराजमल्ल, नेपाल का राजा ५८३, ५८४
जयस्वामिन्, उच्चकल्प का नायक ४०६
जयस्वामिनी, मौखरि हरिवर्मन की रानी ५७६
जयस्वामिनी, कुमारदेव की रानी ४०६

तेजपाल विरधवल का मंत्री २२०, २२२
तेज सिंह चन्द्रावती का चाहमान नायक २८० २८४
तेज सिंह या तेजस्वी सिंह गुहिल राजा २४१ २५१ २६० ३०१
तेजस्वी सिंह गुहिल समरसिंह का उपनाम ३०१
तरम्बिपाल दोधयाणी ४५१
तागाल (?) राजा ३५१
तोमर वंश ४४ २५३ ३३७ ३६०
तोरमाण ५ ४१ ५८२
तारमाल शाह (मारवाड़ी) जैन राजा ५४०
त्यागसिंह मागध्यानीय का राजा ७११
त्रिकालक्ष वंश १९४ ३३८ ३७६ ३७८ ३७९ ३८० ४२८ ४३७ ४४० ६८१ ६८३, ६८५ ६८६ ६८७ ६९० ६९२
त्रिगर्त देश ३७१, ५११ ५१३
त्रिपुरी ग्राम (डहार) ३५१ ४३० ४३१ ४४२
त्रिभुवनपाल चालुक्य राजा २३०
त्रिभुवनपाल वारामघुना का राष्ट्रकूट नायक ६२०
त्रिभुवनपाल युवराज ६५६
त्रिभुवनराय गढ़ाहवा का नायक ३४१
त्रिभुवनादित्य नायक १७७
त्रिलोचनपाल कन्नौज का राजा ६०
त्रिलोचनपाल या त्रिलोचनपाति लाट देश का चौलुक्य नायक ३७१
त्रैकूटक वंश ४१० ४१२
त्रैलोक्यमल्ह वर्मा या त्रैलोक्यवर्मन २२१
त्रैलोक्यमल्ल कादम्ब पाट क मूलदेव का उपनाम ७६
त्रैलोक्यवर्मन चन्देल राजा २०५ २२८ २३७ २५५ ३५६
त्रैलोक्यसिंह रायसिंह का उपनाम ३८३

द

द ? (?) ४
दक्षिण कोसल देश ४३०
दक्षिणा पथ देश ५३०
दण्डाहिरज वंश ३१८
दत्तदेवी समुद्रगुप्त की रानी ४६०
दत्तवर्मन सिंघपुर का नायक ६२२
दद्द प्रथम गुर्जर राजा ३६६ ३६७ ३६८ ४१४
दद्द द्वितीय प्रशान्तराग गुर्जर राजा ३६६ ३६७ ३६८ ४१४ ४१० ४१६ ४२३ ४२०
[४१८

दद तृतीय प्रशान्तराग, गुर्जर राजा ४२३
दद, प्रतिहार नायक ३४९
दधीचि, एक वंश के संस्थापक २३७
दन्दन (?) राजा (?) २७५
दन्तूक, ककरेडी का नायक १९४
दफ़रखान, सुलतान (ज़फ़र ख़ां) २९७
दमन, एरण्डपल्ल का राजा ५१०
दयितविष्णु, पालवंशी गोपाल प्रथम का दादा ६५६
दलपति, गढ़ादेश का नायक ३४१
दशपुर, ग्राम (दशोर या मन्दसोर) १
दशरथ, अशोकमल्ल का भाई ६९१
दशरथ, मग ब्राह्मण ३८१
दहूसेन, त्रैकूट का नायक ४१०
दासीराय, गढ़ादेश का नायक ३४१
दानार्णव, गङ्ग का राजा ३७६
दामोदर, नायक ३८५
दामोदर, मग ब्राह्मण ३८१
दामोदर, परिव्राजक राजा ४७२, ४८०
दामोर, कवि ९
दामोदर या मिश्र दामोदर ३०२
दामोदर गुप्त, मगध का गुप्त वंशी राजा ५७२
दारपराज, गङ्ग का नायक ७०७
दास, वंश ६७६
दाहाल, देश १२७
दिग्भञ्ज, नायक ६७७
दिव (?) भञ्ज, नायक ६८०
दिवाकरवर्मन, राजा ६१७
दिवाकरवर्मन महाप्रहल्ल सिंहपुर का नायक ६२२
दीर्घरव, कृकलिङ्ग का राजा ६९०
दुड्डा, वल्लभी राजकुमार ४८१, ४८२, ४८४, ४८६, ४९८, ५००,
दुर्गगण ६
दुर्गदामन, शूरसेन का नायक ६११
दुर्गभट, शूरसेन का नायक ६११
दुर्गराज, राष्ट्रकूट का नायक ३६१
दुर्गावती, दलपति की रानी ३४१
दुर्जनमल्ल, गढ़ादेश का नायक ३४१
दुर्जय, ककरेडी का नायक २२८

धर्मादित्य, विजयपुर का नायक ६२६
धर्मावलोक तुङ्ग का उपनाम ६५२
धवल, मौर्यवंशी राजा १
धवल, हस्तिकुण्डी का राष्ट्रकूट नायक ५३
धवला, कालो (? के राजा बालादित्य की रानी ६२३
धारा, ग्राम ५७ ६७, ११५, २१२, २२४, २३४, २५८, २७२, ३५३, ४५२, ५२४
धारावर्ष, चन्द्रावती, का परमार नायक २१२, २२०,
धाहिल, कर्कोट्टी का नायक ११४, २२८, २२९
धारट, कवि ४२६
धीरनाग, कवि ४५
धुलिआघट्ट, स्थान ७१
धूमराज, चन्द्रावती का परमार नायक २२०
धूरभट, मीथडोणा का शासक २३
धृतराष्ट्र, नायक ६४६
ध्रुवभट, चाप का नायक १७२
ध्रुवभट, चन्द्रावती का परमार नायक २२०
ध्रुवदेव, नेपाल का लिच्छवि राजा ५५५,५७१
ध्रुवदेवी, चन्द्रगुप्त द्वितीय की रानी ४६०
ध्रुवशर्मन ४६०
ध्रुवसेन, प्रथम, वलभी, राजा ४७८, ५०१, ४८१, ४८२, ४८३ ४८५ ४८९
ध्रुवसेन द्वितीय बालादित्य, वलभी राजा ५००, ५०२
ध्रुवसेन तृतीय वलभी राजा ५०६, ५०७
ध्रुवसेन, वलभी राजकुमार ५०२, ५०३, ५०८, ५०९, ५१०
ध्रुभट, बालादित्य सप्तम का उपनाम ५३१

न

नगर, ग्राम (यही को कलिङ्ग नगर) ३७१
नड्डमा, पूर्वगिङ्ग के वज्रहस्त की रानी ३८६
नद्दा या नद्ददेवी, कोक्कल प्रथम की रानी ४२८
नड्डूल, ग्राम (नडोल) १४०, १४८
नन्दप्रभञ्जनवर्मन, कलिङ्ग का राजा ६१७
नन्दराज युद्धासुर, राष्ट्रकूट का नायक ३६९
नन्दावल, नायक ३४९
नन्दिन, आर्यावर्त में राजा ५३०
नन्दिन, वंश ५९७
नन्नगुणावलोक, राष्ट्रकूट का नायक ६५७
नन्नप्प या नन्नदवर, नायक ६२८, ६३१
नन्नुक चन्देल राजा ३५, ९६

नभूतिषण्डक, ग्राम ६५०
नयणकेलिदेवी, गोविन्दचन्द्र की रानी ९४
नयनपाल, ऊमट्टा का नायक १०४
नयपाल, पालवंशी राजा ६६४, ६६५
नरक, विष्णुभगवान तथा पृथ्वी का पुत्र ६७४, ७११, ७१३, ७१४
नरभट या नाहड, प्रतिहार नायक १३, ३४१
नरवर्धन, कन्नौज का राजा ५४१
नरवर्मन, नायक २
नरवर्मन, गुहिल राजा २५७, २६०
नरवर्मन, परमार राजा ८२, ८५, ११५, १२६, १७१, २०४, ३६०
नरवाहन, गुहिल राजा ३४, ४२, २५७, २६०, ३०९
नरवाहनदत्त, नायक ४७३
नरसिंह, नवादेश का नायक ३४१
नरसिंह, कलचुरि का राजा १४७, ४३५, ४३६, ४३७, ४४२, ४४३, ४५२, ४५३
नरसिंह या नृसिंह प्रथम, द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ, पूर्वी गङ्ग का राजा १८
[१८८, १८९
नरसिंह गुप्त, गुप्तवंशी राजा ५३९
नरहरिदेव, नड़ादेश का नायक ३४१
नरेन्द्रदेव, नेपाल का राजा ५९३
नरेन्द्रमल या अमरमल्ल, नेपाल का राजा ५८६, ५८७
नर्मदा, नदी १७१, ४४३
नलपुर, किला ९८
नलपुर, ग्राम २६७, २७०
नवघन, चूडासमा का नायक ३६४
नवसारिका, ग्राम (नौसारी) ४२१
नवीनपुर, ग्राम (नवानगर) ३११
नसरथ, सुलतान (नसरतशाह) २९७
नसरदीन, सुलतान (नासिरुद्दीन महमूद) २५३
नसरतशाह, सुलतान २९७
नागदत्त, आर्यावर्त के राजा ५३०
नागदत्त, कवि ६२६
नागभट, महोदय का नायक ५५८, ५६४
नागभट, महोदय का राजकुमार ५५८
नागभट (नाहड), प्रतिहार नायक १३, ३४१
नागभट्ट, नायक ६१२

पुरुषोत्तम भट्ट ब्राह्मण ३८१
पुरुषोत्तम, चन्देल्ल परमर्दि का मंत्री १९३
पुरुषोत्तम वही जो भट्ट पुरुषोत्तम ७९०
पुरुषोत्तम सिंह, कमौदा का नायक ५७७
पुलकेशिराज अवनिजनाश्रय, गुजरात का चौलुक्य नायक ४२१
पुलकेशिवल्लभ, पूर्वी चालुक्य राजा सत्याश्रय पुलकेशिन् द्वितीय ४२३
पुल्लशक्ति, यादववंशी नायक ३७२
पुलिन्द सेन कलिङ्ग का नायक ६९५
पुष्पपुर, ग्राम वही जो पाटलिपुत्र ५६३
पुष्यण नायक ७२५
पूनपाक्ष नायक ३६२
पूर्णपाल नायक ६४
पूर्णराज तोमर नायक ३५०
पूर्णिक, ग्राम ५१२
पृलण्डक (?) ग्राम ५०७
पृथिविमूल, राजा ७९०
पृथिवीवर्मन् पूर्वी गङ्ग का राजा ६९४
पृथिवीषेण, वाकाटक वंशी राजा ६४०, ६४१ ६४४
पृथिवीपाल नड्डूल का चाहमान नायक १४८
पृथिवीवल्लभ, निकुम्भल्लशक्ति का उपनाम ४२०
पृथूदक ग्राम (पेहेवा पेहोवा) ५६८
पृथ्वीदेव प्रथम, रत्नपुर का नायक ४३०, ४४४
पृथ्वीदेव द्वितीय, रत्नपुर का नायक ४३२, ४३३, ४३८ ४३९, ४४४, ४५५
पृथ्वीदेव तृतीय रत्नपुर का नायक ९९२
पृथ्वीधर कवि ४३५
पृथ्वी नारायण शाह नेपाल का राजा ३४४
पृथ्वीपाल राजा १११
पृथ्वीराज, चाहमान राजा १५६, १६२ १८३, १९१
पृथ्वीराज गदाइदा का नायक ३४१
पृथ्वीराज गुहिल राजकुमार ३२५
पृथ्वीवर्मन् चन्देल्ल राजा १९३, १५३, २३७ १५४
पृथ्वीश, वही जो पृथ्वीदेव प्रथम ४३०
पृथ्वीश्रिका कन्नौज के राजा महीपाल की रानी (?) ८४
पृथमला असमवम की रानी २०१
पेरुज साह सुल्तान (रुक्नुद्दीन फीरोज़ शाह प्रथम) २५३
पेरोज यवनों का राजा (फीरोज़ शाह) ३०५

मीनलदेवी, रत्नराज प्रथम की रानी ४३०
मोहला, पृथ्वीराज प्रथम की रानी ४५०

प

पञ्चहस, वंश ४३१
पञ्चाल देश ६२७
पड़िहार (प्रतिहार) वंश ११
पद्मनाग, नायक २१
पद्मपाल, कच्छपघात वंशी राजा ७६, ८१
पद्मसिंह, गुहिल राजा २६०, ३०१
पद्मादित्य, नायक १७७
पद्मावती, ग्राम ५५
पद्मिनी, कान्ह की रानी ३४१
परचक्र काम, नेपाल के राजा जयदेव का उपनाम ५६३
परबल राष्ट्रकूट वंशी नायक ६५७
परमर्दिन् नायक ३००
परमर्दिन, चन्देल राजा ६१, ७०, १५३ १५४, १६५, १८३, १८६, १९३, १९८, २३७ २५५ ३'
परमार, वंश ४६ ४९, ५३, ५७, ६७ ६८, ७२, ७३, ८७, ८५, ११५, ११७, १२६, १७१, १९७, २०२ २०४, २०६ २०७, २१३, २१७ २११, २२०, २२४, २३८, २४४, २७२, ३५१, ३६० ३६१, ४३६, ४५२,
परिव्राजक, वंश ४७२, ४७४, ४७७, ४८० ५४३,
पर्णदत्त सुराष्ट्र का शासक ४६७
पल्लव, ग्राम या वंश ५३०
पशुपति राजा ५४२
पाटलिपुत्र, ग्राम (पटना) ४३३, ४५८, ६५६, ५६३
पाण्डव, वंश ६३६, ६३७, ६३८
पाण्डुवर्मन् नायक ६२४
पार्थिव आति (?) ६१८
पियरोज साह, सुल्तान (फीरोज शाह) २८१
पिट्टपुर, ग्राम ५५०
पुञ्ज नायक ६८७
पुष्पा चन्देल यशोवर्मन की रानी ५६
पुरगुप्त, गुप्तवंशी राजा ५३९
पुरन्दर, गांव आगा ४०१
पुरन्दरपाल, माण्ड्यायनिष का राजकुमार ७१३
पुरुषोत्तम नायक ३८५, ६१२

पुरुषोत्तम नग ब्राह्मण ३८१
पुरुषोत्तम चन्देल्ल परमर्दिन का मंत्री ७९३
पुरुषोत्तम वही जो भट्ट पुरुषोत्तम ६९०
पुरुषोत्तम सिंह, कमारिश का नायक ५०७
पुलकेशिराज अवनिजनाश्रय, गुजरात का चौलुक्य नायक ४२९
पुलकेशिवल्लभ, पूर्वी चौलुक्य राजा सत्याश्रय पुलकेशिन् द्वितीय ४२१
पुल्कासि, चापवंशी नायक ३७२
पुलिन्द राज कलिङ्ग का नायक ६९९
पुष्पपुर, ग्राम, वही जो पाटलिपुत्र ५६६
पुष्यण नायक ७२९
पूनपाक्ष, नायक ३६२
पूर्णपाल नायक ६४
पूर्णराज तोमर नायक ३५०
पूर्णिक ग्राम ५१२
पूलण्डक (?) ग्राम ५०७
पृथिविमूल, राजा ७१०
पृथिवीवर्मन्, पूर्वी गङ्ग का राजा ६०४
पृथिवीषेण, वाकाटक वंशी राजा ६४०, ६४१, ६४४
पृथिवीपाल नड्डूल का चाहमान नायक १४८
पृथिवीवल्लभ, निकुम्भल्लशक्ति का उपनाम ४२०
पृथूदक ग्राम (पेहेवा पेहोआ) ५६८
पृथ्वीदेव प्रथम रत्नपुर का नायक ४३०, ४४४
पृथ्वीदेव द्वितीय, रत्नपुर का नायक ४३२, ४३३, ४३८, ४३९ ४४४, ४५९
पृथ्वीदेव तृतीय रत्नपुर का नायक ११२
पृथ्वीधर, कवि ४३५
पृथ्वी नारायण शाह, नेपाल का राजा ३४४
पृथ्वीपाल, राजा १११
पृथ्वीराज चाहमान राजा १५६, १६२ १८३, १९१
पृथ्वीराज, गढविद का नायक ३४१
पृथ्वीराज, गुहिल राजकुमार ३२९
पृथ्वीवर्मन् चन्देल्ल राजा ११३, १५३, २३७, ३५४
पृथ्वीश, वही जो पृथ्वीदेव प्रथम ४३०
पृथ्वीश्रिका, कन्नौज के राजा मदनपाल की रानी (?) ८४
पृथमला जासधवल की रानी २०९
फरुज शाह सुलतान (रुक्नुद्दीन फीरोज शाह प्रथम) २४३
फीरोज, यवनों का राजा (फीरोज शाह) ३०५

पेरोज साहि, सुलतान (फ़ीरोज़ शाह) २१९
पेल्लापेल्लि, नरभट का उपनाम ३४९
पौषण (सूर्य) यज्ञ ६१९
प्रकटादित्य, काशी (?) का राजा ६२३
प्रताप, नायक २१४
प्रताप, राजा २७९
प्रताप या प्रतापमल्ल, वही जो अय प्रताप मल्ल ५८६, ५८७,
प्रतापधवल, जापिल का नायक १४४, १५९, १६०
प्रतापमल्ल, वही जो जय प्रताप मल्ल ५८७
प्रतापमल्ल बाघेला राजकुमार २४९, २६२, २६८
प्रतापवर्मन्, चन्देल राजकुमार ३९९
प्रतापादित्य, गढ़ाकेश का नायक ३४१
प्रतिहार (पडिहार), वंश ११, ३४१
प्रदीप्तवर्मन, सिद्धपुर का नायक ६२२
प्रभालिका, वरुणसेन की रानी ६१४
प्रभञ्जन, परिव्राजक राजा ४७३, ४८०
प्रभाकर, राजा ७१०
प्रभाकर वर्धन, कन्नौज का राजा ५४९
प्रभावतिगुप्ता, रुद्रसेन द्वितीय की रानी ६४०
प्रभास, नायक १७७
प्रभास, महोदय के नायक भोज प्रथम का उपनाम (?) ५५८
प्रभास, ग्राम २१०
प्रयाग, (इलाहाबाद) ६०, १६६, ४२८
प्रवरपुर, ग्राम ६१९, ६२१
प्रवरसेन प्रथम, वाकाटक वंशी राजा ६४१, ६४४
प्रवरसेन द्वितीय, वाकाटक वंशी राजा ६४१, ६४२, ६४३, ६४४,
प्रशान्तराग, दद्द द्वितीय का उपनाम ३६६, ३६७, ३६८, ४१४, ४१५, ४१६, ४१७, ४१८,
प्रशान्त शिव, योगी ४२६
प्रसर्वज्ञ, कवि १२९
प्रसिद्धधवल, वही जो कलचुरि मुग्धतुङ्ग ४२८
प्रह्लादन, चन्द्रावती का परमार नायक २०२, २२०
प्राग्ज्योतिष, देश ६६६, ६७४, ७११, ७१२, ७१३, ७१४
प्राग्वाट, देश ४५२
प्राणनारायण, विहारनगरी का नायक ५८६
प्रालम्भ, प्राग्ज्योतिष का राजा ६७४

फ

फक्क शूरसेन वंशी नायक ६११
फल्गुग्राम १७२
फीरोजशाह सुलतान २८१ २९१, ३०५

ब

बन्धुवर्मन दशपुर का शासक ३
बप्प या बप्पक गुहिल राजा २४७ २६० ३०१
बलवर्मन, नायक ६२४
बलवर्मन राजा ६२७
बलवर्मन, आर्यावर्त का राजा ५१०
बलवर्मन, प्राग्ज्योतिष का राजा ७१४
बलादित्य कलिङ्गाधिपति १७१
बलिराज नड्डूल का चाहमान नायक १४८
बल्लाल मालव का राजा २२० ५२४
बल्लालसेन सेनवंशी राजा ६७०, ६७१
बाई हरीर ३११
बाउक प्रतिहार नायक १४९
बापल्लदेवी, अनिरुद्ध की रानी १८६
बारप्प या बारप्पराज चौलुक्य (या चालुक्य ?) लाटदेश का नायक १७१, १७५
बालप्रसाद, हस्तिकुण्डी का राष्ट्रकूट नायक ९३
बालप्रसाद नड्डूल का चाहमान नायक १४८
बालवल्लभी भुजङ्ग, भट्ट भवदेव का उपनाम ६८९
बाल हर्ष, कलचुरि का नायक ४७८
बाहदुर शाह सुल्तान (बहादुर) ३२३
बाहुन्द ग्राम २७९
बाहुसहाय, तृतीय वर का उपनाम ४२३
बालादित्य, काशी (?) का राजा ६२३
बालादित्य मगध (?) का राजा ५७४
बालादित्य द्वितीय ध्रुवसेन का उपनाम ५००
बालार्जुन शिव गुप्त का उपनाम ६३९
बिल्हण वीरग्राम का नायक ३००
बुद्ध, वीरग्राम का नायक १७०
बुद्धकीर्ति कवि ५६३
बुधगुप्त राजा ४०५

बुद्धभद्र बौद्धयोगी ६३०
बुद्धवर्मराज गुजरात का चौलुक्य नायक ४११
बृहत खरतरगच्छ ३२८
बृहद्गृह ग्राम ६२४
बालादित्य किसी पालवंशी का मंत्री ६६६
बोधिरमन्, बौद्ध योगी ६११
ब्रह्मक्षत्रिय जाति ६६१
ब्रह्मदेव, रायपुर का कलचुरि नायक ७११, ३०२
ब्रह्मन कोर ग्राम का नायक ३७०
ब्रह्मपालवर्मन प्रागज्योतिष का राजा ७११, ७१२ ७१३
ब्राह्मणपाटक, ग्राम १७०

भ

भक्तापुरी ग्राम (भात गाव) ५८४
भगदत्त, राजा वा राजवंश ५६३
भगदत्त प्रागज्योतिष का कल्पित राजा ६७४ ७१० ७१३ ७१४
भगवत्पुर, ग्राम ४९
भगीरथ, राजा ६५१
भञ्ज, वंश ६७७, ६७८, ६७९ ६८०
भटक्क वा भटाक, वलभी का नायक ३६५ ४७२ ४७८, ४८५ ४९८
भट्ट पुरुषोत्तम कवि ६१०
भट्ट भवदेव बालवलभी भुजङ्ग, राजा हरिवर्मन् का मंत्री ६९१
भट्ट सर्वगुप्त, कवि ६
भट्ट वसुदेव कवि ६२२
भट्टार्क अथवा भटार्क वलभी राजा ३६५
भट्टिक देवराज नायक ३४९
भद्र, वंश ६५६
भद्र, कवि ५७१
भद्रपतनक (?), ग्राम ४१३
भद्रा हरिश्चन्द्र की पत्नी २३ ३४९
भद्रापात्त (?) ग्राम ४९४
भरुकच्छ ग्राम (ब्रोच) ३६६, ३६७, ३६८, ४८०, ४८८
भर्तृदाहनक (?) ग्राम ४१६
भर्तृभट, गुहिल राजा २४७ २६०, ३०१
भम प्रभास का नायक २९०, २९२
भवदत्त नायक ६३०

मेघनाग नारायण का नायक ६४१
भवानी दास गढ़ान्स ना नायक ३४१
भवानी उदालामुखा स्तम्भ ५१३
भविष्य राष्ट्रकूट का नायक ६२१
भागराज किसी अज्ञात राजा का मंत्री ६३०
भाक महान्यायाधिपति महेन्द्रपाल का उपनाम ५६४
भाकमिश्र युवराज प्रथम का मन्त्री ४४१
भाग्यश्री पालवंशी राज्यपाल की रानी ६६२
भाग्यदेवा शूरसेन तथा भगुवमन की बहन भागवती की पुत्री ५५१
भाणुशक्ति सन्द्रक का नायक ४२०
भाम (?) अधिकारी ५४१
भानुगुप्त राजा ४७६
भानुदेव उमझाधिपति ३०८
भानुदेव प्रथम द्वितीय और तृतीय पूर्वीगङ्ग के राजा १८६ १८८
भानुमिन गढ़ावद का नायक ३४१
भायिल नायक ४३३
भारतीचन्द्र गढ़ावेद का नायक ३४१
भाराशिव जाति या वंश ६४१
भाव बृहस्पति पुजारी ५२४ ५४८
भास्कर नायक ३८३
भास्करभट्ट कवि ६३७
भास्कर वमन रघुवकुल सिंघपुर का नायक ६२२
भिक्षुग्गस नायक ६४६
भिल्लादित्य या भिल्लक प्रतिहार नायक ११ ३४६
भीम मिथिला का राजा ६६६
भीम प्रथम चौलुक्य राजा ६१ १३६ १९६ ३५१
भीम द्वितीय चौलुक्य राजा १९६ १९९ २०१ २०२ २०३ २०६ १२२ २१५ २१६,
२१८ २१९ १२१ २२५ २२६ २३० ५४८
भीम द्वितीय या प्रथम (?) चालुक्य राजा ६०४
भीमपाल नायक (?) ४५६
भीमपाल वालुमगता का राष्ट्रकूट नायक ६२७
भीमरथ महाभवगुप्त द्वितीय का उपनाम ६८६
भीमवमन् नायक ४६८
भीमसिंह परतवा नायक २९६
भुजबल सुवणपुर का नायक ४४४
भुवन कीरग्राम का नायक ३००
भुवनदवा धवर्मन की माता ६६

भुवनपाल, योदामयुता का राष्ट्रकूट नायक ६२७
भुवनपाल, कच्छपघात मूलदेव का उपनाम ७६, ८१
भुवनसिंह, गुहिल राजा ३०९
भुवनैकमल्ल, कच्छपघात वर्णो महीपाल का उपनाम ७६
भूपा या भूवा, वलभी राजकुमारी ४८७, ४८८
भूपालसाहि, मदारिस का नायक ३४१
भूपालसिंह, नेपाल का राजा ५८६
भूपालेन्द्रमल्ल, नेपाल का राजा ५८९
भूमिपाल, ऊमक्का का नायक ३०८
भूमिलिका, ग्राम (भूमली) ८
भूयिका देवी, देवशक्ति की रानी ५६४, ५९८
भूवा या भूपा ४८७, ४८८
भूषण, छिन्द का नायक ५१
भृगुकच्छ, ग्राम २०६
भैरव, नायक १७७
भैरवेन्द्र, ऊमक्का का नायक ३०८
भैलस्वामिन्, ग्राम (भिलसा) ११३
भोगभट, प्रतिहार नायक ३४१
भोगदेवी, अंशुवर्मन की बहिन ५५१
भोगादित्य, नायक १७७
भोगवर्मन्, मौखरि का राजा ५६३
भोगवर्मन्, शूरसेन और भोगदेवी का पुत्र ५५३
भोज, कन्नौज का राजा १४, १५, १६, १७, १९, ४२८, ४५७, ५६८
भोज, गुहिल राजा २४७, २६०, ३०९
भोज, राजा ८०
भोज प्रथम, महोदय का नायक ५५८, ५६४
भोज द्वितीय " ५६६
भोज, परमार राजा ५७, ६७, ७४, ८२, ८५, २०४, ३९३, ३९९
भोज प्रतिहार नायक ३४१
भोजदेव, नायक १७७, ४४५
भोजवर्मन, चन्देल राजा २६५, ३५६
भोटवर्मन्, राजा ६१६
भोग्नदेव, नायक ३०२
भौम, वंश ७११
भ्रमरशालिमालि, ग्राम ६५०

म

मग या शाकद्वीपीय ब्राह्मण ३८१
मगध देश ३८० ५५६ ५६३ ५७२ ५७३ ५७४ ६५०
मदकुणश्री (या सद्‌गुणश्री ?) राजा गजालूमीय की रानी ३८६
मल्लनदेवी सामर यजूर की रानी ३५०
मल्लिकसराज जयाश्रय का उपनाम ४२९
मल्लपस नायक २७१
मल्लराज कच्छपघात वंशी राजा ७६
मञ्जुनन्दिन्, कवि ५२७
मदन सिंह सालवाहन का उपनाम ६१५
मठा नदी ६८७
मणिकण्ठ कवि ७६
मण्डराज कालन का राजा ५३०
मण्डन परमार नायक ७२
मण्डपदुर्ग ग्राम २०४
मण्डपपुर ग्राम (माण्डु) २०४
मण्डन नायक २७६
मण्डलिक या मण्डलीक प्रथम और द्वितीय चूडासमावंशी नायक ३०३ ३६४
मण्डली ग्राम २१६
मण्डलीक नायक २७६
मतिल आर्यावर्त का राजा ५३०
मत्तमयूर एक सम्प्रदाय या शाखा ४२६
मत्तमयूर ग्राम ४५१
मत्तमयूर नाथ शैव योगी ४५०
मत्तिल ७१६
मथनदेव गुर्जरप्रतिहार नायक ३१
मथन सिंह गुहिल राजा २६० ३००
मदन नायक ३१८
मदन गाधिपुर (कन्नौज) का राजा (?) ९८
मदन वही जो चन्देल मदनवर्मन २३७
मदनचन्द्र वही जो कन्नौज का राजा मदनपाल ७८
मदनदेवी लवण प्रसाद की रानी ३६३
मदनपाल कन्नौज का राजा ७८ ८० ८१ ८४ ८६ ८७ ३५८ ३६३
मदनपाल पाल वंशी राजा ६६७
मदनपाल श्रावस्ती का राष्ट्रकूट नायक ६२७
मदनवर्मन चन्देल राजा १०५ १०६ १०८ १३३ २३४ २४३ २४६ २८१ २९३ ३१३
२५५ ३५४ ३५५

मदनसिंह, गढादेश का नायक ३४१
मदप्रतीहार (वा अप्रतीहार ?) ग्राम १०१
मदाफर-साह, सुलतान (मुजफ्फर द्वितीय) ३२३
मंदालि, जयादित्य का मंत्री ६२६
मधुकर साहि, गढादेश का नायक ३४१
मधु-कामार्णव, पूर्वी गङ्ग का राजा ३७६, ३७८
मधुमती, ग्राम (महुवा) २३५
मधुसूदन, नायक ३८५
मनोरथ, मत्त ब्राह्मण ३८१
मनोरथ, (मुरारि का पुत्र) कवि ६६६
मनोरथ (सीद का पुत्र), कवि १८०
मनोहर सिंह गढादेश का नायक ३४१
मन्न (हरिवर्मन्) ५७१
मम्मट, हस्तिकुण्डी का राष्ट्रकूट वंशी नायक ३०, ५१
मयनल्ला, लक्ष्मणचन्द्र की रानी ३७०
मयू नगरी, ग्राम २१०
मयूर, नायक ३४८
मयूराक्ष, विश्ववर्मन का मंत्री २
मरुस्थली, देश (मारवाड) ३२०
मर्यादा सागर कलचुरि (?) वंशी राजा ७१
मल, नायक ७७१
मलट, गुहिल राजा २४७
मल्हदेव, कमल्ला का नायक ३०८
मल्हण छिन्द वंशी नायक ५१
महमन्द साहि या महम्मद साहि, सुलतान (मुहम्मद इब्न तुगलक) २७७, २७८
महमूद या महमूद, सुलतान (महिमूद बेगड़) ३१८, ३२३
महम्मद सोह (मुहम्मद शाह) ५६४
महाकान्तार, देश ५३०
महाजयराज, नायक ६३२
महानन्द, नायक ३७१
महानामन, बौद्ध ४९९, ५४८
महाभवगुप्त प्रथम जनमेजय, त्रिकलिङ्ग का राजा ६८१, ६८२ ६८३, ६८४ ६८५
महाभवगुप्त द्वितीय भीमरथ, त्रिकलिङ्ग का राजा ६८६ ६८७
मथायक या महायिक, गुहिल राजा २४७, २६०, ३०१
महालक्ष्मी, गुहिलरानी ३४
महालक्ष्मी देवी (?), नरसिंह गुप्त की रानी ५३१
महाशिवगुप्त ययाति, त्रिकलिङ्ग का राजा ६७८, ६८०

महाशिव लिवरराज कौसल का नायक ६३८
महासार. मान (मसार) २९३
महासिंह, गढ़ादेश का नायक ३४१
महासुदेव राज. नायक ६३३, ६३४
महासेन गुप्त, मगध का गुप्तवंशी राजा ५७२
महासेन गुप्त देवी. आदित्यवर्धन की रानी ५४९
महिअल या महीतल या महीयल, कन्नौज के राजा चन्द्रदेव का पिता ८०, ८३. ८६
महिन्द्रवर्मन, पूर्वी गङ्ग का राजा ६६५
महिपाल, नायक ६५
महिपाल, प्रथम और द्वितीय, चूड़ा समा वंशी नायक ३०३ ३६४
महिपराम, चाहवान नायक ९२
महीपचल, सिंघपुर के नायक दिवाकर वर्मन का उपनाम ६२२
महीचन्द्र, ७८, ८७, १५५, १६३
महीतल या महीयल, वही जो महिअल ८३, ८५
महीदेव, नेपाल का लिच्छवि राजा ५९३
महीदवी देवी, महोदय के नायक महेन्द्रपाल की रानी ५६६
महीधर, मग ब्राह्मण, ३८१
महीन्द्र (या महेन्द्र ?), राजा ५४
महीन्द्र मल्ल (महेन्द्रमल्ल), नेपाल का राजा ५८७
महीप, वाघेला नायक ३१८
महीपति, चूडासमावंशी नायक २९५
महीपाल, नायक ३१५
महीपाल, राजा ३७२
महीपाल, कच्छपघात वंशी राजा ७३, ८१
महीपाल, कन्नौज का राजा २५
महीपाल, पाल वंशी राजा ५१, ६६२, ६६३, ६६४
महीधा, राजा २८४
महेन्द्र, नडूल का चाहुमान नायक १४८
महेन्द्र (या महीन्द्र ?), राजा ५३
महेन्द्र, कौसल का राजा ५३०
महेन्द्र, पिष्टपुर का राजा ५३०
महेन्द्रमल्ल, नेपाल का राजा ५८५, ५८६, ५८७
महेन्द्रपाल कन्नौज का राजा १७, १९, २५, ३५०
महेन्द्रपाल, महोदय का नायक ५६४, ५६६
महेश या महेश्वर, कवि ३१६, ३२०
महेश्वर, नायक २३७
महेश्वर नाग, नायक ६१२

महोदय, ग्राम (कन्नौज) ५५८, ६६४, ७६६, ८६०
महमूद बेकर, सुलतान ३१८, ६२१, ३२२
माणिक्य, शाकम्भरी राजा २७५
माणिक्यवर्मन राजा ६१६
मातृचेट, ५४२
मातृविष्णु, नायक ४७५, ५४१
मातृशर्मन, कवि ६४
माधव, भानुगुप्त का सामंत (?) ४७६
माधव, कवि ३५, ६७४
माधवगुप्त, मगध का गुप्तवंशी राजा ५७२, ५७४
माधववर्मन, कलिङ्ग का नायक ६१५
माधववर्मन, विष्णुकुण्डिन का राजा ७०१
माधवसिंह, उड़ीसा का नायक ३४१
मान, वंश ३८१
मानगृह, नेपाल में राज सदन ५०१, ५११, ५४७, ५५५, ५७१
मानदेव, नेपाल का लिच्छवि राजा ५१५, ५३८, ५६३
मानदेव, नेपाल का राजा ५८२
मानपुर, ग्राम ६२१
मानवसिंह, राजा २७५
मानसाहि, ग्वालियर का तोमर नायक ३३७
मानसिंह, राजा ३३०
मानाङ्क राष्ट्रकूट वंशी नायक ६२१
मामक (?), नायक ३६१
मारसिंह, गङ्ग का राजा ३७१
मालव, देश ७२, २२०, ३०४, ३०१, ३५१, ३८६, ४३६
माहट, महपति वंश का पुरुष ५५
मित्रवर्मन, नायक ७१०
मित्रसेन, ग्वालियर का तोमर नायक ३३७
मिथिला, देश ५८७, ६००, ६६६
मिश्र दामोदर, कवि ३०२
मिहिरकुल, राजा ३४८, ५४२
मिहिरलक्ष्मी, रविषेण की रानी ६१४
मुइज्जुद्दीन बहराम, सुलतान २५३
मुक्तसिंह, चूडासमा वंशी नायक ३०२
मुग्धर, वही जो मौखरि ५७५
मुग्धतुङ्ग, वही जो कलचुरि प्रसिद्धधवल ४५१
मुजफ्फर द्वितीय, सुलतान ३२३

मुञ्जराज परमार राजा ५३, ८२
मुद्गगिरि, ग्राम (मुंगेर) ६५७ ६६०
मुरारि कवि ६६८
मुरुण्डस्वी या मुरुण्डस्वामिनी, जयनाथ की रानी ४०८, ४११
मुहम्मद इब्न तुगलक, सुलतान २७७, २७८ २८२
मुहम्मद शाह ५१५
मूर्तिगण, शत्रु योद्धा ६२७
मूलदेव, नायक ६९२
मूलदेव, कच्छपघात वंशी राजा ७६
मूलराज प्रथम, चौलुक्य राजा ४५, ५० ५२, ५३, १३५, १३६, १९६, २०१, २१५ २१६, ३१०
मूलराज द्वितीय, चौलुक्य राजा १९६, ५४८
मूलराज, वाघेल नायक ३१८
मृगावती, नर्मदा के नायक हूर्येवा की पुत्री (?) ३४१
मेघचन्द्र, त्रिगर्त का राजा ५९३
मेघवन ग्राम ५०९
मेदपाट, वंश (मेवाड) २४७ २५१, २६०, २६४, ३०५, ३०७, ३०९ ३१६, ३२०, ३२५
मेरुवर्मन्, राजा ६१७
मेलग या मेलिग, चूडासमावंशी नायक ३०३ ३६४
मेलिग, नायक २७१
मेहर, वंश २०१, २०८, २७१
मैत्रक, वंश ४७८
मोकल, गुहिल राजा ३०५, ३०७ ३०९ ३१६
मोकल ३३३
मोकल सिंह, चूडासमावंशी नायक २६४, २९९
मोकलसिंह, वाघेला नायक ३१८
मोमल देवी, परमार यशोवर्मन की माता (?), ११७
मौखरि, वंश ५६३, ५७२, ५७५, ५७६, ५७७ ५७८
मौर्य वंश ९
म्लेच्छ २७८, ७११

य

यक्षपाल गया का नायक ६६८
यक्षमल्ल भक्तापुरी का शासक ५८४
यक्षमल्ल नेपाल का राजा ५८६, ५८७
यज्ञवर्मन्, मौखरि राजा ५७८
यज्ञवर्मन्, सिंहपुर का नायक ६२८
यज्ञिका, डुर्गेन नायक देवराज की रानी ६११

राजकुलगच्छ ५९२
राजदत्त, नायक ४४५
राजमञ्ज, नायक ६७८
राजमती, जयप्रतापमल्ल की रानी ५६८
राजमल्ल, गुहिल राजा ३१६, ३२०, ३२१, ३२३, ३२५
राजमाल, वंश ४३३
राजराज प्रथम, पूर्वी गङ्ग का राजा ३७८, ३७९, ३८६
राजराज द्वितीय, पूर्वी गङ्ग का राजा ३८६, ६९२
राजराज तृतीय पूर्वी गङ्ग का राजा ३६६
राजलदेवी, रानी ३६१
राजलदेवी, स्थितिमल्ल की रानी ५८४
राजल्ला, पृथ्वीदेव प्रथम की रानी ४३०
राजसिंह, गढादेश का नायक ३४१
राजसिंह, पद्तृष घरी नायक २९६
राजसिंह, इन्द्रवर्मन का उपनाम ६९८, ६९९
राजसुन्दरी, राजराज प्रथम की रानी ३७८, ३७९, ३८६
राजि, चौलुक्य राजा ५०
राजेन्द्रचोल, चोड का राजा ३७८
राजेन्द्रवर्मन, पूर्वी गङ्ग का राजा ४०२
राजेन्द्र विक्रमशाह, नेपाल का राजा ३४४
राज्यपाल, कन्नौज (?) का राजा ६०, ८२
राज्यपाल, पालवंशी राजा ६०२
राज्यपाल, कन्नौज के राजा गोविन्दचन्द्र का पुत्र १२४
राज्यपाल, पालवंशी देवपाल का पुत्र ६५७
राज्यपुर, ग्राम (राजोरगढ) ३९
राज्यमती, जयदेव परचक्रकाम की रानी ५६३
राज्यवती, धर्मदेव की रानी ५९९
राज्यवर्धन प्रथम, कन्नौज का राजा ५४१, ५७०
राज्यवर्धन द्वितीय, कन्नौज का राजा ५४१
राम, कीरग्राम का नायक ३७०
राम (बलभद्र का पुत्र), कवि ५६
राम (भृङ्ग का पुत्र), ३७०, ५११
रामकीर्ति, कवि १३५
रामचन्द्र, गढादेश का नायक ३४१
रामचन्द्र वा रामदेव, कलचुरि का नायक २९९
रामदेव, चन्द्रावती का परमार नायक २२०
रामदेव, वही जो कन्नौज का राजा रामचन्द्र १९

रामदेवी, अयस्वीमित् की रानी ४०६
रामपाल, पाल वंशी राजा ६६६
रामभद्र कन्नौज का राजा ५६८
रामभद्र, महोदय का नायक ५५८, ५६४
रामसाहि, गढ़ादेश का नायक ३४१
रामसाहि, ग्वालियर का तोमर नायक ३३७
रामसिंह, नेपाल का राजा ५८६
रायपाल नायक ३६२
रायपुर, ग्राम २११
रायब्रह्मदेव, रायपुर का कलचुरि नायक २११ ३०२
रायमल, वही जो राजमल ३२१ ३२५
रायारिदेव-त्रैलोक्यसिंह, नायक ३८३
राल्हदेवी या राल्हणदेवी कन्नौज के राजा गोविन्द चन्द्र की माता ८३, ९७ ११०, १२१
राष्ट्रकूट वंश २४, ३०, ५३, ३५१, ३६१ ३७३, ३७५ ३७१, ६२७, ६२१, ६५७ ६६२
राष्ट्रौड़ (राष्ट्रकूट), वंश २९२
राहडा, लक्ष्मणराज की रानी ४४१
राहिल चन्देल राजा ३५ ५६
राहुत्त राय, वही जो रौतराय ३१५
रिपुमल्ल, भास्करवर्मन का उपनाम ६२२
रुक्नुद्दीन फीरोजशाह प्रथम, सुलतान २५३
रुद्र, नायक १७७
रुद्र , विहारस्वामिन् ६३१
रुद्रदास, नायक ६२८
रुद्रदेव, गढ़ादेश का नायक ३४१
रुद्रदेव आर्यावर्त का राजा ५३०
रुद्रमान, मगध का मानवंशी नायक ३८१
रुद्रसेन प्रथम वाकाटक वंशी राजा ६४१, ६४४
रुद्रसेन द्वितीय, वाकाटक वंशी राजा ६४१
रुद्रेन = रुद्रपाल (?) तोमर राजकुमार ४४
रुद्रादेवी, बाघेल वीरसिंह की रानी ३१८
रूपमती, जयप्रतापमल्ल की रानी ५८६
रूपा महानन्द की रानी २७९
रूपादेवी, चाहमान राजकुमारी २५७
रेपुणा ग्राम ३८६
रेवा नदी (नर्मदा) ११७ २०७
रौतराय या राहुत्तराय, माणदेव का उपनाम ३१५

वड्गूजर, वश २११
वडविड ग्राम १६३
वत्सदामन, शूरसेन वंश का नायक ६११
वत्सदेवी, पुरगुप्त की रानी ५३९
वत्सदेवी, शिवदेव द्वितीय की रानी ५६३।
वत्सभट्टि कवि ३
वत्सराज चाहमान राजकुमार ४४
वत्सराज, लाटदेश का चोलुक्य (या चौलुक्य?) नायक १०५
वत्सराज कक्करेडी का नायक ११४, २२८, २२९, ४४०
वत्सराज, महोदय का नायक, ५६४, ५५८
वत्सराज, चन्देल कीर्तिवर्मन का मन्त्री ७९
वत्सराज सिङ्गर वश का नायक ११४
वनमालवर्मन, प्राग्ज्योतिष का राजा ३७४, ७१४
वनराजदेव (?), नायक २४२
वन्धुक (या धन्धुक?) नायक ६४
वप्पट, पालवंशी गोपाल प्रथम का पिता ६५६
वयपाल, गुहिल, राजा ३०९
वयजलदेवी, वीरधवल की रानी ३६३
वरसिंह, कमङ्गा का नायक ३०८
वरसिंह, वाघेला नायक ३१८
वराहदेव (?) किसी वाटक वंश के राजा का मंत्री ६४४
वराह सिंह सेनापति ५
वरिक, जाति २
वरुणसेन, नायक ६१४
वर्णमान, मगध का मानवंशी राजा ३८९
वर्धमान, ग्राम ३०२
वर्धमानकोटी, ग्राम ५४९
वर्धमानपुर, ग्राम ३६०
वर्मशिव, शैव योगी ६२७
वलभी, ग्राम ३६५, ४२३, ४७८, ४७१, ४८१, ४८२, ४८३, ४८५ ४८६, ४८७, ४८८, ४८९, ४९०, ४९१, ४९२ ४९३, ४६४, ४९६, ४९७ ४९८, ४९९, ५००, ५०२, ५०३, ५०४, ५०५, ५०६ ५०७, ५०८, ५०६, ५१०, ५११, ५१२, ५१३, ५१४, ५१६, ५१७, ५२०, ५२१, ५४४, ५४५
वल्लभदेव, नायक ३८३
वल्लभराज, नायक ४१२, ४५४, ४५५
वल्लभराज, चौलुक्य राजा १३६, २१५, २१६

वल्लभराज, वही जो कृष्णराज, राष्ट्रकूट कृष्ण द्वितीय ४२८
वल्लादित्य, नायक २७१
वल्लूर, ब्राह्मणों की एक जाति ६४५
वसन्तदेव या वसन्तसेन, नेपाल का लिच्छवि राजा ५११, ५६३
वसन्तपाल, पालवंशी महीपाल का पुत्र (?) ५१
वसन्तसेन, वही जो वसन्तदेव ५६३
वसावण ६२७
वसुदेव, वही जो भट्ट वसुदेव ६२२
वस्त्राकुल, वंश २०१
वस्तुपाल, २२०, २२२, २२३
वाकाट या वाकाटक, वंश ६४०, ६४१, ६४२, ६४३, ६४४, ६४५, ६४६, ७०१
वाक्पति, चन्देल राजा ३५, ५६
वाक्पतिराज, चाहमान राजा ४४
वाक्पतिराज, परमार राजा ४६, ४९, ५०, ६०, ३५१
वाक्पाल, पालवंशी राजा ६६०
वाखल राज (वाप्पलराज), नायक २७१
वाघेल, वंश ३१८
वाघेला, वंश २११, २२०, २२२, २३३, २३६, २३९, २४५, २४८, २५२, २६२, २६८, ३३३
वाचस्पति, कवि ६११
वाजक, वंश २९०
वाहुक, ककरेडी का नायक १९४
वाणदेव, नेपाल का राजा ५८१
वामनदेव, गौड़हक का नायक ११०
वा (?) मण्डपाटी, ग्राम ६८७
वाराणसी, ग्राम (बनारस) ७८, ८४, ८७, ८९, ९१, ९५, ९९, १००, १०३, १०४, १०७, ११४, १२०, १२२, १२३, १२८, १३७, १४२, १४५, १६८, १७२, १७४, १७५, १७६, १७८, १८९,
वारायासि-कटक या वाराणासि-कटक, ग्राम (?) १८८, १८९
वारीदुर्ग, ग्राम १४९
वाप्पलराज (वाखलराज), नायक २७१
वासुदेव, ६४, ३३४, ३८५, ४३३
वासुदेव, नवादेश का नायक ३४१
वासुल, कवि ३४८
वास्तव्य, वंश ३५६, ४३१
वाह [ड़] वर्मन, ककरेडी का नायक २२
वाहधारींस, चाहमान राजा २५०
विक्रमपुर, ग्राम ६७०
विक्रमसाहि, ग्वालियर का तोमर नायक ३३०

विष्णुवर्धन, यही जो यशोधर्मन् विष्णुवर्धन ४
विष्णुवर्धन, वरिकवंशी नायक १
विहारनगरी, ग्राम ५८६
विहारिसिंह, गढ़ादेश का नायक ३४१
वीजा, यही जो विजयशक्ति ३५३
वीरदाम, जयभट प्रथम का उपनाम ३६६, ३६७, ३६८, ४१४, ४१६, ४१७, ४१८
वीर, राजा ६६१
वीरङ्ग-(या वारम)-देव, नायक ३०१
वीरधवल, २११, २२०, २२२, २३३, २६२, २६८
वीरबाहु, प्राग्ज्योतिष का राजा ७१४
वीरनारायण, गढ़देश का नायक ३४१
वीरनारायण, विहार का नायक ५८६
वीरम, ग्वालियर का तोमर नायक ३३७
वीरम (या वीरङ्ग ?) देव, नायक ३०१
वीरराजदेव (?), नायक २८७
वीररामदेव, उपहड नगर का नायक २८८
वीरवर्मन, चन्देल राजा, २३७, २३८, २४३, २५१, २५४, २५५, २५१
वीरसिंह, गढ़ादेश का नायक ३४१
वीरसिंह, गङ्ग का राजा ३०१
वीरसिंह, गुहिल राजा ३०९
वीरसिंह, कच्छपघात वंशी राजा ९८
वीरसिंह, ग्वालियर का तोमर नायक ३३७
वीरसिंह, दण्डाहिदेश का बाघेल नायक ३१८
वीरसेन, जिसे शाब भी कहते हैं, चन्द्रगुप्त द्वितीय का मंत्री, ५३३
वीरसेन, सेनवंशी राजा ६६१
विसलदेव, बाघेला राजा २३३, २३६, २४५, २६२
वीसलदेव-विग्रहराज, शाकम्भरी का चाहमान राजा १९१
वृद्धिवर्मन्, सिंघपुर का नायक ६२२
वृषदेव, नेपाल का लिच्छवि राजा ५१६, ५६३
वेगादेवी, इष्टगण की रानी ६२९
वेड्डी, ग्राम या देश ५३०
वेङ्गीपुर, ग्राम ७०८
वेणी, नदी १६६, ४२८
वेदशर्मन्, कवि २४७, २६०
वेसलदेवी (?) महेश्वर की रानी २३७
वैजल्लदेव, चाहुमाण नायक १७०

वैदुम्ब, वंश ३३६
वैद्यदेव, प्राग्ज्योतिष का राजा ६६६
वैरट, गुहिल राजा २६०, ३०१
वैरवर्मन, छिन्द वंश का नायक ५१
वैरिसिंह, गुहिल राजा २६०, ३०१, ४३६, ४५२
वैरिसिंह परमार राजा ४६, ७२, ८२, ३११
वोड्ड (?) नायक ६८७
वोयामपूना, ग्राम ६२७
व्यग्घ्र, उच्चकल्प का नायक ४०६
व्याघ्र या व्याघ्रराज, नायक २८१
व्याघ्रदेव, पृथिवीषेण का शासक ६४०
व्याघ्रराज, नायक २८१
व्याघ्रराज, महाकान्तार देश का राजा ५१०
व्याघ्रसेन, त्रैकूटक वंशी नायक १
व्योमशिव, शैव योगी ४५१
व्रणभञ्ज, नायक ६८०

श

शक, मुसलमान (दिल्ली के राजा) ३५१, २०४
शक्तिकुमार, गुहिल राजा ४८, २४७, २६०, ३०६, ३५४, ३५८
शक्तिसिंह, नायक ३१५
शक्तिसिंह, नेपाल का राजा ५८६
शङ्करगण, राजा ४२८,
शङ्करगण, कलचुरि राजा ४२८, ४४१, ४५०
शङ्करण (शङ्करगण ?), कलचुरि (?) राजा ४४८
शङ्करदेव, नेपाल का लिच्छवि राजा ५१५, ५६१
शब्दमठिकाधिपति, शैव योगी ४५१
शत्रुघ्नराज, ६४१
शत्रुभञ्ज, नायक ६७१
शत्रुशल्य, मर्यानपुर का नायक ३३३
शार्ङ्गसिंह, कच्छपघात वंशी राजा ३८
शरभपुर, ग्राम ६२७, ६३३, ६३४
शर्वगुप्त, यहाँ जा भट्ट शर्वगुप्त ६
शर्वनाग, स्कन्दगुप्त का सामन्त ४३०
शर्वनाथ, उच्चकल्प का नायक ४०८, ४०९, ४११, ४४७, ५४१
शर्ववर्मन, नायक ६१४
शर्ववर्मन राजा ५७४
शर्ववर्मन, मौखरि राजा ५३६

शशाङ्क, नायक ६४९
शशिधर ४३६
शान्तिष्ठ सेनापति ४५८
शाब यही जो चन्द्रगुप्त द्वितीय का मंत्री ५३३
शामल (?) कवि ३०९
शार्दूल या शार्दूलवर्मन, मौखरि राजा ५७७, ५७८
शालङ्कायन वंश ७०८
शालस्तम्भ या सालस्तम्भ प्राग्ज्योतिष का राजा ७११, ७१५
शालिवाहन ग्वालियर का तोमर नायक ३३७
शाहजहाँ, सम्राट ३३६
शिखरस्वामिनी, मजयसेन की रानी ६१४
शिलामञ्ज नायक ६८०
शिल्लुक या शिलुक या शालुक प्रतिहार नायक ११, ३४९
शिव, कवि ३७०
शिवगण नायक ९
शिवगुप्त सुकाल्ङ्क का राजा ६८१ ६८२
शिवगुप्त-बालार्जुन नायक ६१७ ६१९
शिवदेव कवि ३३७
शिवदेव प्रथम नेपाल का लिच्छवि राजा ५०१ ५४७
शिवदेव द्वितीय नेपाल का राजा ५५९, ५६०, ५६३
शिवसिंह, महाईसा का नायक ३४२
शिवसिंह मिथिला का राजा ६००
शिवसिंह नेपाल का राजा ५८५ ५८६ ५८७
शिशुपाल राजा (?) ६१८
शील गुहिल राजा २४७ २६० ३०९
शीलादित्य, श्रयाश्रय-शीलादित्य
शीलादित्य प्रथम धर्मादित्य वल्लभी राजा ४९७ ४९८, ४९९, ५००, ५०६
शीलादित्य द्वितीय वल्लभी राजकुमार ५०८
शीलादित्य तृतीय वल्लभी राजा ५०८ ५०९ ५१० ५११
शीलादित्य चतुर्थ वल्लभी राजा ५११ ५१२ ५१३, ५१४, ५१६
शीलादित्य पञ्चम वल्लभी राजा ५१६ ५१७ ५२०
शीलादित्य छठवां वल्लभी राजा ५२० ५२१
शीलादित्य सातवां ध्रुवभ. वल्लभी राजा ५२१
शीलादित्य वल्लभी राजकुमार ४९४ ४९६ ५००, ५१६, ५१७
शुचिवर्मन गुहिल राजा २४७ २६०, ३०९ ३९८
शूद्रक, नायक (?) ६६४

शूद्रक, गया का नायक ६६८
शूरपाल, पालवंशी राजा ६६१
शूरपाल, बाड़ागगूना का राष्ट्रकूट नायक ६२७
शूरसेन, राजा ६११
शूरसेन, भोगदेवी का पति ५५३
शृङ्गारदेवी, राजमल्ल की रानी ३७०
शैलोद्भव, कलिङ्ग का नायक ६१५
शौरिराम्ब, नायक ६४६
श्यामलदेवी, गुहिल विजयसिंह की रानी ४३६, ४५२
श्यामसाहि ग्वालियर का तोमर नायक ३३७
श्री, सर्वनाग की रानी १२
श्रीधर, घन्नाकुल वंश का पुरुष २०१
श्रीधीमनमान, नायक ६५०
श्रीनाथपार्थिव, नायक ६४
श्रीनिवास, नेपाल का राजा ५८८, ५९०
श्रीनिवास, कवि ४५०
श्रीपाल, नायक २३७
श्रीपाल, कवि ११६
श्रीपुर, ग्राम (सिरपुर) ६३८, ६३९
श्रीमती, माधव गुप्त की रानी ५०२, ५०३
श्रीमाल, ग्राम (भिनमाल) ६१, ७०, १७४, २००, २११, २१२, २४६, २५०, २६६, २६१ २६६
श्रीवल्लभ, पश्चिमी चौलुक्य राजा ४२५
श्रीसिंहदेव (?), राजा ३४७
श्रयाश्रय-शीलादित्य, गुजरात का चौलुक्य नायक ४२१, ४२२
श्वेतक (?) ग्राम ६९४

ष

षगार (खंगार), राजा २७६
षङ्गारे (खङ्गार), चूडासमा का नायक २१७, ३०३, ३६४
षट्तंग, वंश २९८
षाहजहां सम्राट् ३३६
षिहाबुद्दीनघोरी, सुलतान २४३, २७४, २५८
षुदुबद्दीन, सुलतान (कुतबुद्दीन ऐबक) २५१
षुम्माण (खुम्माण), गुहिल राजा २४७, २६०, ३०१
षोत्तवर्मन् या खोज्जक, कलचुरी का नायक २६४, २२८

स

सङ्कुक, नायक १

हुशङ्ग गोरी उपनाम अल्पखाँ ३०५
हृदयचन्द्र दुर्गनं का राजा १७०
हृदयधर गढ़ाम्भा का नायक १४१
हृदयशा दायथायी ८५१
हेमन्तसेन सेनवंशी राजा ६६९ ६७०
हेमराज नायक ७८९
हेमविजय कवि ३०७
हेरम्बपाल कन्नौज का राजा १८
हैहय वंश १०२ ४५८ ४२९ ४४४ ४५० ६६०

शुद्धि पत्र ।

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
५	३	१०८	७८
〃	९	८२४ ई०	१६७५ ई०
〃	१०	१६७४ ई०	१६२५ ई०
〃	१३	६२७ ई०	६१० ई० के लगभग
〃	१६	७०८ ई०	८६६ ई०
〃	१८ में यह	बढ़ा दिया गया—	गा० सं०—गांगेय संवत् (प्रारम्भ काल ५६० ई)
७	२५	असनवद्धन	असमवद्धण
८	५	स० व० ई०	स० ३
९	५	श्रा० सा० भा० ई	भा स ई
〃	〃	पृष्ठ १३	पृष्ठ ३३
११	१०	उनाके	उनका
१३	९	का छोड़ कर	को छोड़कर
१४	३	३०।	३० न० ६।
१५	२३	सीयक	सीयक
१६	२६	"यह शब्द प्रक्षिप्त है विग्रहराज से विवाह किया"	इतना लेख नं ६४ का अंश है
१७	१-४		
〃	२६	वियाना	श्यामा
१८	१७	अर्पूना	अर्पूना
२०	११	पश्चात	पश्चात
२१	७	वश मे	वश में
〃	२१	पृथ्वीश्रिका	पृथ्वीश्रीका
〃	२५	(!)	(?)
२३	७	महाराजाधिराज	महाराजाधिराज
〃	२१	दानमन	दानपत्र
२४	११	लक्ष्मीदेवी	लक्ष्मादेवी
〃	११	सल्हणदेवी	सल्हणदेवी
२६	१०	हरनोड	हरडोडा
२७	३०	पत्र ३१	पृष्ठ ३६
〃	२२	नम्बर २	नम्बर २ और ५६

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२८	९	वि. सं.	वि सं.
२८.	२४	पृष्ठ ३५१	पृष्ठ ३५२
०	२५	नम्बर २५०	नम्बर ५०
२९	३	महाकुमार लक्ष्मीवर्मन	महाकुमार लक्ष्मीवर्मन
३०	१४-१५	जयकीर्ति न	जयकीर्ति के शिष्य रामकीर्ति ने
३१	१५	क्रेण्ड	कराड़
३२	१६	कालधु र	कालचुरी
०	२०	ज थ ए	ज. रा. ए.
०	२८	चचा	चाचा
३७	५	'यह दानप त्र गया था'	यह पंक्ति १० में होना चाहिए
०	९	मैं दानपत्र जो काशा में	मे दानपत्र जो काशी म
३८	८	धरणीवराध	धरणीवराह
४०	२३	परमर्विन	परमर्दिन
०	२५	पृष्ठ २३८	पृष्ठ ३३८
४१	२३	पृष्ठ २१२	पृष्ठ ३१३
४४	१५	पृष्ठ ११०	पृष्ठ १११
४७	१७	पीहिल	भाहिल
४८	८	ए. ती.	ए. इ. आ. मै.
४६	८	हरिपाल के पुत्र ने	हरिपाल के पुत्र रत्नपाल ने
०	११	वर्वाचि	दधीचि
०	२०	पृष्ठ ३४३	पृष्ठ २४२
५०	११	वि सं १३२९	वि. सं. १३२८
५१	६	कलभोज	कालभोज
०	०	कुम्भाण	कुम्भाण
०	७	शुचिवर्मि	शुचिवर्मन
०	१०	खोखा	खोखरा
०	२३	वि. स १३३२	वि सं. १३३५
०	०	भाग २७ पृष्ठ ९८	भाग ५५ पृष्ठ ४८
०	२५	सामर सिह	समर सिंह
५२	६	पृष्ठ १०३	पृष्ठ १०८
०	१०	निच लिखे	नीचे लिखे
०	१२	अल्तमिश	अलतमिश
०	२१	शाहि	शाहि
०	२२	मदनवर्मन,	मदनवर्मन, परमार्दि

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
५२	२५	पृष्ठ २८३	पृष्ठ ४८३
५३	२२	वप्पश	वप्पक
		शील कालभोज	शील कालभोज
	२३	जिक्र	यिक्र
		शुम्मार (खुम्माम)	खुम्माण (खुम्माण)
		ऊलट	अलट
	२४	विक्रुमसिंह	विक्रमसिंह
५४	३ २५	साम्वरसासिंह स्व	साम्वतसिंह स्व
	६	इ० ई०	रा० ई०
	७	वीरावल	वेरावल
	२४	पृष्ठ २८६	पृष्ठ ४८६
५५	७	वि० स० १३४१	१३४८
	२० २२	पृष्ठ ८२	पृष्ठ ८४
५६	२	पृष्ठ ५२	पृष्ठ ५४
	८	पुहर	फुहरर
	१०	शाकम्भरी का	शाकम्भरी के
	२५	तुरस	तुरुष्क
५७	२	वि० स० १३८४	वि० स० १३८६
	५	कागार (खगार)	खगार (खगार)
	८	याकलराज	वाघलराज
	१०	टेपक	डपक
	११	वल्लादित्य	वत्सादित्य
	१४	आ० स० घ० १०	आ० स० रे० इ०
	१५	तभ्कसिंह	तक्ष सिंह
५८	३		
	२८	टाकुर	ठाकुर
५९	६ ७	आवगूजर	बड़गूजर
	१२	वीरावल	वेरावल
	२३	वाह्नार	पह्नार
६०	२	लभ्म	लक्ष
	१६	लक्षसिंह्व	लक्ष्मसिंह्व
६१	१	पृष्ठ १०६	पृष्ठ १०६ और ३१६
	२३	मारपाट	मरुपाट
६२	१८	सतनपाल	राउपाल

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
६२	२४	योगराज,	योगराज, वैराट,
६५	३	भेदपाट	मेदपाट
६७	२	भा० ३०,	भा० ६०,
६९	२३	पृष्ठ २७०	पृष्ठ ७०
७०	४	विक्रम संवत	(२) विक्रम संवत्
...	२५	चन्द्र	चन्द्रा
७१	१	कृष्णाप	कृष्णप
...	१०	आसर्व	आसर्वा
७२	७	चन्देल्ला	चन्देल
	१४	(राजपुनाना)	(राजपुनाना)
७३	१	भाग १	भाग १९
..	...	तथा ३० ३०	तथा ६० ६०
७४	३	(२) शक संवत	(३) शक संवत
...	१२	प्रशान्तराग	प्रशान्तराग
७५	३	सुलतान	सुलताई
...	११	राजान	राजानक
...	१८	कन्नौज	कन्नौज
...	२०	विष्णुम	विष्णुरम
७६	२२	गुणमहार्व	गुणमहार्णव
७७	२५	कामार्ण्व	कामार्णव
...	...	दानार्ण्व	दानार्णव
..	...	गुणार्ण्व	गुणार्णव
७८	१	कामार्ण्व	कामार्णव
...	३	दानार्ण्व	दानार्णव
...	४	कामार्ण्व	कामार्णव
...	५	रणार्ण्व	रणार्णव
...	७	गुणार्ण्व	गुणार्णव
...	१०, ११	कामार्ण्व	कामार्णव
...	१२, १३	,,	,,
...	१४	मधु-कामार्ण्व	मधु-कामार्णव
७९	५	शिलालेख का	शिलालेख की
...	८	पृष्ठ २८३	पृष्ठ २४२
...	१८	नि शङ्क	निःशङ्क
८०	१२	नङ्ग	नङ्गमा

पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१४	स्तुरि—	कस्तूरि—
१६	राज्य	राज्य क्रिया
...	चोड़गंगा	चोड़गंग
१७	चन्द्रेलख	चन्द्रलेखा
१८	इसरा	दूसरा
१९	गनियाङ्कभीम	अनियङ्कभीम
२०	राज राज	राजराज
२१	चालुन्य	चालुक्य
२२	मान कुनेश्नी	अङकुणादवी
२४	मालम राजा का	मालव राजा की
२५	हुआ	भानुदेव हुआ
...	ऊचालुका	चालुक्य
२६	इसरा	दूसरा
१.	वाराणासि-कटक	वाराणसि-कटक
१०	संख्या ३६७	संख्या ३८६
२०	वाराणासि-कूटक	वाराणसि-कटक
२०	महाराज-जयनाथ	महाराज जयनाथ
६	कहेरी	कडहेरी
१४	केर में	केर मे
१९-२०	के समय का	का
५	मत्तमयूर के	मत्तमयूर वंश के
९	गङ्गयदेव	गाङ्गयेदेव
११	गङ्गय	गांङ्गय
५	मोनल्ल	मोमल्ला
१८	लच्छल्लदेवी	लाच्छल्लदेवी
२४	शिलालिख मे	शिलालेख में रत्नपुर के
२६	ठाकुर साहिल्ल	ठक्कुर साहिल्ल
३-४	जगपाल	जगपाल
२२	गंङ्गय	गाङ्गेय
१०	रत्नपु रके	रत्नपुर के
८	शानिल्ल	शान्तिल्ल
९	निर्गुण्डिपाङ्क	निर्गुण्डिपट्टक
२२	कोक्कल [प्रथम]	कोक्कल्ल [प्रथम]
२४	[प्रथम जिसने आंहन्ना	[प्रथम] जिसने मोहन्ना

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
९४	८	कचव शिव	कवचशिव
...	१३	जयसिंह देव	जयसिंहदेव
...	१६	गाङ्गेय	गाङ्गेय
९५	१६	सनकारिक	सनकानिक
...	२०	म्यूजियम	म्यूजियम
९७	२	गु० स० १३१	गु० सं० १२९
.	६	जूआगढ़	जूनागढ़
...	११	समय का	समय का कौसम में
..	१३	पृष्ट ६६	पृष्ठ ६७
९८	१२	सुरमिचन्द्र	सुरश्मिचन्द्र
९९	९	के पौत्र	के प्रपौत्र
१००	२६	जो वल्लभी	जो वल्लभी
१०२	२२	गौल्मढि टील	गोलमाढि टील
१०५	३	तथा मा० ३०	तथा मा० ३०
..	२१	शङ्करदेव जिसने,	शङ्करदेव, उसका पुत्र धर्मदेव जिसने
१०७	९	जैनक	जाइक्क
	२०	माङ्गोल	मेमोल
१०९	२३	कुमारगुप्त थम	कुमारगुप्त प्रथम
११०	३	(या शाही) जऊक्ल	(या शाहि) जाऊव्ल
.	४	मट	मठ
.	१२	१९ वर्ष	१५ वे वर्ष
११०	२४	खरमह के	खरमह प्रथम के
१११	९	अंशुवरमन	अंशुवर्मन
..	१२	खण्डित वेरावल का	वेरावल का खण्डित
...	२१	महराज	महाराज
..	२५	महासामन्त मान	महासामन्त महाराज मान
११२	२५	निष्णुगुप्त	जिष्णुगुप्त
११३	१९-२०	ईदमरी देवी	ईसटादेवी
११४	११	के निकट	के मन्दिर के निकट
..	१३	ह० स० १५६	ह० सं० १५३
...	...	पृष्ट ७९	पृष्ठ १७८
.	१४	पञ्चककाम	पञ्चककाम का
११५	३	दुर्वोली-में	-दुर्वोली में

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
११५	६	ईसट सेवी	ईसटांश्वी
...	८	महेन्द्रपाल	महेन्द्रपाल
...	१४	दानवत्र	दानपत्र
...	१६	६६४ में	५६४ में
...	२०	ह० सं० ५६४	ह० सं० ५६३
...	...	पृष्ठ २३	पृष्ठ ३२
११६	२४	मागध	मगध
११७	४	वर्म्मोवरणार्क	त्रैलोक्यवरणार्क
११७	६	कमलादेवी	कामलदेवी
...	२५	अवन्तवर्मन	अनन्तवर्मन
११८	१	मुर्ति	मूर्ति
११९	१६	शिवसिंह,	शिवसिंह, उसका पुत्र हरिहरसिंह
...	१७	जौरों का	गौरों और
१२१	२५	सर्दारछिन्द	छिन्द वंशी सर्दार
१२२	१८	माङ्गोल (माङ्गलपुर)	मङ्गोल (मङ्गलपुर)
...	२०	ए. रि. बा. प्र.	ए रि. बा. प्र. पृष्ठ ३१२
१२३	१०	आर्णाहिल्साड़	आर्णहिल्वाड़
१२४	२६	भाग ५७	भाग १७
१२५	१३	वर्सावर	वर्मावर
...	२५	वैचित्र	वैचित्र
१२६	५	मूर्ति का	मूर्ति के दान किए जाने का
...	२६	बुद्धिवर्मन	वृद्धिवर्मन
...	१८	वर्मन महिद्दल	वर्मन-महीपद्दल
...	२०	जॉल-धर	जालन्धर
१२७	६	पी. बा. ए.सो.	पी. बं. ए. सो.
...	१०	शिवांदेवी	देवांदेवी
...	१७	मड़ोली	मदोली
...	१८	सकङ्कलित	सङ्कलित
१२८	३	पुर्व निवास	पूर्व निवास
...	१०	मानाङ्क	मानाङ्क
...	११	राष्ट्रकुट	राष्ट्रकूट
१२९	२०	भामदेव	भयंकर
...	...	सारन	सहित

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१२९	२४	तिवरत्व(महाशिवतिवरराज)	तीवरदेव(महाशिवती
१३०	९	वाकाटकस	वाकाटक
	१०	सपके	उसके
	१३	प्रवसेन	प्रवरसेन
१३१	२४	तिष्याम	तिष्याम्र
१३२	२	पृष्ठ २८३	पृष्ठ २८४
	७	श्रीर्ध्यतमान	श्रीधौतमान
	८	छिङ्गल	छिङ्गला
१३३	९	वृत	वृतक
	१६	पण्णाद्रवी	रण्णाद्रेवी
१३५	१६	लिङ्गरव	लिंग्यदेवी
"	२३	यज्ञपाल	यक्षपाल
१३६	२	पात्र	पौत्र
	२३	भाग ५५	भाग ६५
१३७	११	जिल्हत	सिल्हत
	२९	रामह्वाडी	व्रामह्वाडी
१३९	३	महाराधिराज	महाराजाधिराज
१४०	१२	पृष्ठ ५५१	पृष्ठ ५५८
	१९	मण्डीहर	चण्डीहर
	२४	श्रीभुजङ्ग का	श्रीभुजङ्ग जी
१४१	१६	लुगुड	दुगुड
	१७	म्यजियम) में	म्युजियम म)
	२९	(यशोभीत)	यशोभीत,
१४२	२	शिरपल्लि	सारपल्ली
	१०	मर्ग्यांकिमडि	पर्लाकिमडि
१४३	२२	शालाङ्कायन	शालङ्कायन
१४४	२४	पृथ्वी	पृथ्वी
१४५	६	पश्वेर	वेश्वर